नवयुग-पाठ्य-ग्रन्थावली नं० ७

जीवटकी कहानियाँ

[ज्ञान-विज्ञानकी खोजमें अपने प्राण उत्सर्ग कर देनेवाले महान् साहसी और पराक्रमी व्यक्तियोंकी अद्भुत वीरतापूर्ण सच्ची घटनायें]

लेखक

श्यामनारायण कपूर बी० एस-सी०

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर, कार्यालय, बम्बई

निवेदन

बालकोंको साहसी और धीर-वीर बनानेके लिए कथा-कहानियोंका उपयोग बहुत प्राचीन कालसे होता आ रहा है; परन्तु अब बहुत-से शिक्षा-शास्त्रियोंको इस विषयमें सन्देह होने लगा है कि राक्षसों और भूत-प्रेतों आदिकी असंभव और ऊटपटाँग कहानियोंका परिणाम अच्छा ही होता है। ऐसी दशामें यदि हमें उक्त काल्पित कथा-कहानियोंसे भी अधिक अद्भुत और साहसपूर्ण रोमाञ्चक कहानियाँ ज्ञान-विज्ञानके क्षेत्रमें मिल सकती हैं और वे भी काल्पनिक नहीं बिलकुल सच्ची, तो क्यों न हम उनका उपयोग अपने बालकोंको साहसी और पराक्रमी बनानेके लिए करें और क्यों उनके कोमल मनोंको निरर्थक और असम्भव बातोंसे भरनेका व्यर्थ श्रम करें?

जिन लोगोंपर बालकोंके मनपर अच्छे संस्कार और प्रभाव डालनेका भार है अथवा जो उनका कल्याण कर सकनेकी परिस्थितिमें हैं, उनसे प्रार्थना है कि वे इस पुस्तककी कहानियोंका अधिकसे अधिक प्रचार करनेका प्रयत्न करें।

इस पुस्तकको विभिन्न कक्षाओंके पाठ्य-क्रममें स्थान दिया जा सकता है। इसकी भाषा जान-बूझकर सरल और सुगम रक्खी गई है जिससे साधारण विद्यार्थी भी इसके भावको अच्छी तरह समझ सकें। यदि हमें इस कार्यमें थोड़ी भी सहानुभूति और उत्साह मिला, तो हम इस तरहकी और भी अनेक पुस्तकें प्रकाशित करनेका प्रयत्न करेंगे।

—प्रकाशक

भूमिका

मनुष्यकी ज्ञान-विज्ञान-लिप्सा, प्रकृतिके रहस्योंका उद्घाटन करनेकी अभिलाषा तथा प्राकृतिक शक्तियोंपर विजय प्राप्त करनेकी आकांक्षा नित्य प्रति अत्यन्त प्रबल होती जा रही है। आज वह किसी भी वस्तुको अज्ञात नहीं रहने देना चाहता। अज्ञात प्रदेशोंमें अनन्तकालसे प्रकृतिके अन्तरालमें जो लीलाएँ होती आ रही हैं उन्हें जाननेके लिए और अपना कुतूहल शान्त करनेके लिए वह अत्यन्त प्राचीन कालसे प्रयत्न-शील है। प्राकृतिक रहस्योंका सन्धान पानेके लिए उसने अनेक बार प्रयत्न किये हैं। अपने इन प्रयत्नोंमें सफलता प्राप्त करनेके लिए साहसी मनुष्योंने हँसते हँसते मृत्युका आलिंगन करनेमें भी आगा पीछा नहीं किया है। सत्यके अन्वेषणमें अपने प्राणोंको संकटमें डालनेकी तनिक भी परवाह नहीं की है। प्रस्तुत पुस्तकमें, जैसा कि उसके नामसे प्रकट है, अपने प्राणोंकी बाज़ी लगा देनेवाले ऐसे ही कुछ साहसी धीर, वीर और जीवटदार आदमियोंकी रोमांचक और सनसनीखेज़ सच्ची कहानियाँ लिखी गई हैं।

इसमें हिमालयकी दुर्गम चोटियोंपर चढ़नेके प्रयत्न करनेवाले, दक्षिण ध्रुवकी खोजमें निकलनेवाले तथा इन प्रयत्नोंमें अपने प्राणोंको निछावर करनेवाले साहसी वीरोंके जीवटदार कार्यों, अग्नि उगलनेवाले ज्वालामुखी पर्वतोंके गर्भमें उतरनेवाले, घोड़ेपर दस हज़ार मील लम्बी यात्रा करनेवाले, जनशून्य जंगलोंमें भटकनेवाले, सिनेमाके चित्रोंके लिए समुद्रके गर्भमें और वायुयानोंपर जान गवाँ देनेवाले साहसी व्यक्तियोंके पराक्रमकी सच्ची घटनाएँ तथा विज्ञानकी वेदीपर अपने प्राणोंका उत्सर्ग करनेवाले कुछ वीरोंकी कथाएँ लिखी गई हैं।

वास्तवमें विज्ञानके बलपर आज पाश्चात्य देश संसारपर शासन कर रहे हैं। विज्ञानके प्रसादस्वरूप संसारके कला-कौशल एवं शिल्पकी अभूतपूर्व उन्नति हुई है। इसी विज्ञानके बलपर इंग्लैण्ड आज हमपर शासन कर रहा है और इसीकी अवहेलनासे हम अपनी वर्त्तमान अधोगतिको प्राप्त हैं। परन्तु विज्ञानकी उन्नतिका मार्ग पुष्पोंसे आच्छादित

नहीं है। विज्ञानकी वेदीपर अपने सपूतोंको निछावर कर देनेकी तत्परताने ही पश्चिमको पश्चिम बना रखा है। विज्ञानकी उन्नतिके लिए और मनुष्य-समाजके कल्याणके लिए अनेक वैज्ञानिकोंने जीवन-भर शोध और अन्वेषणोंमें लगे रहनेके बाद अन्तमें हँसते हँसते अपने प्राण भी विज्ञानके लिए अर्पित कर दिये हैं। वास्तवमें प्रत्येक महत्त्वपूर्ण आविष्कार, अन्वेषण और शोधके साथ कष्ट-सहन, त्याग और आत्मोत्सर्गकी एक अमर गाथा छिपी है। वैज्ञानिकोंने मानव-समाजके ज्ञान-भाण्डारको भरपूर और सम्पन्न करने तथा उसे विनाशकारी रोगों और मृत्युसे भी बचानेके लिए, स्वयं अपने ऊपर अनेक प्रयोग किये हैं। कष्टों, यातनाओं और मृत्यु तककी अवहेलना करके इन वीरोंने जिस अपूर्व साहस और जीवटका परिचय दिया है उसीकी कुछ कथाएँ प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित की गई हैं।

अँग्रेज़ी तथा अन्य पाश्चात्य भाषाओंमें इस प्रकारके जीवटके कार्यों और सच्ची साहसपूर्ण घटनाओंका विवरण देनेवाली अनेक पुस्तकें आये दिन प्रकाशित होती रहती हैं। इन पुस्तकोंको पढ़कर बहुत-से बालक और युवक साहसी अन्वेषक और विश्वविख्यात आविष्कारक बन जाते हैं और अपनी जाति तथा राष्ट्रका मुख उज्ज्वल करते हैं। परन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ऐसे साहित्यकी बहुत कमी है। प्रस्तुत पुस्तकका उद्देश्य राष्ट्र-भाषाके इस अभावकी पूर्ति करना है। आशा है कि यह पाठकोंको मनोरंजन और ज्ञान-वर्धन करनेके साथ ही उनमें साहस और जीवटकी भावनाओंका संचार भी करेगी और उन्हें राष्ट्रोन्नति एवं मानव-समाजके कल्याणके लिए अपने प्राणों तकको निछावर कर देनेके लिए तत्पर करेगी।

गोवर्द्धन-पूजा, १९९४
बगिया मनीराम
कानपुर

श्यामनारायण कपूर

विषय-सूची

जीवटकी कहानियाँ

१-हिमालयकी वेदीपर

पर्वतराज हिमालयकी बर्फ़से ढकी हुई, बादलोंसे भी ऊँची चोटियाँ चिरकालसे मनुष्यको अपने रहस्यमय अनुपम सौन्दर्यके कारण विस्मय-विमुग्ध करती आ रही हैं। इन अज्ञात प्रदेशोंमें अनन्त कालसे प्रकृतिकी जो लीलाएँ होती आ रही हैं उन्हें जाननेका कुतूहल मनुष्यके मनमें होना स्वाभाविक ही है। पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने इस रहस्यका सन्धान पानेके लिए अनेक बार प्रयत्न किये हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिक किसी भी वस्तुको अज्ञात नहीं रहने देना चाहते। अपने इन प्रयत्नोंमें सफलता प्राप्त करनेके लिए वे हँसते हँसते मृत्युका आलिंगन करनेमें भी आगा पीछा नहीं करते। उनकी ज्ञान-विज्ञान-लिप्सा, प्रकृतिके रहस्योंके उद्घाटन करनेकी अभिलाषा और प्राकृतिक शक्तियोंपर विजय प्राप्त करनेकी आकांक्षा कितनी प्रबल होती

जा रही है, इसका परिचय पानेके लिए केवल 'हिमालयकी वेदी'पर होनेवाले बलिदानोंपर दृष्टिपात करना काफ़ी होगा।

हिमालय-प्रदेशमें २०,००० फ़ीटसे ऊँचे अनेक शैल-शिखर हैं, परन्तु उनमें गौरीशंकर या एवरेस्ट (२९,१४१ फीट), कञ्चनजंघा (२८,१४० फीट), नंगापर्वत (२६,६२० फीट), नन्दादेवी (२५,६४५ फीट), और कामेट (२५,४४७ फीट) नामके पाँच शिखरोंने मानव-समाजका ध्यान विशेष रूपसे आकृष्ट किया है। इन चोटियोंपर अनेक बार चढ़ाइयाँ की गई हैं। परन्तु अभीतक 'कामेट' और 'नन्दादेवी' ही दो ऐसी चोटियाँ हैं जिनपर पूर्णतया विजय प्राप्त हो सकी है। नाना प्रकारकी कठिनाइयों और आपदाओंको झेलकर कुछ साहसी वीरोंने मानव-समाजके ज्ञान-भाण्डारको भरनेके लिए अमर प्रयत्न किये हैं। ये प्रयत्न अभी तक समाप्त नहीं हुए हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिक जी-जानसे इन शिखरोंपर विजय प्राप्त करनेमें लगे हुए हैं।

कञ्चनजंघा

कञ्चनजंघाकी ऊँचाई २८,१४० फीट है। इसपर विजय प्राप्त करनेके प्रयत्न १८९९ ई० से आरम्भ हो गये थे। १९०५ ई० में इसकी दक्षिण-पश्चिम चोटीपर चढ़नेकी कोशिश की गई थी। इस प्रयत्नमें चढ़ते समय तीन कुलियों और मि० पाचे नामक एक यूरोपियन सज्जनने अपने प्राण गवाँ दिये। इसके बाद १९२०, १९२५ और १९२६ में अँग्रेज यात्रियोंने फिर ऊपर चढ़नेकी कोशिश की; परन्तु शिखरतक न पहुँच सके। हाँ, पहलेकी अपेक्षा कुछ अधिक ऊँचाई तक पहुँचनेमें ज़रूर सफलता मिली। सन् १९२९

ई० में फिर एक अमेरिकन नवयुवकने कञ्चनजंघाकी चोटीतक पहुँचनेके लिए अपने प्राणोंकी भेंट चढ़ा दी। कञ्चनजंघाकी चढ़ाईमें यह पाँचवीं आहुति थी। इस युवकने पर्वतके दक्षिण-पश्चिम भागपर चढ़ना शुरू किया था। उसी वर्ष बवेरियन यात्री-दलने भी पाल बार-की अध्यक्षतामें चढ़ाई की। १९३० में प्रो० कैडरेन फर्थकी अध्यक्षतामें एक अन्तर्राष्ट्रीय दल तैयार किया गया। इस बार समस्त यात्री एक दुर्घटनामें फँसकर मृत्युके मुखसे लौट आये। १९३१ में फिर चढ़ाई की गई। इस दलका संगठन भी सुप्रसिद्ध बवेरियन यात्री पाल बारने किया था। छाँट छाँटकर अनुभवी यात्री रक्खे गये थे। इस बार उत्तर-पूर्व भागपर चढ़ाई शुरू की गई थी। इस बार भी चढ़ाईके दरमियान ९ अगस्तको आठवें पड़ावमें एक भीषण दुर्घटना घटित हुई और शेलर नामक यात्री तथा एक पोर्टरकी मृत्यु हो गई। परन्तु फिर भी शेष यात्री कठिनाइयों और आपदाओंको झेलते हुए हिम्मत करके २६,२०० फीटकी ऊँचाई तक बढ़े चले गये। चोटीके बहुत कुछ नज़दीक पहुँच जानेपर एक अत्यन्त भीषण और विशाल-काय कगारने ऊपर बढ़ना असम्भव कर दिया।

नङ्गा पर्वत

नङ्गा पर्वत एशिया-खण्डका सबसे अधिक शानदार पर्वत समझा जाता है। हिमालयकी अन्य चोटियोंसे बहुत दूर हटकर यह काश्मीरमें स्थित है। ऊँचाईके लिहाज़से इसका संसारमें सातवाँ स्थान है। इसकी ऊँचाई २६,६२० फीट है। इसपर अभीतक केवल तीन बार संगठित चढ़ाइयाँ की गई हैं। पहली चढ़ाई १९३२ ई० में, दूसरी १९३४ ई० में और तीसरी १९३७ ई० में। आन्तिम दोनों चढ़ाइयोंमें

२४–२५ व्यक्तियोंने इस पर्वतपर विजय प्राप्त करनेके लिए अपने प्राण गवाँ दिये। हिमालय-आरोहणके इतिहासमें इतने व्यक्तियोंका बलिदान और किसी भी शिखरकी चढ़ाईमें नहीं हुआ।

इन संगठित चढ़ाइयोंके शुरू होनेके ३७ वर्ष पहले १८९५ ई० में भी एक युवकने पर्वत-शिखरतक पहुँचनेकी कोशिश की थी। उन दिनों पार्वत्य प्रदेशोंकी चढ़ाईकी कठिनाइयोंका अधिक हाल नहीं मालूम था। ममरी नामक एक मनचले युवकने गोरखोंको साथ लेकर १८९५ ई० के अगस्त मासमें इस दुर्गम पर्वतकी चढ़ाई शुरू कर दी। उस समय न तो आज जैसे वैज्ञानिक साधन सुलभ थे और न अन्य सुविधायें ही प्राप्त थीं। पहाड़ी इलाकोंका विस्तृत हाल किसीको भी मालूम न था। न विज्ञान ही इतना उन्नत हो पाया था जिससे पार्वत्य प्रदेशोंके जल-वायु आदिका अन्दाज़ लगाया जा सके और उससे बचनेका प्रबन्ध किया जा सके। परन्तु ममरी जीवटका युवक था। उसने किसी भी अड़चनकी परवाह न की। वह १९ अगस्तको २१००० फीटकी ऊँचाई तक जा पहुँचा। उसके आगे पर्वतके बर्फ़ीले मैदान शुरू हो जाते हैं। पाँच दिनके बाद एक और गोरखेको साथ लेकर वह डायमा ग्लेशियर तक चढ़ गया। वहाँसे वह उत्तरकी ओर जाना चाहता था; परन्तु हुआ क्या, यह नहीं मालूम। ममरी और उसके दोनों साथी आज तक लौटकर नहीं आ सके। वे चिरकालके लिए उसी पर्वतकी किसी उपत्यकामें सो गये।

ममरीके अमर बलिदानके बाद, १८९५ ई० से लेकर १९३२ ई० तक फिर कोई प्रयत्न नहीं किया गया। १९३२ ई० में मरकल नामक एक जर्मन यात्री कुछ अमेरिकन और जर्मन साहसी

युवकोंको लेकर इस पर्वतपर चढ़ाई करनेके लिए भारत आया। इस दलने अनेक कठिनाइयोंका सामना करके १५००० फीटकी ऊँचाईपर पहला पड़ाव डाला। बहुत-सी मुसीबतोंका सामना करते हुए ये लोग १६ जुलाईको २३१७० फीटकी ऊँचाईतक पहुँच पाये। तीन दिनके बाद मौसम बहुत ज़्यादा ख़राब हो गया और यात्रियोंको मज़बूरन नीचे भागना पड़ा। तूफ़ान बहुत भीषण था और २ अगस्तसे १५ अगस्ततक पूरी ताक़तसे चलता रहा। इस बीचमें पाँचवें, छठे और सातवें पड़ाव बर्फ़में दफ़न हो गये। यात्री लोग निराश न हुए। तूफ़ान समाप्त हो जानेके बाद २८ अगस्तको फिर ऊपर चढ़नेकी कोशिश की गई, परन्तु कोई नतीजा न निकला। यात्रियोंको वापस आना पड़ा।

सन् १९३४ में जो यात्री-दल आया था वह पहलेसे भी अधिक सुसङ्गठित और सुव्यवस्थित था। सन् १९३२ के दलके अध्यक्ष सुप्रसिद्ध जर्मन यात्री विली मरकल इस बार भी अध्यक्षका काम कर रहे थे। इस दलके चौथे पड़ाव तक पहुँचते पहुँचते एक अत्यन्त साहसी आरोही अल्फ्रेड ड्रेक्सेलकी मृत्यु हो गई। तीसरे पड़ावसे चौथे पड़ावतक पहुँचनेके रास्तेकी जाँच और खोज ७ जूनको समाप्त हुई। इस जाँचमें दलके सभी विशेषज्ञ आरोहियोंने भाग लिया था। अल्फ्रेड ड्रेक्सेल भी इसी दलमें था। अस्वस्थ होते हुए भी अल्फ्रेड आगेके रास्तेकी जाँच करनेका लोभ संवरण न कर सका। जाँचका काम दो बजेतक समाप्त हो गया और अल्फ्रेडने स्वयं बे-तारके तारद्वारा इसकी सूचना बेस कैम्पको दी। उसके गिरते हुए स्वास्थ्यको देखकर उसके साथियोंने उसे नीचे उतर जानेके लिए

मजबूर कर दिया। तब वह अपने एक अर्दली और एक पोर्टरको साथ लेकर दूसरे पड़ावको लौट आया। दलके दो सदस्य भी उसके साथ हो लिये। दूसरे पड़ाव तक पहुँचते पहुँचते अल्फ्रेडकी अवस्था बहुत ही चिन्ता-जनक हो गई। रातको हालत और ज्यादा बिगड़ गई। ८ जूनको प्रातःकाल दस बजते बजते वह बेहोश हो गया। उसे निमोनिया हो गया था, फेंफड़े खराब हो गये थे और हृदय बहुत कमज़ोर हो गया था। औषधोपचार आदि करने और हृदयको ताक़त पहुँचानेके लिए यथासम्भव सभी कोशिशें की गईं, इंजेक्शन भी दिये गये परन्तु कुछ लाभ न हो सका। उस दिन रातको ९ बजकर २० मिनटपर उसकी मृत्यु हो गई।

अल्फ्रेडकी रक्षाके लिए सबसे अधिक प्रयत्न दार्जिलिंगके पोर्टरोंने किये। अल्फ्रेडके साथी म्यूलरिटरने भी बड़ी दौड़-धूप की। वह शामको पहले पड़ावसे बेस कैम्प गया और वहाँसे डा० बरनार्डको साथ लेकर वापस आया और वहाँसे फिर दूसरे पड़ाव तक तुषार और ग्लेशियरको पार करके दोनों ऊपर चढ़े। इनके अलावा वीलैण्ड नामक आरोही और गेले तथा दक्सची नामक पोर्टरोंके प्रयत्नोंकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। ये लोग चौथे पड़ावसे बेस केम्प गये और वहाँसे डाक्टरको साथ लेकर फिर वापस आये और रातको भीषण हिममय तूफ़ानका मुकाबिला करते हुए भी बेस केम्पसे आक्सीजनके पीपे लेकर दूसरे पड़ाव तक गये। दिन-भरके कठिन परिश्रमके बाद इतनी ज़बरदस्त दौड़ धूप करना कोई आसान काम न था।

अल्फ्रेड ड्रेक्सेलको भारतवर्ष आनेका यह पहला ही मौका था।

वह यूरोपके आल्प्स पर्वतकी चढ़ाईमें काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था और 'जर्मन आस्ट्रियन अल्पाइन क्लब' का प्रमुख सदस्य था। अल्फ्रेड ड्रेक्सेलकी मृत्युसे उसके सभी साथियोंको बहुत दुःख हुआ। परन्तु इससे कोई हतोत्साह नहीं हुआ। बल्कि नंगा पर्वतकी चोटी तक पहुँचनेके निश्चयने और दृढ़ रूप धारण कर लिया। चढ़ाई पूर्ववत् जारी रक्खी गई। एक मास तक अत्यन्त कठिन परिश्रम करनेके बाद ७ जुलाईको २६००० फ़ीटकी ऊँचाईपर मरकल, वेलज़न-वेच, वीलैण्ड, श्नीडर और एशन ब्रेनर नामक आरोहियोंने आठवाँ पड़ाव स्थापित किया। इस पड़ावसे पर्वतकी सबसे ऊँची चोटी बहुत साफ़ साफ़ दिखाई पड़ती थी। इस पड़ावसे चोटी तक केवल ६०० फ़ीटकी ऊँचाई तय करना रह गया था। यहाँ पहुँचनेपर मौसम बहुत ख़राब हो गया। हवा बहुत तेज़ हो गई और नीचे सब कुछ बादलोंमें छिप गया। पर्वत-शिखरकी चोटीके चारों ओर विशाल सागर जैसा प्रतीत होने लगा और इस विशाल सागरमें चोटी एक द्वीपके समान देख पड़ी। फिर भी यात्रियोंको शिखर तक पहुँचनेका पूरा भरोसा था। परन्तु होना तो कुछ और ही था। जिस दिन ये लोग ऊपर चढ़नेवाले थे उस दिन ऐसा भीषण तूफ़ान आया कि आगे बढ़ना तो बहुत दूर, जहाँ तक पहुँच चुके थे वहाँ भी ठहरे रहना मुश्किल हो गया।

तुषारके मीलों लम्बे बादल पर्वतकी ओर उड़ने लगे। भीषण झँझावातके साथ ज़बरदस्त हिम-वृष्टि होने लगी। आँधीका वेग इतना प्रबल था कि तम्बुओंको साधे रहना और उनके भीतर बैठना दुश्वार हो गया। मजबूरी हालतमें वह रात आठवें पड़ावमें बितानी पड़ी।

अगले दिन प्रात:काल श्नीडर और एशन ब्रेनर तीन पोर्टरोंको साथ लेकर नीचे लौट गये। दलके अध्यक्ष, मरकल, वीलैण्ड और वेलज़नबेच कुछ पोर्टरोंके साथ आठवें पड़ावमें रुक गये और ऋतु अनुकूल होनेका इन्तज़ार करने लगे। मौसम सँभलनेपर ये लोग आगे बढ़ना चाहते थे। रास्तेमें श्नीडर और एशन ब्रेनर सातवें पड़ाव तक पहुँचनेके पहले ही अपने साथके पोर्टरोंको पीछे छोड़कर आगे निकल गये। पोर्टर बेचारे कठिन परिश्रमके कारण बहुत थके हुए थे और बहुत धीरे धीरे नीचे उतर पाते थे। पीछे रह जानेपर उन्हें रास्ता ढूँढ़नेमें बहुत दिक़्क़त पड़ी। दो दिनमें ये लोग बमुश्किल छठे पड़ावमें पहुँचे। वहाँपर सारे तम्बू, खाद्य-सामग्री और दूसरी ज़रूरी चीज़ें झँझावातके वेगसे उड़कर न जाने कहाँ पहुँच गई थीं।

मौसमकी हालत बराबर ख़राब होती जा रही थी। जो लोग पाँचवें पड़ावमें ऋतु अनुकूल होनेपर आगे बढ़नेकी आशासे रुक गये थे उन्हें भी लाचार होकर नीचे लौटना पड़ा। ९ जुलाईको मरकल और वेलजनबेच चार पोर्टरोंको साथ लेकर सातवें पड़ावमें आ गये। वीलैण्ड और तीन पोर्टर पीछे रह गये। तीनों पोर्टर तो किसी तरह सातवें पड़ावतक पहुँचे पर वीलैण्डकी रास्तेमें मृत्यु हो गई। सातवें पड़ावमें पहुँचकर भी कुछ आराम न मिल सका। तम्बू वगैरह उड़कर गायब हो चुके थे। कुछ लोग थकावटकी हालतमें विवश होकर छठे पड़ावकी तरफ बढ़े। परन्तु दुर्भाग्यने यहाँ भी साथ न छोड़ा। छठे पड़ावके तम्बू और खाद्य-सामग्री पहले ही उड़ चुकी थी। छठे पड़ाव तक पहुँचते पहुँचते पोर्टर इतने

अशक्त हो गये थे कि वे और आगे न बढ़ सके। उन्हें वह रात खुली हवामें बर्फ़की चट्टानोंपर बितानी पड़ी। १० जुलाईको किसी तरह पाँचवें पड़ावमें पहुँचे। यहाँ श्नीडरके साथ रवाना होनेवाली पोर्टरोंकी पहली टोली भी मिल गई। पाँचवें पड़ावसे चौथे पड़ाव तक पहुँचना और भी कठिन सिद्ध हुआ। हिम-वर्षा और तूफ़ानसे सारा रास्ता नष्ट हो चुका था और ज़बरदस्त फिसलन हो गई थी। पाँचवें पड़ावसे सात पोर्टर नीचे रवाना हुए थे। इनमेंसे चार सकुशल चौथे पड़ाव तक पहुँच सके। नीमादोरजी, नीमाताशी और दवशी रास्तेहीमें प्राणोंसे हाथ धो बैठे। जो नीचे पहुँचे भी उनमें पसांग बर्फ़की चकाचौंधसे बिलकुल अंधा हो गया। बाकी तीनोंकी हालत भी बिलकुल मरणासन्न थी।

सातवें पड़ावमें ठहर जानेवाले आरोहियों और कुलियोंका तीन दिन तक कोई समाचार नहीं मिला। १४ जुलाईको अंगसेरिंग नामक पोर्टर मृत्युसे युद्ध करता हुआ चौथे पड़ावतक आया। उसने छठे पड़ावसे चौथे पड़ावतकका कठिन मार्ग अकेले ही तय किया था और उस दशामें जब उसे पूरे सात दिनसे भोजनके दर्शनतक न हुए थे। उसके साहस और जीवटकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। अंगसेरिंगसे मालूम हुआ कि १२ जुलाईको सातवें पड़ावमें वेलज़न बेचकी मृत्यु हो गई और एक पोर्टर आठवाँ पड़ाव छोड़नेसे पहले ही मर गया था। मरकल, गेले और एक कुली बड़ी कठिनाईसे छठे पड़ावतक पहुँच पाये और एक बर्फ़की खोहमें अपने शरीरोंको गरम रखनेके लिए एक दूसरेसे चिपटे पड़े रहे। इन तीनोंको भी एक सप्ताह तक भोजन न मिला था। बादमें इनकी भी मृत्यु हो

गई। अंगसेरिंगने लगातार कई दिनोंतक हर मरकलकी जिस तरह मदद की और एक सप्ताहतक भूखे रहकर असीम कष्टोंको सहते हुए, दलके नेताको सहायता भिजवानेके लिए चौथे पड़ावतक पहुँचकर, उसने जिस साहस और जीवटका परिचय दिया वह पर्वतारोहणके इतिहासमें अभूतपूर्व समझा जायगा। हिमालय-आरोहणके इतिहासमें इतना ज़बरदस्त बलि-प्रदान होनेका यह पहला मौक़ा था। १९३७ के आरोही दलको भी १९३४ के दलके समान घोर कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। चार पड़ाव स्थापित कर चुकनेके बाद सब पड़ाव उड़ गये और उन्हें फिरसे स्थापित करना पड़ा। दुबारा स्थापित करनेके बाद जब यात्री लोग आगे बढ़े तो फिर ऋतु-विपर्ययका सामना करना पड़ा। बर्फ़के अत्यन्त वेग-पूर्ण और आकस्मिक प्रवाहमें बह चलनेके कारण आरोही दलके सात सदस्य और नौ गुरखा कुली मर गये।

नन्दा देवी

नन्दा देवी वास्तवमें हिमालयकी देवी हैं। इनका गढ़ २५,६४५ फीट ऊँचा है। हिमालय-प्रदेशके अन्य पर्वत-शिखरोंके ही समान नन्दा देवीके सर्वोच्च शिखरतक पहुँचनेके लिए विगत ५० वर्षोंमें अनेकों बार ज़बरदस्त कोशिशें की गई हैं। नाना प्रकारकी कठिनाइयों और आपदाओंको झेलकर कुछ साहसी मनचले और उत्साही वीरोंने नन्दा देवीके सर्व्वोच्च शिखरतक पहुँचनेके विषम प्रयत्न किये हैं। इन सब प्रयत्नोंके फलस्वरूप सितम्बर १९३६ में कहीं जाकर इस शिखरपर विजय प्राप्त करनेमें सफलता मिली है। इससे पहले १९३४ तक जितनी चढ़ाइयाँ हुई थीं उनमें इस शिखरकी केवल प्रारम्भिक जाँच समाप्त

हो पाई थी। चोटी तक पहुँचना तो बहुत दूर, पर्वतके आधार तक पहुँचनेमें भी केवल एक ही बार सफलता मिली थी। इस अन्तिम सफलतासे प्रोत्साहित होकर 'हारवर्ड पर्वतारोहण क्लब' और 'ब्रिटिश अमेरिकन हिमालय-आरोही क्लब'ने १९३६ में इस शिखरपर फिर चढ़ाई की। इस बार इन लोगोंको पूरी सफलता मिली और दलके समस्त सदस्य पर्वतके सर्व्वोच शिखर तक पहुँचकर सकुशल वापस आ गये। यह पहला मौक़ा था जब मनुष्य हिमालय पर्वतमें इतनी अधिक ऊँचाई तक पहुँचने और वहाँसे सकुशल लौट आनेमें सफल हुए।

नन्दा देवीका पर्वत-शिखर २५,६६० फीट ऊँचा होनेपर भी ब्रिटिश-साम्राज्यका सर्व्वोच पर्वत-शिखर है। अन्य पर्वतोंकी अपेक्षा नन्दा देवीकी चढ़ाई अधिक दुरूह है। एक एक पग आगे बढ़ना कठिन हो जाता है। हज़ारों फ़ीट ऊँची सीधी दीवारोंका मुक़ाबिला करना होता है। इन दीवारोंपर चढ़ना तो बहुत दूर, देखने-मात्रसे मनुष्य भयभीत हो उठते हैं। पर्वत-शिखरके चारों ओर एक दुर्गम दुर्भेद्य पहाड़ी दीवार है। इस दीवारका घेरा लगभग ७० मील है। इसकी ऊँचाई २०,००० फीटसे कम नहीं है। इस विशालकाय घेरेमें १७,००० फीटकी ऊँचाई तक कोई झुकाव भी नहीं पाया जाता। जहाँसे वेगवती ऋषि-गंगा पहाड़ फोड़कर मैदानकी ओर अग्रसर होती है, वहाँ पश्चिमकी ओर अवश्य ही एक तंग रास्ता बन गया है। परन्तु यहाँसे एक दूसरी भीतरी दीवार शुरू हो जाती है। बाहरी दीवारमें २०,००० फीटसे भी ऊँची १६ चोटियाँ हैं। १९३४ में शिपटन-दलने इनमेंसे कुछ चोटियोंतक पहुँचनेमेंसे सफलता प्राप्त

की थी। इसी दलके सदस्योंको सर्व प्रथम बाहरी दीवार पार करके अन्दरूनी बेसिन तक पहुँचनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इससे पूर्व १९०७ई० में डा० लांग स्टाफ़को बाहरी दीवारकी ऊँची चोटियोंमेंसे २३,४०६ फीट ऊँची त्रिशूल नामक चोटी तक पहुँचनेमें सफलता मिली थी।

नन्दा देवीपर अब तक कुल ११ चढ़ाइयाँ हो चुकी हैं। इनका सूत्रपात १९ वीं सदीसे ही हो गया था। १८८३ में ग्राहम नामक एक साहसी आरोहीने सर्व-प्रथम नन्दा देवीके सर्वोच्च शिखर तक पहुँचनेकी कोशिश की थी। परन्तु वह १९,००० फीटसे अधिक ऊँचाई तक न पहुँच सका था। १९०५ में डा० लांग स्टाफने चढ़ाई की। उसे भी १९,००० फीटसे अधिक ऊँचे पहुचनेमें सफलता न मिली। १९०७ में लांग स्टाफने एवरेस्टके प्रसिद्ध आरोही जनरल ब्रूसके साथ फिर सर्वोच्च शिखर तक पहुँचनेकी कोशिश की, परन्तु ये बाहरी घेरा भी न पार सके। बाहरी घेरेकी दीवारमें स्थित २३,४०६ फीट ऊँची त्रिशूल नामक चोटी तक पहुँचनेमें अवश्य सफलता मिली। इसके बाद एक बार दक्षिण ओरसे भी बाहरी घेरा पार करनेकी कोशिश की गई, पर सफलता न मिल सकी। इसके बाद १९३४ तक जितने भी प्रयत्न किये गये वे सब अधिकांशमें जाँच-पड़तालहीसे सम्बन्ध रखते हैं। सन् १९२६ में जनरल विलसन, डा० समरवेल और मि० रटलेजने उत्तर-पूर्वकी ओरसे बाहरी घेरा पार करनेकी कोशिश की। इस बार फिर विफल-प्रयास होना पड़ा। अगले वर्ष फिर चढ़ाई की गई। डा० लांग स्टाफ़ और मि० रटलेज दक्षिणकी ओरसे दीवार तक जा पहुँचे। १९३२ में उन्होंने दक्षिण-पूर्वकी

ओरसे एक बार फिर दीवारका भली भाँति निरीक्षण किया परन्तु ऋतु-विपर्ययके कारण उसे पार करनेमें सफलता न मिल सकी। संक्षेपमें इतना ही कहा जा सकता है कि १९३४ के पूर्व यह समस्या भी न हल हो पाई थी कि नन्दा देवीपर चढ़ाई की जाय तो किस ओरसे और कैसे? १९३४ में शिपटन-दलने ऋषि-गङ्गा द्वारसे भीतर पहुँचनेकी चेष्टा की और उसमें वह सफल हुआ। इस दलकी सफलताहीके फलस्वरूप १९३६ का दल पर्वतके सर्वोच्च शिखरतक पहुँचनेमें सफल हो सका है।

कामेट

पर्वतराज हिमालयकी पाँच प्रमुख चोटियोंमें कामेटकी ऊँचाई सबसे कम २५,४४७ फीट है। नन्दा देवीके अतिरिक्त केवल यही एक

मि० एफ० एस० स्माइथ

ऐसी चोटी है जिसपर विजय प्राप्त करनेमें पूर्ण सफलता मिल सकी है। इस विजयमें भी कुछ कम दिक्कतोंका सामना नहीं करना पड़ा। इसकी जाँच-पड़ताल १८४८ ई० से ही आरम्भ हो गई थी। तबसे अब तक इस पर्वत-शिखरपर गिनकर नौ बार चढ़ाई की गई। इन नौ चढ़ाइयोंमेंसे केवल दो बार विजय प्राप्त हो सकी है। १९३१में एफ० एस० स्माइथका ब्रिटिश आरोही-दल चोटीतक पहुँचनेमें समर्थ हुआ।

गौरीशंकर या एवरेस्ट

गौरीशंकर या एवरेस्ट हिमालयका ही नहीं वरन् समस्त संसारका सर्वोच्च पर्वत-शिखर है। इसकी ऊँचाई २९१४१ फीट है। बंगालके श्रीयुत राधानाथ सिकदर आधुनिक कालमें इसके आदि अन्वेषक माने जाते हैं। पाश्चात्य पर्वतारोहियोंने इसपर भी अनेक बार चढ़ाइयाँ की हैं। अनेक महत्त्वपूर्ण बलिदान करनेपर भी अभी तक पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त हो सकी है। १९३३ में वायुयानद्वारा अवश्य इस चोटीकी परिक्रमा करने और ३३००० फीटकी ऊँचाईसे उसके दर्शन करनेमें सफलता प्राप्त हुई थी। ३३००० फीटकी ऊँचाई तक वायुयानद्वारा चढ़ाई करना भी कुछ कम जीवटका काम नहीं है। परन्तु वास्तविक विजयका सेहरा तो पैदल यात्रियोंहीके सिर बाँधा जायगा। ब्यौरेवार और विस्तृत वृत्तान्त ज्ञात करनेका एक-मात्र उपाय पैदल चढ़ाई करना ही है। एवरेस्ट प्रदेशकी यात्रा करने और उसके सर्वोच्च शिखर तक पहुँचनेका ख्याल सबसे पहले सर फ्रान्सिस यंगहसबैण्डको हुआ। यह १८९३ ई० की बात है। परन्तु उस समय बहुत कुछ ज़ोर लगानेपर भी सर फ्रान्सिसकी योजना कार्यरूपमें परिणत न हो सकी। उसके बाद १९०६ और १९०८ में इस योजनाको

फिरसे तरोताज़ा किया गया। पर दोनों ही बार राजनीतिक कारणोंसे चढ़ाईके विचारको तिलांजलि देनी पड़ी। तदनन्तर महायुद्धके बाद पुनः इस ओर ध्यान दिया गया। इस बार भी सर फ्रान्सिस आगे आये। ब्रिगेडियर जनरल ब्रूसका तो यहाँ तक कहना है कि हिमालय-पर विजय प्राप्त करनेकी लालसा रखते हुए तबसे लेकर आज तक किसीने भी सर फ्रान्सिसकी-सी लगन और अध्यवसायसे काम नहीं किया है। यात्रासे पूर्वकी समस्त कठिनाइयोंपर विजय प्राप्त करना उन्हींका काम था। हिमालयपर चढ़नेवाले वीरोंके ज्वलन्त उदाहरणके सामने जीवट और साहसका विरला ही कोई दूसरा उदाहरण मिलेगा। इन वीरोंने हिमालय-प्रदेशके बादलोंसे भी ऊँचे पर्वत-शिखरोंपर चढ़ने और उनका ठीक ठीक हाल मालूम करनेमें अपने प्राणोंतककी बाज़ी लगा देनेसे मुख नहीं मोड़ा है। कठिनसे कठिन आपदाओंका सामना करते हुए बराबर अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें लगे हुए हैं। इन चढ़ाइयोंमें आरोही-दलको आये दिन जिन आपदाओंका सामना करना पड़ता है, आगेकी पंक्तियोंमें उनमेंसे कुछका हाल बतलाया जायगा।

पहाड़ फट पड़ा

७ जून १९२२ की बात है। २६००० फीटकी ऊँचाईपर पड़ाव डालनेकी कोशिश की जा रही थी। २६००० फीट ऊपर पहुँचकर कुलियोंको नीचे लौटा दिया जायगा, ऐसा निश्चय कर लिया गया था। भोजन आदिसे निवृत्त होकर यात्री लोग कुलियोंपर सामान लदवाकर आगे बढ़े। शुरू शुरूमें कुछ सीधी चढ़ाई पड़ती थी। पग पगपर इस बातकी आशंका बनी रहती थी कि ऊपर चढ़ते

समय यात्रियोंपर कहीं बर्फ़के ढेले खिसककर गिरने न लगें। परन्तु सौभाग्यसे सब लोग वहाँसे बचकर निकल गये। मलेरी, क्राफर्ड और समरवेल नामक आरोही चौदह मज़दूरोंको साथ लेकर आगे बढ़े। बर्फ़ बहुत पोली थी। कहीं कहीं तो घुटनों तक बर्फ़में धँस जानेकी नौबत आ जाती थी। राम राम करके दो घण्टेमें यह रास्ता तय हुआ। आगेकी चढ़ाई इससे भी अधिक कठिन थी। अस्तु, सब लोग केम्पमें रस्से बाँधकर एक दूसरेसे जकड़ गये। कुलियोंको कई टोलियोंमें बाँट दिया गया। पोली बर्फ़को पार करनेपर कड़ी बर्फ़ मिली। उन प्रदेशोंपर कड़ी बर्फ़ मिलनेपर भी बहुधा बहुत धोखा हो जाता था। ऊपर ऊपर तो बर्फ़की मोटी और कड़ी तहें होती हैं, और नीचे गहरे गड्ढे और खोहें। एक एक कदम फूँक फूँक कर रखना होता है।

दोपहरको डेढ़ बजेके लगभग मलेरी एक स्थानपर सुस्तानेके लिए बैठ गया। उसके पीछे जो मज़दूरोंकी टोलियाँ थीं वे आगे बढ़ती रहीं। जहाँपर मलेरी बैठा था उससे थोड़ी दूर ऊपरकी तरफ़ बर्फ़की चट्टान लटक रही थी। हवा बन्द थी और धूप चमक रही थी। चारों ओर गम्भीर शान्तिका साम्राज्य था। किसी दुर्घटनाके घटित होनेकी आशंका तक न की जा सकती थी। एकाएक बड़े ज़ोरकी आवाज़ हुई। ऐसा मालूम हुआ मानों विकट भूचाल आ गया है। पैरों-तलेकी ज़मीन खिसक गई। आरोहियोंको फौरन ही इस बातकी आशंका हुई कि कोई विशाल-काय चट्टान खिसक गई है। जो लोग आगे बढ़ गये थे उन्होंने सशंकित होकर पीछेकी ओर देखा। वह विशालकाय बर्फ़की चट्टान और मलेरी दोनों ही अपनी जगहसे

ग़ायब थे। उस चट्टानकी जगह एक बड़ा भारी गड्ढा नज़र पड़ने लगा था। मलेरी भी उसी चट्टानके झोंकेमें आ गया था। वह लुढ़कता हुआ नीचे जा पहुँचा था और बर्फ़के नीचे दब गया था। सौभाग्यसे उसकी कमरमें रस्सा बँधा हुआ था, अन्यथा उसकी हड्डी-पसलीका भी ठिकाना न लगता। मलेरी बड़े जीवटका आदमी था। बर्फ़में दब जानेपर भी उसने अपने प्राण बचानेमें कोई कोर कसर न उठा रक्खी। जल्दीसे जल्दी उस ढेरके बाहर निकल आया। समरवेल और क्राफर्ड भी बर्फ़में दब गये थे, पर वे भी किसी तरहसे बाहर निकल आये। होशमें आने और स्वस्थ होनेपर मज़दूरोंकी फिक्र पड़ी। नीचेकी ओर देखनेपर मालूम हुआ कि २५० फीटकी दूरीपर कुलियोंकी एक टोली तो मौजूद है, पर बाक़ी सब लापता हैं।

नीचेवाले कुलियोंने इशारेसे बतलाया कि बीचकी टोलियाँ बर्फ़में दब गई हैं। मलेरी और उसके दोनों साथी फौरन नीचे उतरे। बर्फ़ खोदना शुरू किया। पहले एक मज़दूरको बाहर निकाला। वह बिलकुल बेदम हो रहा था। ताज़ी हवा लगनेपर शीघ्र ही होशमें आ गया। ज़्यादा खुदाई करनेपर एक और व्यक्ति बाहर निकला। उसके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। अब खुदाईका काम और अधिक तेजीसे शुरू किया गया। सब लोग तीन टोलियोंमें बँट गये। एक जगह बर्फ़के बाहर रस्सीका छोर निकला हुआ मालूम हुआ। वहाँ खुदाई करनेपर एक व्यक्ति और मिला। वह भी मर चुका था। एक और व्यक्ति औंधा पड़ा हुआ पाया गया। आक्सीजनके पीपे उसकी पीठपर बँधे हुए थे। वह बर्फ़की चट्टानोंमें बुरी तरहसे फँस

गया था। उसे बड़ी मुश्किलसे बाहर निकाला जा सका। सौभाग्यसे उस समय तक वह ज़िन्दा था। उसकी टोलीमें पाँच आदमी थे।

स्मारक स्तम्भ

(ब्रिगेडियर जनरल ब्रूसके साथियोंका)

उनमेंसे केवल एक वही ज़िन्दा निकला। शेष चारों दबकर मर चुके थे। तीसरी टोलीमें दो ज़िन्दा और दो मरे हुए निकले। इस तरहसे उस दैवी दुर्घटनामें फँसकर देखते देखते सात व्यक्तियोंका बलि-प्रदान हो गया। यह अपने ढँगकी पहली दुर्घटना थी। जो लोग ज़िन्दा

बचे थे उनकी हालत भी बड़ी नाजुक थी। सेवा-शुश्रूषा करके किसी तरहसे उन्हें नीचे पहुँचाया गया। तीसरे पड़ावमें पहुँचकर यात्रियों और मज़दूरोंने मिलकर मृत व्यक्तियोंके स्मारक-स्वरूप पत्थरोंका एक ऊँचा-सा खम्भा चुन दिया। उस अवसरपर सभी कुलियोंने और खास तौरसे जिनके रिश्तेदार और मित्र दुर्घटनामें काम आये थे, बड़े साहस और धैर्यका परिचय दिया।

९ जून तक सब लोग फिर सदर पड़ावपर वापस पहुँच गये। दुर्घटनासे चार दिन पहले बड़ी ज़बरदस्त हिम-वृष्टि हुई थी। सब लोग आपसमें सलाह करके इस नतीजेपर पहुँचे कि वह विशाल-काय चट्टान बर्फ़के बोझसे नीचे खिसक गई थी। उसका बाहरी भाग बर्फ़से ढक जानेके कारण यात्रियों और कुलियोंकी दृष्टिसे ओझल हो गया था। फिर हवाकी गर्मीके कारण जब बर्फ़ पिघलने लगी तो उसमें दबी हुई बड़ी बड़ी चट्टानें भी उसके प्रभावसे न बच सकीं। यात्रियों और कुलियोंके उनके ऊपर चढ़नेसे, उनकी जड़ें और ज़्यादा हिल गईं और वह विशालकाय चट्टान बातकी बातमें नीचे आ गई। दुर्घटनाका कारण जो भी रहा हो पर यूरोपियन यात्रियों और कुलियोंपर उसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा और वे फिर ऊपर चढ़नेकी हिम्मत न कर सके।

यात्रियोंको सुविधा पहुँचाने और उनके उद्देश्यकी पूर्तिमें सहायक होनेमें जिन वीर कुलियोंने अपने प्राणतक होम दिये उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। एवरेस्टकी चढ़ाईमें अबतक जो कुछ भी सफलता मिली है उसका अधिकांश श्रेय इन्हीं वीरोंको है। ये लोग कई बार २५—२६ हज़ार फ़ीटकी ऊँचाईतक जा चुके थे। वह

भी खाली हाथ नहीं, दस दस पन्द्रह पन्द्रह सेर भारी बोझा पीठपर लादकर। अँग्रेज़ लोग तो खाली हाथ ऊपर पहुँच जाते थे। खीमें, खाद्य-सामग्री, आक्सीजनके पीपे तथा अन्य सब ज़रूरी सामान, जिनके बिना साहब लोग उन पहाड़ी प्रदेशोंमें एक मिनटके लिए भी न ठहर सकते थे, यही गरीब कुली लोग अपनी जान हथेलीपर रखकर ऊपर पहुँचाते थे। स्वयं कष्ट और यातनाएँ झेलकर साहब लोगोंको आराम पहुँचाते थे और अन्तमें इन्हीं लोगोंकी सेवामें अपने प्राणतक निछावर कर देते थे। हिमालय-प्रदेशकी चढ़ाईके इतिहासमें इन वीरोंका नाम अमर रहेगा।

१९२४ की चढ़ाई

१९२४ के आरम्भमें गौरीशंकरपर चढ़ाई करनेके लिए फिर एक दल संगठित किया गया। अधिकांश यात्री हिमालय-प्रदेशके बारेमें काफी अनुभव प्राप्त कर चुके थे। इस दलमें कुल मिलाकर तेरह अँग्रेज़ शामिल थे। इनमें अर्विनको छोड़कर शेष सभीकी आयु ३३ से ४० वर्षके लगभग थी। केवल अर्विन २२ वर्षका नवयुवक था। खूब स्वस्थ, धैर्यवान् और साहस-सम्पन्न। उसकी बात-बातसे बुद्धिमानी टपकती थी। अक्सर अनुभवी और होशियार लोगोंको भी उसकी सलाह माननी पड़ती थी। मलेरी ३७ वर्षका होते हुए भी अर्विनहीके समान नवयुवक माल्म होता था। यह दल २५ मार्चसे रेलद्वारा तिब्बतकी ओर रवाना हुआ। तबसे लगातार २ जूनतक नाना प्रकारके कष्ट सहन करते और आपदाएँ झेलते हुए २६,८०० फ़ीटकी ऊँचाईपर छठा पड़ाव स्थापित किया गया। नार्टन और समरवेलने वहाँसे एवरेस्टतक पहुँचनेका निश्चय किया।

समरवेलकी तन्दुरुस्ती ठीक न होते हुए भी वह बराबर आगे बढ़ता चला गया। कुलियोंने भी बड़ी जवाँमर्दी और बहादुरीका परिचय

अर्विन

दिया। इन दोनोंने रात वहीं छठे पड़ावपर बिताई। उस समयतक विशेषज्ञोंकी राय थी कि २६,००० फीटसे अधिक ऊँचे जानेपर नींद ठीक तौरपर नहीं आती।

४ जूनको सुबह तड़के उठकर चाय-पानीके बाद ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया गया। २७,५०० फीटकी ऊँचाईपर पहुँचकर

मलेरी और नार्टन

नार्टनकी आँखोंमें कुछ तकलीफ़ पैदा हो गई। उसे एकके बजाय एक साथ दो चीज़ें दिखाई देने लगीं। इससे उसके लिए एक एक क़दम आगे बढ़ना दूभर हो गया। शुरू शुरूमें नार्टनने अनुमान किया कि शायद बर्फ़की चमकके कारण ऐसा हुआ हो, पर समरवेल इससे सहमत न था। पहाड़से लौटनेके कई मास बाद विशेषज्ञोंने यह राय कायम की कि पार्वत्य प्रदेशोंमें बहुत ऊँचे पहुँच जानेपर आक्सीजनकी मात्रा बहुत कम हो जाती है। आँखोंमें तकलीफ़ पैदा होनेका कारण यही कमी है।

वे लोग बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ पाते थे। नार्टनकी इच्छा थी कि बीस क़दम आगे बढ़कर दम लिया जाया करे। पर तेरह क़दम भी मुश्किलसे बढ़ पाते थे कि साँस फूल जाती थी। ज्यों ज्यों ऊपर बढ़ते जाते थे, हवाकी खुश्की और सख़्ती भी बढ़ती जाती थी। समरवेल पहलेहीसे अस्वस्थ था और खाँसीसे पीड़ित था। हवाकी खुश्कीसे उसका हलक़ सूज गया। खाँसी और ज़्यादा बढ़ गई। लाचार होकर दस पाँच क़दम बढ़नेके बाद ही सुस्तानेके लिए ठहर जाना पड़ता। दस मिनटतक आगे बढ़ते और फिर ठहर जाते। इसी तरहसे दोनों साहसी ऊपर बढ़े चले गये।

दोपहरतक दोनों व्यक्ति गौरिशंकर पर्वतके नीचेकी उपत्यकामें पहुँच गये। यहाँ पहुँचकर समरवेलकी खाँसीने बहुत ज़ोर मारा। जैसे जैसे ऊपर बढ़ते जाते थे, वैसे वैसे खाँसी भी विकट रूप धारण करती जाती थी। समरवेलसे और अधिक आगे न बढ़ा गया। लाचार होकर वह वहीं ठहर गया। नार्टनकी आँखें खराब होते हुए भी वह अकेला ही आगे बढ़ता चला गया। रास्तेमें मिलनेवाली

बर्फ़ बड़ी मुलायम थी और नार्टन कभी घुटनोंतक और कभी कमर तक उसमें धँस जाता था। ढालके कारण ऊपर बढ़ना और भी अधिक कठिन हो जाता था। प्राणोंकी बाज़ी लगाकर आगे बढ़ना होता था, पैर रपटा और जान गई। ऐसी दुर्गम चढ़ाइयोंके मौक़ोंपर आरोही लोग रस्सोंसे काम लेते हैं। पर नार्टन करता तो क्या? वह बेचारा बिलकुल अकेला था। रस्सा बाँधता तो किससे? थकावट बहुत बढ़ गई थी। आँखकी तकलीफ़में कोई कमी न हुई थी, वरन् वह बढ़ती ही जा रही थी। पर नार्टनने इसकी कोई परवाह न की और २८,१२६ फ़ीटकी ऊँचाई तक अकेला ही चढ़ता चला गया। वहाँ पहुँचते पहुँचते एक बज चुका था। वहाँसे एवरेस्ट बहुत थोड़ी दूरीपर रह गया था, परन्तु एवरेस्ट पहुँचकर वापस आनेका वक्त बाकी नहीं रह गया था। लाचार होकर नार्टनने वापस चलना ही श्रेयस्कर समझा।

आजतक कोई मनुष्य इससे अधिक ऊँचे स्थानतक जाकर जीवित नहीं लौट सका है।

नौ बजे रात तक सब लोग चौथे पड़ावमें जा पहुँचे। वहाँ पहुँचते पहुँचते नार्टनकी आँखोंकी पीड़ा बहुत ज्यादा बढ़ गई और दो दिन तक वह बिलकुल अंधा-सा रहा। उसे कुछ भी दिखाई न पड़ता था।

अर्विन और मलेरीकी अमर कहानी

नार्टनकी टोलीके वापस आनेके बाद मलेरी आधी रात तक नार्टनसे बातचीत करता रहा। ६ जूनको मलेरी और अर्विन कुछ कुलियोंको साथ लेकर ऊपरकी तरफ रवाना हुए। बड़े तपाकसे विदा ली। सब लोगोंने उसकी सफलता चाही और सकुशल वापस आ जानेकी ईश्वरसे प्रार्थना की। परन्तु समयकी गति बड़ी विचित्र होती है।

उस समय यह किसीको स्वप्नमें भी गुमान न हो सकता था कि मलेरी और अर्विनकी यह अन्तिम भेंट है। शामको सब लोग छठे पड़ावमें पहुँच गये। वहाँसे कुलियोंको पाँचवें पड़ावको लौटा दिया गया।

७ जूनको ओडेल कुछ आदमियोंको साथ लेकर पाँचवें पड़ावमें आ गया जिसमें आवश्यकता पड़नेपर वह मलेरी और अर्विनको उचित सहायता पहुँचा सके। पर होना तो कुछ और ही था। जिस समय ओडेल पाँचवें पड़ावमें पहुँचा मलेरी और अर्विनके साथ जानेवाले कुली छठे पड़ावसे वापस आ चुके थे। उनके हाथ मलेरीने एक पत्र भेजकर सूचित किया था कि वे दोनों अपना सारा सामान डेरेमें ही पड़ा छोड़कर केवल आक्सीजनके दो पीपे साथमें लेकर रवाना हो गये हैं। कुतुबनुमा तक नहीं ले गये हैं। उन्होंने यह भी बतलाया था कि मौसम अच्छा है और उनके अनुकूल है। वे लोग चढ़ाईके लिए वैसे ही मौसमकी कामना किया करते थे। अन्तमें पड़ावके सामानको ठीक कर लेनेका अनुरोध किया गया था। ओडेलने पूरे एक दिन पाँचवें पड़ावमें इन दोनोंके वापस आनेका इन्तज़ार किया। अगले दिन वह छठे पड़ावकी ओर रवाना हो गया। २६,१०० फीटकी ऊँचाईपर पहुँचकर ओडेलने पर्वत-शिखरकी ओर निगाह दौड़ाई। इन्द्रधनुष्य और बादल बिलकुल विलीन हो चुके थे। शिखरके आसपासका वायुमण्डल बिलकुल स्वच्छ था। उस समय ऐसा मालूम हुआ कि कोई व्यक्ति पर्वतके निचले हिस्सेकी चढ़ाई तै करके ऊपर पहुँच रहा है। पर्वतकी चोटी वहाँसे थोड़ी ही दूरपर थी। वह व्यक्ति अवश्य ही मलेरी या अर्विनमेंसे कोई था। इतनेमें ही बादल छा गये और दोनों मनचले वीर आँखोंसे ओझल हो गये। उसने

अन्तिम बार इतना देखा कि वे दोनों बड़ी तेज़ीसे ऊपर चढ़े चले जा रहे हैं। यह एक बजे दोपहरकी बात है। दो बजेके क़रीब ओडेल छठे पड़ावमें जा पहुँचा। उस वक्त तक हवा तेज़ हो गई थी। डेरेमें तमाम चीज़ें बिखरी पड़ी थीं। कपड़े, खाने-पीनेकी चीज़ें, आक्सीजनके पीपे, यन्त्र आदि इधर उधर तितर-बितर पड़े थे। उनको देखकर ओडेलने अनुमान लगाया कि आक्सीजनके पीपोंकी दुरुस्तीमें काफ़ी वक्त लगाया गया होगा। ओडेल छठे पड़ावसे और आगे बढ़ा। उसने २०० फ़ीटकी ऊँचाईपर पहुँचकर फिर शिखरकी ओर देखा। कोई दिखाई न दिया। सीटी बजाई, आवाज़ें दी, चिल्लाया, पर कोई नतीजा न निकला। किसी भी तरहका उत्तर न मिला। ओडेलको वहाँ मलेरी और अर्विनकी मौजूदगीका कोई भी चिह्न न मिला। उसे घोर निराशा हुई। दिल बैठ गया। इसी वक्त हवा बहुत तेज़ हो गई। ठण्डक भी बड़ी विकट हो गई। उससे और आगे न बढ़ा गया। किसी तरह पड़ाव तक वापस गया। साढ़े चार बजेतक वहीं दोनोंका इन्तज़ार करता रहा। बहुत ज़्यादा देर होते देख वह पाँचवें पड़ावकी ओर लौट पड़ा। वहाँसे पौने सात बजे तक चौथे पड़ावमें जा पहुँचा। इतनी ज़बरदस्त ऊँचाईपर जाकर वापस आना और नीचे उतरना वास्तवमें बड़े साहसका काम था। ओडेलसे पहले और किसीने ऐसा न किया था। अगले दिन सुबह होते ही दूरबीनसे पाँचवें और छठे पड़ावको बड़े ग़ौरसे देखा गया, पर वहाँ कुछ भी दिखाई न दिया। तब ओडेलने फिर ऊपर जाकर मलेरी और अर्विनकी खोज करनेका पक्का इरादा कर लिया। दो आदमी ओडेलके साथ भेजे गये। वहाँ पहुँचनेपर भी उन मनचले वीरोंका पता

ठिकाना न लगा। हवा बहुत तेज़ हो गई थी और तेज़ झक्कड़ चलने लगा था। कभी कभी तो इतने तेज़ झोंके आते कि खंमों तकके उखड़ जानेकी नौबत आ जाती। रातको सर्दी और आँधीने बड़ा भीषण रूप धारण कर लिया। खाना बनाना भी मुसीबत हो गया। सुबह होने पर भी झक्कड़का वेग कुछ कम न पड़ा। सर्दीके मारे हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे। पाँचवें पड़ावमें एक दिनतक इन्तज़ार करनेके बाद भी जब कोई नतीजा न निकला तो ओडेल छठे पड़ावकी ओर बढ़ा। इस बार उसने आक्सीजनके पीपे साथ ले लिये थे पर उनसे विशेष लाभ न हुआ। वह गैसको बन्द करके वैसे ही चढ़ा चला गया। साँस फूल गई थी। बड़ी मुश्किलसे हाँफता हुआ छठे पड़ावमें पहुँचा। सब चीज़ें जैसीकी तैसी पड़ी थीं। वहाँ किसी भी आदमीके आनेके चिह्न न मिल सके। कुछ देरतक सुस्तानेके बाद उसने एक ऊँचेसे टीलेपर चढ़कर एवरेस्टकी ओर निगाह दौड़ाई, मगर कोई दिखाई न पड़ा। मौसम बड़ा भीषण हो चला था। तेज़ आँधी चल रही थी और हिम-कणोंसे भरी हुई थी। फिर भी ओडेल दो घंटे तक लतातार मलेरी और अर्विनकी खोज करता रहा, पर पता न चला। अन्तमें उसे निराश होकर यह विश्वास कर लेना पड़ा कि मलेरी और अर्विन सदाके लिए हिमालयकी गोदमें सो गये हैं और उन्हें ढूँढ़ निकालना मानवीय शक्तिके बसकी बात नहीं है। मलेरी और अर्विनने अपने बहुमूल्य प्राण हिमालयकी बलि-वेदीपर अर्पित कर दिये हैं।

ओडेलने मलेरी और अर्विनको जिस स्थानपर ओझल होते हुए देखा था वह हिसाब करनेपर २८,२३० फीटकी ऊँचाईपर पाया

गया। अभी तक कोई मनुष्य उससे ज़्यादा ऊँचाईपर नहीं पहुँच सका है। नार्टन २८,१०० फीटकी ऊँचाई तक जाकर लौट

मि० नार्टन
२८१०० फीटकी ऊँचाईपर

आया था। उसके आगे पर्वत-शिखरपर पहुँचनेके लिए केवल ८००

फीटकी चढ़ाई और रह जाती है, परन्तु उस ८०० फ़ीटकी चढ़ाईको तय करनेके लिए भी कमसे कम १६०० फीटका सफर करना ज़रूरी था।

यदि रास्तेमें कोई विशेष कठिनाई न पड़ी होगी, तो अर्विन और मलेरी एवरेस्ट शिखरपर अवश्य पहुँच गये होंगे। उन्हें वहाँ पहुँचते पहुँचते साढ़े तीन चार बज गये होंगे। वापस आते समय रास्तेहीमें सूर्यास्त हो गया होगा और वे दोनों बहुत ज्यादा थके होनेकी वजहसे छठे पड़ाव तक न लौट सके होंगे। उन्होंने सम्भवतः वहीं कहीं रास्तेमें किसी चट्टानकी सायामें रात बितानी चाही होगी और अत्यन्त भीषण सर्दीके कारण वे सदैवके लिए वहींपर सोते रह गये होंगे।

इसके बाद १९२३ की ग्रीष्म ऋतुमें सुप्रसिद्ध पर्वतारोही मि० ह्यू रटलेजकी अध्यक्षतामें एक और दल रवाना हुआ। २२ मई तक यह दल २५,६०० फीटकी ऊँचाई तक पहुँच गया। एक सप्ताह तक अनवरत प्रयत्न करते रहनेपर २९ मईको दलके तीन सदस्य विन हैरिस, वेगर और लाँगलैण्ड आठ पोर्टरोंको साथ लेकर २७,४०० फीटकी ऊँचाई तक चढ़ गये। पर उसके बाद लाख कोशिश करने पर भी आगे बढ़ना मुहाल हो गया। ११ जून तक बराबर कोशिशें होती रहीं। थोड़ी दूर आगे बढ़ते कि फिर पीछे लौटना पड़ता। उस समय तक एवरेस्टकी चोटी पूर्णतया बर्फ़से ढक गई थी और बिलकुल बर्फ़के ढेरकी तरह मालूम होती थी। यात्रियोंकी सुविधाके लिए जो मज़बूत रस्से वगैरह वहाँपर डाले गये थे, उन सबपर दो दो फीट ऊँची बर्फ़की तहें जम गई थीं। हिम-वर्षा तो नित्य ही होती थी। कई दिन तक यही हाल रहा। अन्तमें वापस लौटना ही

श्रेयस्कर समझा गया और २ जुलाईको मि० रटलज अपने दल-बल-सहित लौट पड़े। इस चढ़ाईमें भी पसांग और लाखपीछेदी नामक दो पोर्टरोंके पैरोंकी उँगलियाँ नष्ट हो गईं और अंगतुरकियाके पैर बुरी तरहसे फट गये।

इसके बाद एक और दुस्साहिक अँग्रेज़ यात्री भेष बदलकर दार्जिलिंगसे गौरीशंकरके लिए अकेला ही रवाना हुआ। कुछ दूर जानेके बाद उसने कुलीको लौटा दिया और उससे दो सप्ताह तक प्रतीक्षा करनेके लिए कहा। किन्तु एक महीने तक प्रतीक्षा करनेके बाद भी जब उक्त यात्री वापस नहीं लौटा तो कुली उसके जीवित रहनेके सम्बन्धमें निराश होकर दार्जिलिंग लौट आया। तब लोगोंको इस दुस्साहसिक वीरके अमर बलिदानका समाचार ज्ञात हुआ। १९३५ में एक बार फिर चोटी तक पहुँचनेकी ज़बरदस्त कोशिश की गई पर विफल-प्रयास होना पड़ा। अब १९३८ में चढ़ाई करनेके लिए एकदल और संगठित किया जा रहा है।

पहाड़की भीषण और दुर्गम चढ़ाईमें जो कुछ भी सफलता प्राप्त हुई है उसका अधिकांश श्रेय भूटिया कुलियोंहीको है। मुश्किलसे तो वे घबराते ही नहीं। ये लोग साहबोंका सारा साजो समान अपने मज़बूत कंधोंपर लादकर आगे बढ़ते हैं और उन्हें सब प्रकारकी सुविधायें पहुँचानेमें अपने शरीरकी सुविधाओंकी तनिक भी परवाह नहीं करते। साहबोंको तो केवल खाली हाथ आगे बढ़ना होता है। अधिकांश यातनाएँ और तकलीफें तो इन्हीं बेचारे कुलियोंको झेलनी पड़ती हैं। इतना सब होते हुए भी इनका वेतन इतना कम होता है कि विदेशोंके मामूली मजदूर उसपर हँसे बिना नहीं रह सकते।

इन कुलियोंकी असीम सहनशीलता, त्याग और वीरत्वका गुण-गान करते हुए सुप्रसिद्ध जर्मन आरोही श्नीडरने कहा है—

" They were to us more than porters. They were our comrades, too brave and gallant fighters and they have gone with their friends to their last rest high above the valleys on the ridges of the Nanga Parbat. अर्थात् वे हमारे लिए कुलीसे बढ़कर थे। वे हमारे सहचर थे, बड़े ही साहसी और निर्भीक लड़ाके थे। वे अब अपने मित्रोंके साथ नंगा पर्वतके ऊर्ध्व भागमें स्थित गिरि-उपत्यकामें अन्तिम महा निद्रामें लीन हो गये है।

१–हिमालयपर हवाई चढ़ाई

पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने पर्वतराज हिमालयकी संसार-प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणियोंपर विजय प्राप्त करनेकी अनेकों चेष्टाएँ की हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन पिछले अध्यायमें किया जा चुका है। १९२१ से १९२५ तक अकेले गौरीशंकर शिखर तक पहुँचनेके लिए चार बार कोशिश की गई पर सफलता प्राप्त न हो सकी।

अप्रैल १९३३ में संसारके इस सर्व्वोच्च पर्वत-शिखर तक पहुँचनेके लिए वायुयानोंकी सहायता ली गई, और उन्हें पूरी सफलता प्राप्त हुई। इंग्लैण्डका हुस्टन-दल इसके लिए कई वर्षोंसे प्रयत्न कर रहा था।

लेडी हुस्टन

इस चढ़ाईमें रुपया भी बहुत लगा। यह सब धन लेडी हुस्टनकी कृपासे प्राप्त हो गया था। लेडी हुस्टन ब्रिटिश-साम्राज्यकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेके लिए किये जानेवाले प्रत्येक कार्यमें सहायता देनेके लिए सदैव तत्पर रहती थीं। इस बार भी उन्होंने हिमालयके अभियानके

लिए वायुयान आदि खरीदने, उन्हें भारत तक भेजने और अभियान-दलके कार्यकर्त्ताओंके खर्च आदिका सब प्रबंध स्वयं ही किया था। इतना ही नहीं, उन्होंने वचन दिया था कि जब तक यह दल पूर्ण विजय प्राप्त करके न लौटेगा वे बराबर उसकी सहायता करती रहेंगीं। लेडी हुस्टनकी इस अद्वितीय सहायताके कारण यह दल 'हुस्टन-दल' के नामसे प्रख्यात हो गया।

डी० एफ० मैकइंटायर

एयर कमांडर फेलोज़ इसके नेता थे। लार्ड क्लाइड सडेल-स्काड्रन लीडर, लेफ्टिनेंट मैकइण्टायर और कर्नल इयर्टन प्रधान निरीक्षक, लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रेकर सिनेमा-विशेषज्ञ, मि० फिशर और मि० बॉनेट विशेष पत्र-प्रतिनिधि, मि० शेफर्ड इंजीनियर और मि० बरबर्ड और

मि० पिट, ये व्यक्ति इस दलमें शामिल थे। सिनेमाके विशेषज्ञ इंग्लैण्डकी सुप्रसिद्ध सिनेमा कम्पनी 'ब्रिटिश गामंट कम्पनी' की ओरसे शामिल हुए थे। इस दलके सेक्रेटरी कर्नल इयर्टन और प्रसिद्ध उड़ाके कर्नल स्टुअर्ट हिमालय-प्रदेशमें बहुत दिनों तक भ्रमण कर चुके थे और हिमालयके निकटवर्ती स्थानोंसे भली भाँति परिचित थे।

चढ़ाईके लिए दो वायुयान ख़ास तौर पर तैयार किये गये थे। इनमें दो दो व्यक्ति बैठ सकते थे। एकका नाम 'हुस्टन वेस्टलैण्ड' और दूसरेका 'वेस्टलैण्ड वालेस' रक्खा गया था। इन दोनों वायु-यानोंमें सर्वश्रेष्ठ 'ब्रिस्टल पीगासस' इंजिन लगाये गये थे। इन इंजिनोंकी भली भाँति परीक्षा की जा चुकी थी। इनकी सहायतासे केप्टेन यूविन्सने दो वर्ष पूर्व, ४३,९७६ फीटकी ऊँचाई तक उड़नेमें सफलता प्राप्त की थी। उससे पूर्व कोई उड़ाका किसी भी इंजिनकी सहायतासे इससे अधिक ऊँचा नहीं उड़ सका था। इसके अलावा मेसर्स जे० एस० फ्राईने अपनी 'हेवीलैंड फाक्स माथ मेशीन' भी उधार दे दी थी। जहाज़ोंको हर तरहके ज़रूरी साजो सामानसे सुसज्जित किया गया था।

पूर्ण सफलता प्राप्त करनेके लिए पिछले कई वर्षोंसे प्रयत्न किये जा रहे थे। शरीरको गर्मी पहुँचाने और साँस लेनेकी सुविधाओंका प्रबंध करनेके लिए अनेक प्रयोग किये गये थे। पहलेहीसे अनुमान कर लिया गया था कि हिमालयके सर्वोच्च शिखर तक पहुँचते पहुँचते ताप-क्रम बहुत ही कम हो जायगा। मनुष्यका खून जम जायगा और साँस लेनेमें असमर्थ होनेके कारण दम घुटकर मर जानेका ख़तरा बना रहेगा। इन सब कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए

विशेष प्रकारकी पोशाकें तैयार की गई थीं। गरमी पहुँचानेके उद्देश्यसे कपड़ोंके अस्तरके भीतर बिजलीके तारों और बेठनोंका जाल-सा बिछा दिया गया था। चश्मों तकमें बिजलीके अत्यन्त बारीक तार लगाये गये थे।

हिमालयपर चढ़ाई आरम्भ करनेके पूर्व कराचीमें ३५,००० फीट ऊँचे उड़कर इन सब व्यवस्थाओंकी भली भाँति जाँच कर ली गई थी। गरमी पहुँचानेका समुचित प्रबंध होते हुए भी देखा गया था कि उड़ाकोंके चश्मोंके ऊपर बर्फ़की एक हलकी-सी तह जम गई थी। अतः हिमालय-प्रदेशके ऊपर उड़ते समय और भी अधिक सावधानीसे काम लिया गया था। हथेली और हाथके पिछले भागको गरम बनाये रखनेके लिए खास तौरसे प्रबंध किया गया था जिसमें वायु-यान-सञ्चालकोंको इनके चलाने और समय समयपर उनके कल पुरज़े ठीक करनेमें विशेष कठिनाई न पड़े। कराचीके प्रयोगमें आवश्यकतासे अधिक गरमी हो गई थी और निरीक्षकके घुटने कुछ कुछ झुलस गये थे। इस बार इसका भी प्रबंध किया था कि आवश्यकतासे अधिक गरमी न हो।

इस बातका काफी इन्तज़ाम किया गया था कि वायु-यान-संचालकों, निरीक्षकों और फोटो आदि लेनेवालोंको साँस लेनेमें दिक्क़त न पड़े। इसके लिए पर्याप्त मात्रामें आक्सीजन (=प्राणवायु) पहुँचानेका प्रबंध किया गया था। आक्सीजन रखनेके लिए नये प्रकारके ईस्पातके सिलेंडर बनाये गये थे। आक्सीजन पहुँचानेवाले यंत्रकी भली भाँति परीक्षा कर ली गई थी और ऐसा प्रबंध कर लिया गया था जिसमें साँस लेनेमें तनिक भी असुविधा न हो।

इतनी अधिक ऊँचाईपर पहुँचकर स्वस्थ बने रहना भी कुछ आसान बात न थी। बहुत अधिक ऊँचाईपर पहुँचनेपर मनुष्यके मस्तिष्कके बिगड़ जानेकी आशंका होती है। कभी कभी तो वह अपने आपको भूलकर बड़ी लापरवाही और गैरज़िम्मेदारीके ढँगसे काम करने लगता है। परन्तु यह सब उसी हालतमें होता है जब वह वायुमण्डलमें ठीक ठीक साँस लेनेमें असमर्थ हो जाता है। ऐसी स्थितिमें उतने ऊँचेपर उड़ते हुए हवाई जहाज़ोंसे फोटो आदि लेनेमें भी बहुत-सी कठिनाइयाँ थीं। अतएव फोटो लेनेके लिए स्वयं काम करनेवाले कैमरे तैयार किये थे। उन्हें उँगलीसे छू देने मात्रसे चित्र अङ्कित हो जाता था, और काममें आई हुई प्लेटोंका स्थान नई प्लेटें ले लेती थीं। सिनेमाके चित्र लेनेवाला कैमरा भी विशेष प्रकारके साजो सामानसे सुसज्जित किया गया था।

इन सब कठिनाइयोंको हल करनेका तो कुछ न कुछ प्रबंध कर लिया गया था, पर सबसे अधिक भीषण कठिनाई इंजिनका फेल हो जाना था। इंजिनके फेल हो जानेपर मृत्यु अवश्यम्भावी थी। परन्तु इन साहसी वीरोंने सृष्टिके अज्ञात स्थलोंका पता लगाने, संसारके सर्वोच्च शिखरपर विजय प्राप्त करने, और अपनी ज्ञान-पिपासा शान्त करनेके लिए इसकी भी कुछ परवाह न की। सौभाग्यवश हवाई जहाज़ोंको कहीं रुकना न पड़ा। सबके इंजिन ठीक ढँगसे अपना काम करते रहे। इतनी अधिक ऊँचाई और हिम-तुषार-मय वायुमण्डलमें सुव्यवस्थित रूपसे सफलतापूर्वक कार्य कर सकनेके लिए मेशीनों और उनके संचालकोंकी जितनी भी तारीफ़ की जाय, कम है।

ह्स्टन-दल मार्चके आरम्भहीमें भारतवर्ष आ गया था। यह

पहलेहीसे तय कर लिया गया था कि चढ़ाई बिहारके पुर्निया ज़िलेसे शुरू होगी। पुर्नियामें हवाई जहाज़ आदि रखने और दलके सदस्योंके ठहरनेका बहुत उत्तम प्रबन्ध कर लिया गया था। चढ़ाई शुरू करनेके दस दिन पहलेहीसे नित्य वायुमण्डलकी परीक्षा की जाती थी। दलके सदस्योंको नित्य प्रति निराश और चिन्तित हो जाना पड़ता था। ऋतु-परिवर्त्तनके कारण किसीकी भी आगे बढ़नेकी हिम्मत न पड़ती थी। हिमालयमें प्रचण्ड वेगसे तुषारमय वायु बह रही थी। वायुमण्डलमें वायुयानोंका उड़ना बिलकुल असम्भव था। इस वेगको शान्त होनेमें कई दिन लग गये। २० मार्चको वायुका वेग कुछ शान्त हुआ। २ अप्रैलको रविवारके दिन वायुमण्डल पूर्णतया शान्त हो गया और इस योग्य हो गया कि उसमें हवाई जहाज़ सुगमतासे उड़ सकें। परन्तु वायुमण्डलके शान्त हो जानेके बाद भी कञ्चनजंघा पर्वतके चारों ओर मँडरानेवाले बादलोंके समूहने काफ़ी बाधा डाली। दलके नेता एयर कमांडर फेलोज़ दो बार हिमालयकी सीमातक उड़ने गये और दोनों बार निराश होकर वापस आ गये। बहुत कुछ इन्तज़ार करनेके बाद अगले दिन अर्थात् सोमवार ३ अप्रैलको इन लोगोंको हवा-घरके विशेषज्ञों और निरीक्षकोंसे मालूम हुआ कि ३३,००० फ़ीटकी ऊँचाईपर वायुका वेग ५५ मील प्रति घंटा है। इससे भी अच्छी बात यह मालूम हुई कि आकाश पूर्ण स्वच्छ और निर्मल है। बादल बिलकुल विलीन हो गये हैं और पृथ्वी-तलपर चलनेवाली आँधीका वेग भी बिलकुल शान्त हो गया है। वैसे भी यह आँधी ७,००० फीटसे ऊँची उठती बहुत कम सुनी जाती है।

वायुमण्डल शुद्ध होनेके समाचार मिलते ही दलके सदस्य फौरन मोटरोंद्वारा लाल बालू स्थानपर जा पहुँचे। यहाँपर दर्शकोंका एक छोटा-सा समूह पहलेहीसे इकट्ठा था। हवाई जहाजोंको उड़नेके लिए ठीक ठाक करनेमें भी कुछ समय लगा। उस समय वे लोग हिमालयके उच्च शिखरतक पहुँचनेके लिए कितने उत्सुक थे, इसका अनुमान दलके प्रधान निरीक्षक लेफ्टिनेंट कर्नल स्टुअर्ट ब्लेकरके निम्न वाक्योंसे लगाया जा सकता है—

"तैयारी करनेमें यद्यपि बहुत ही कम समय लगा; परन्तु हम लोगोंको क्षण क्षण भारी हो रहा था। ज़रा-सी देर इन्तज़ार करना भी दूभर हो रहा था। वास्तवमें छोटी छोटी सैकड़ों बातोंका प्रबन्ध करना था। सरकारी हवाई बेड़ेके छह अफ़सरों और स्वयं हमारे दलके इंजीनियरोंकी देख-रेखमें सब प्रबन्ध हो रहा था।"

इधर हवाई जहाज़ोंकी तैयारी हो रही थी उधर चारों उड़ाके वीर भी अपनी अपनी पोशाकें पहने संसारके सर्वोच्च पर्वत-शिखरपर विजय पानेके लिए, अनादि कालसे अज्ञात पर्वतराज हिमालयके शिरो-मुकुटका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करनेके लिए तथा आवश्यकता पड़नेपर अपने प्राणोंको भी उसीके लिए उत्सर्ग करनेके लिए तैयार बैठे थे।

३ अप्रैलको प्रातःकाल ठीक आठ बजकर २५ मिनटपर दोनों हवाई जहाज़ रवाना हो गये। 'हुस्टन वेस्ट लैण्ड वालेस'पर लार्ड क्लाइड सडेल और प्रधान निरीक्षक कर्नल ब्लेकर आसीन हुए। 'वेस्ट लैण्ड वालेस' नामक दूसरे जहाज़पर लेफ्टिनेंट मैकइण्टायर और फोटोग्राफर मि० बेनेट थे।

हवाई जहाज़ १,००० फीटकी ऊँचाई तक तो पूर्ण वेगसे उड़ते रहे। उसके बाद उनकी गति धीमी कर दी गई। २० मिनट तो बिहार-प्रदेशको पार करनेमें लग गये। ३० मिनटके बाद दल पुर्नियासे ४० मीलकी दूरीपर पहुँच गया। वहाँसे एवरेस्ट गिरि-शृंग साफ़ साफ़ दिखाई देने लगे थे। चोटीपर धुंध छाया हुआ था। वहाँसे चोटीकी ऊँचाई १९,००० फीट थी। उस स्थानसे जहाज़ोंकी गति और भी धीमी कर दी गई। ९ बजेके लगभग हवाई जहाज़ २१,००० फीटकी ऊँचाईपर पहुँच गये। लीथ (=एवरेस्टकी चोटीका दक्षिणीय भाग) पर हवाका दबाव बहुत तेज़ीसे बढ़ने लगा। पश्चिमी हवाके चलनेके कारण मेशीनको तेज चलानेके सभी प्रयत्न निष्फल हो गये। फिर दोनों वायुयान १० बजकर ५ मिनटपर एवरेस्टकी चोटीके ऊपर पहुँच गये। चोटीके पास वायुका वेग बहुत तेज़ था। परन्तु किसी भी वायुयानको वायुका धक्का नहीं लगा। वायुयानोंको चोटीके आसपास चक्कर काटनेमें कुल १५ मिनट लगे। उड़नेकी गति ठीक होनेके कारण फोटो आदि भी सुविधापूर्वक ले लिये गये। उतनी ऊँचाईसे दूरकी पहाड़ियोंका दृश्य बहुत ही रमणीय दिखाई दिया। वहाँसे हिमालयकी पहाड़ियोंका सिलसिला बहुत दूर तक दिखाई देता था। दृश्य बहुत ही विचित्र और मनोरम था। दो घंटेसे कममें दोनों हवाई जहाज ३५,००० फीटकी ऊँचाईपर पहुँच गये थे। ३५,००० फीट ऊपर पहुँचकर उन्होंने धीरे धीरे नीचे उतरना शुरू किया और ३१,००० फीटपर आकर एवरेस्टका भली भाँति निरीक्षण किया।

उस समय एवरेस्टके चारों ओर ज़बरदस्त धुन्ध छाया हुआ था। धुन्धके कारण आसपासकी चीज़ोंको देखना भी मुश्किल था। दोनों

हिमालयपर हवाई चढ़ाई

हवाई जहाज़ भी कई बार एक दूसरेको न देख सके। दोनों जहाजोंने पर्वतराज हिमालयके सर्व्वोच्च शिखरकी चार परिक्रमायें कीं। फोटोग्राफरने अनन्तकालसे अज्ञात और रहस्यमय हिम-प्रदेशोंके बहुतसे चित्र खींचे। सिनेमाकी भी कई फिल्में तैयार की गईं। प्रधान निरीक्षक कर्नल ब्रेकरने भी कई चित्र खींचे।

सवा तीन घंटेके बाद, ११॥ बजेके लगभग, चारों विजयी उड़ाके लाल बालू वापस आ गये। एयर कमांडर फैलोज़ और कर्नल इयर्टन इन लोगोंका स्वागत करने दौड़ पड़े। जब उन लोगोंको पता लगा कि उनकी चिर-संचित अभिलाषायें पूरी हो गई हैं, और उनके साथी पर्वतराज हिमालयके सर्वोच्च शिखरपर विजय प्राप्त कर आये हैं, तब उनके उल्लासका ठिकाना न रहा। रास्तेमें कोई उल्लेखनीय दुर्घटना नहीं हुई। हाँ, फोटोग्राफर मि० बेनेटका आक्सजिन-बाक्स फट जानेसे उनके पेटमें बड़े ज़ोरका दर्द होने लगा और उन्हें विवश होकर अपना काम बंद करके बैठ जाना पड़ा; परन्तु शीघ्र ही बाक्स फटनेका कारण उनकी समझमें आ गया और उन्होंने फटे हुए स्थानपर रूमाल बाँध दिया। वे तुरंत स्वस्थ होकर फोटो लेने लगे। पृथ्वीपर उतरनेपर उनके स्वास्थ्यकी परीक्षा की गई। वे उस समय भी काँप रहे थे। परन्तु उन्हें कोई विशेष कष्ट न था। अन्य लोगोंको भी विशेष थकावट महसूस नहीं हुई। हाँ, फ़्लाइंग लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रेकर बहुत थक गये थे और पीले पड़ गये थे।

यात्रियोंका कहना है कि उड़ानका कार्य पूर्णतया सन्तोषप्रद नहीं हुआ। इस उड़ानमें कैमरे अपना काम ठीक तौरसे अदा नहीं कर सके। केवल एवरेस्टकी-चोटी और उसके आसपासकी पहाड़ियोंके

ही सुन्दर दृश्योंके फोटो लिये जा सके। फोटो लेनेका काम मि० बेनेट कर रहे थे। उनकी आक्सीजनकी नली फट जानेके कारण भी फोटो खींचनेमें काफी बाधा पड़ी।

इस यात्राके खास उद्देश्य तीन बताये गये थे—(१) गौरीशंकर शिखरपर उड़कर उसके चित्र लेना, (२) शिखर-प्रदेशके क्षेत्रफलका माप लेना और (३) यह सिद्ध कर दिखाना कि संसारके सर्वोच्च पर्वत-शिखरपर वायुयानद्वारा विजय प्राप्त कर ली गई है। इसके अतिरिक्त इस यात्राका उद्देश्य वायुयानकी शक्ति-परीक्षा एवं भूतत्त्व-सम्बन्धी नवीन ज्ञान प्राप्त करना भी था। इस दु:साहसिक आयोजनमें सफलता पानेके लिए अभियानकारी दलके सदस्योंने हथेलीपर प्राण रखकर प्रयत्न किये थे। ईश्वरने भी उनकी सहायता की और उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली है। इस विजयसे संसारका हिमालय-प्रदेश-सम्बन्धी ज्ञान बहुत बढ़ गया है। हिमालय-प्रदेशकी पैदल यात्रा करनेवाले दलोंका काम भी बहुत सरल हो गया है।

इससे पूर्व पैदल-यात्री गौरीशंकर शिखर तक पहुँचनेके लिए कई बार भगीरथ प्रयत्न कर चुके थे। पर बहुत कुछ यातनाओंके सहन करनेपर भी सफल न हो सके थे। कई बार तो यात्री चिरकालके लिए हिमालयकी गोदहीमें विलीन हो गये और अपनी यात्रासे आज तक वापस नहीं आ सके। इस अभियानके बाद भी मि० ह्यू रटलेजकी अध्यक्षतामें एक और दल रवाना हुआ। परन्तु उसे कोई विशेष सफलता न मिल सकी। ऋतु-विपर्ययके कारण शिखरके बहुत कुछ नजदीक पहुँचकर भी दलको वापस लौट आना पड़ा।

इस अभियानके सम्बन्धमें फ्लाइंग लेफ्टिनेन्ट कर्नल ब्रेकरके कुछ वाक्य बड़े मनोरंजक और चित्ताकर्षक हैं—

"××× वायुयान नीचेकी ओर आ रहा था। हवाके एक तेज़ झोंकेने मुझे सचेत-सा कर दिया। अकस्मात् मैंने बर्फ़का एक विशालकाय गिरि देखा। मेरे हृदयमें बिजली-सी कौंध गई। क्या यही एवरेस्ट है?

"वास्तवमें यही वह चोटी थी : स्वयं एवरेस्ट पर्वत,—पृथ्वीतलका दुर्गमतम स्थान जिसे आजतक कोई न देख सका था! इसके दर्शन-कर मैं कृतकृत्य हो गया, आश्चर्यचकित हो पड़ा। जैसे जैसे हमारा वायुयान इसके निकट पहुँचता गया, इसके सभी दृश्य बहुत स्पष्ट होते गये। मैं पर्वतराज हिमालयके सर्वश्रेष्ठ शिखरको देखकर कुछ क्षणोंके लिए अपनी सारी सुध-बुध भूल गया। परन्तु मेरे कैमरेने मुझे अपने कर्तव्यकी याद दिला दी। एक क्षणके बाद मैं अपने काममें लग गया। उस समय वायुकी गति बहुत तेज़ थी। जहाजको चलाना बहुत ही कठिन हो रहा था। पर्वतराजके श्रेष्ठतम शिखरसे कुछ हिम-कण हमारे वायुयानपर भी उड़ उड़कर गिर रहे थे। वायुयान चलानेवाला बहुत ही कुशल व्यक्ति था। वह इस शक्तिशाली वायुके वेगको सहन करता हुआ धीरे धीरे अपनी मेशीनको आगे ले जानेमें लगा रहा। मैं भी अपने कार्यमें दत्तचित्त था। एक एक कर बहुतसे चित्र खींच चुका था। मेरी उँगलियाँ मशीनके पुर्जोंकी तरह काम कर रहीं थीं। मेरी दो आँखें भी बराबर अपना काम कर रही थीं। जहाज़ जैसे जैसे आगे बढ़ता था और नये नये दृश्य आगे आते जाते थे, आँखें उनको हृदयंगम करती जाती थीं।

"एक कैमरेकी प्लेटें ख़त्म हो जानेपर मैंने दूसरेको उठाया। तंग जगहमें उसे शीघ्रतापूर्वक ठीक करके उससे काम लेना बहुत कठिन

था। मैं उसके लिए अधिक समय नष्ट नहीं करना चाहता था। अतः मैंने अपने सिनेमेटोग्राफ कैमरेका उपयोग करना चाहा। परन्तु मुझे निराश होना पड़ा। उसकी सारी फिल्में जम गई थीं और मेरे छूते ही चकनाचूर हो गईं। मुझे इससे कुछ आश्चर्य भी हुआ। सिनेमेटोग्राफ कैमरे और प्लेट कैमरेको एक ही विद्युद्-धारासे गरम किया गया था। प्लेट कैमरा तो ठीक काम कर चुका था, परन्तु इसकी फिल्में न जाने कैसे जम गईं और छूते ही चकनाचूर हो गईं! लाचार मुझे फिर प्लेट कैमरेसे काम लेना पड़ा और मैंने फिर एक बार उन आश्चर्यजनक बर्फ़ीले मैदानों और चट्टानोंके चित्र लेने शुरू कर दिये। एक एक करके मैंने बहुत-से चित्र खींचे। उस समय पर्वतकी चोटियोंका भी कोई अन्त नहीं मालूम होता था। जिधर आँखें जाती थीं ऊँचे ऊँचे हिमाच्छन्न पर्वत शिखर दिखाई देते थे। कहीं उनका आदि और अन्त भी न मिलता था। हिमाच्छन्न पर्वत-शिखर एकके ऊपर एक मस्तक उठाये खड़े थे। उत्तरकी ओर अरुणिमासे आच्छादित तिब्बत दिखाई देता था। उसके ऊपर भी सुदूरस्थित हिमाच्छन्न पर्वत-शिखरोंका दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। दृश्य बहुत ही आकर्षक और मनोमोहक थे, परन्तु हम वहाँ एक क्षण भी अधिक ठहरनेका साहस न कर सकते थे। हवा बहुत तेज़ीसे चल रही थी। हवाके साथ साथ हमारे पास आत्म-रक्षा और जहाज़के चलानेके लिए जो सामग्री थी वह भी थोड़े ही समयके लिए काफी थी।

"मैंने अनुभव किया कि वह कार्य जिसके लिए मैं वर्षोंसे मनसूबे बाँध रहा था, जिसके लिए मैं विगत दस महीनेसे अधिक परिश्रम कर रहा था, आज सफल हो गया। हिमालयके सर्वोच्च शिखरपर

पहुँचकर ऐसा मालूम हुआ, मानों मैं सफलताके उच्च शिखरपर आ गया हूँ। कुछ भी हुआ हो, अब कोई यह न कह सकेगा कि एवरेस्ट-पर्वत अज्ञेय है, और कोई उस तक पहुँच ही नहीं सकता। पृथ्वीके सर्वोच्च शिखरपर विजय प्राप्त कर ली गई। मनुष्य अपने बुद्धि-कौशल और यंत्र-बलसे उसके ऊपर पहुँच गये। मैं मन ही मन अपने उन साथियोंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगा जिन्होंने आरम्भहीसे मेरी हिमालय-अभियानसम्बधी योजनाको कार्यरूपमें परिणत करनेमें मेरा साथ दिया था। सौभाग्यवश ब्रिटिश वायुयानपर चढ़े हुए आज मुझे बाईस वर्ष पूरे हो गये थे।

"शीघ्र ही हम लोग बहुत आगे निकल आये और तुषाराच्छन्न हिम-प्रदेशके चिरस्मरणीय दृश्य एक एक करके ओझल हो गये। जैसे जैसे हमारा जहाज धीरे धीरे नीचेकी ओर आता जाता था, मैं अपनी गरम पोशाकको ढीला करता जाता था। हिम-प्रदेशके जंगलों, वनों, उपवनों, महापर्वत और बलखाती एवं इठलाती हुई अरुण नदीको पार करते हुए हम लोग बिहारके गाँवों और मैदानोंको पार कर आये।"

अप्रैलके अन्तमें यात्री दल फिर इंग्लैएड वापस पहुँच गया। इस यात्राकी सफलता और हिमालय-विजयपर स्वयं सम्राट् जार्जने वीर उड़ाकोंको बधाईके तार भेजे थे। लन्दन पहुँचनेपर इन लोगोंका बड़े समारोहपूर्वक स्वागत किया गया था। इस यात्रामें हिम-प्रदेश और एवरेस्ट-शिखरके जो चित्र खींचे गये थे, लन्दनमें उनके लिए एक विशेष प्रदर्शिनीका आयोजन किया गया। उनको अभिवर्द्धित करके बड़े आकारके बड़े सुन्दर और भव्य चित्र तैयार कर लिये गये थे।

८५ चित्र तो स्वयं एवरेस्ट शिखरके थे। २०० चित्र सिनेमेटोग्राफकी फिल्मोंसे तैयार किये गये थे। १४ मई १९३३ को लन्दनके हाई हालबार्नकी इलफोर्ड चित्रशालामें इनका प्रदर्शन भी हुआ था। इस चित्र-प्रदर्शिनीका उद्घाटन कर्नल ब्रेकरने किया था।

इन चित्रोंके कारण हिमालयके वर्त्तमान मान-चित्रमें अनेक महत्व-पूर्ण परिवर्तन होंगे। एक बिलकुल ही नया नकशा तैयार हो जायगा। इस नकशेकी तैयारी और निर्माणके लिए एक बिलकुल नई और निराली मेशीन व्यवहारमें लाई जा रही है। यह मेशीन चित्रोंकी सहायतासे स्वयं नकशा तैयार करती जाती है।

इन चित्रोंसे मालूम होता है कि २०,००० फीटकी ऊँचाईतक तो निर्मल आकाश नीला दिखलाई देता है। उसके ऊपर जानेपर वह श्याम रंगका होता जाता है। सम्भव है कि बहुत ज़्यादा ऊँचा उठनेपर आकाश और अधिक श्याम मालूम हो। यह भी सम्भव है कि काफी ऊँचा उड़नेपर मध्याह्नके समय भी आकाश अर्ध रात्रिके समान श्याम मालूम हो। आकाशसम्बन्धी ऐसी ही कतिपय विचित्र और ज्ञातव्य बातें इन चित्रोंमें बहुत स्पष्ट दिखाई देती हैं।

३—दक्षिण ध्रुवकी खोजमें

सन् १९११ की बात है। केप्टेन स्काट दक्षिण ध्रुवकी खोजमें अपने दलके साथ रवाना होनेवाले थे। उन्होंने अपने दलको कई टुकड़ियोंमें बाँट लिया था। पहली टुकड़ीमें चार व्यक्ति रक्खे गये थे और दूसरीमें दस। पहलीके अध्यक्ष १९०२ की अंटार्किटिक-यात्राके अनुभवी वीर वाइस एडमिरल इवान्स और दूसरीके स्वयं केप्टेन स्काट थे। पहली टुकड़ीको आगे आगे चलकर रास्ता ढूँढ़ निकालने और सामान आदि अपने साथ ले जानेका काम सौंपा गया था।

वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्स अपने तीन साथियों बावर्स, लेशली और क्रीन्सके साथ २४ अक्टूबरको इवान्स अन्तरीपसे दक्षिणकी ओर रवाना हुए। इन लोगोंके साथ दो मोटर ट्रेक्टर, छह बर्फ़पर चलनेवाली स्लेज-गाड़ियाँ और तीन टनके लगभग खाद्य-सामग्री, खच्चरोंका खाना और पेट्रोल आदि सामान था।

उस जमानेमें मोटर और उसके इंजनका ज्ञान आजकलकी तरह बढ़ा-चढ़ा न था। उस बर्फ़ीले मैदानमें मोटरोंद्वारा यात्रा करनेमें बड़ी दिक्कत पड़ी। जगह जगह मोटर बिगड़ जाते थे। ठण्डकके मारे कभी कभी एक क़दम आगे चढ़ना भी मुश्किल हो जाता था। इंजिनोंको गरम बनाये रखनेकी कोशिशमें वे कभी कभी बहुत ज़्यादा गरम हो जाते और एक नई मुसीबतका सामान करना पड़ता। किसी तरहसे उन मोटरोंद्वारा ५५ मीलका फासला तो तय हो गया, परन्तु ५५ मीलके बाद वे दोनों बहुत ही बुरी तरह टूट

गये। लाचार होकर वे लोग मोटरोंको वहीं छोड़कर आगे बढ़े। इवान्स अन्तरीपसे रवाना होनेके पहले इन लोगोंको ८०°३०' दक्षिणी अक्षांशके पास केप्टेन स्काटकी प्रतीक्षा करनेका आदेश दिया

वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्स

गया था। मोटर वगैरह टूट जाने और रास्तेमें अन्य कठिनाइयोंके पड़नेपर भी वाइस एडमिरल इवांस अपनी टुकड़ीके साथ निश्चित स्थानपर केप्टेन स्काटसे छह दिन पहले ही पहुँच गये। मौसम खराब हो जानेके कारण स्काटको रास्तेमें रुक जाना पड़ा था।

उस बर्फ़ीले मैदानमें एक सप्ताह व्यतीत करनेका अवसर संसारमें सबसे पहले इन्हीं लोगोंको मिला था। अपना वक्त काटनेके लिए इन लोगोंने अपने पड़ावके पास बर्फ़का एक बड़ा-सा पिरामिड बनाया। इससे जो कुछ वक्त बचता था उसमें ये लोग आपसमें बातचीत करते या पुस्तकें पढ़ते और सुनते। इन लोगोंके सोनेका प्रबन्ध भी बड़ा विचित्र था। बर्फ़पर मामूली ओढ़ने और बिछौनेसे काम चल नहीं सकता। इसलिए इन लोगोंने बड़े बड़े रूएँवाले जानवरोंकी रूएँदार खालके थैले बनवाये थे। एक थैलेमें एक आदमी बखूबी आ सकता था। यह थैला ओढ़ने और बिछाने दोनोंहीका काम देता था।

२० नवम्बरतक इन्तज़ार करनेपर भी जब केप्टेन स्काट वहाँ न पहुँचे तो इवान्सकी टुकड़ीके लोग व्यग्र हो उठे। कोई विशेष काम न होनेके कारण तबियत भी ऊब गई थी। परन्तु अगले दिन सुबह पाँच बजे ही केप्टन स्काटअपने दसों साथियोंके साथ खच्चरोंपर वहाँ पहुँच गये। दो व्यक्ति कुत्तोंके दलको भी ले आये थे। खच्चरोंको साथ लानेवाले लोग बहुत थक गये थे। इवान्सकी टुकड़ीके लोगोंकी सूरतें भी देखने हीं क़ाबिल हो रही थीं। सबकी हजामत बढ़ी हुई थी। थैलोंमें सोनेके कारण रेनडीयरके (बर्फ़ीले मैदानोंमें रहनेवाले एक पशुके) छुट्टे बाल लग जानेके कारण सूरत और भी विलक्षण हो गई थी।

स्काट-दलके वहाँ पहुँच जानेपर वाइस एडमिरल इवान्सको अपनी टुकड़ीके साथ फिर सामान और रसद वगैरह लेकर आगे भेजना तय हुआ। इस बार सामान पहलेकी तरह बहुत ज़्यादा न था। सामान ले जानेके साथ ही साथ रास्तेकी नाप-जोख करना और पड़ाव

डालने योग्य स्थान ढूँढ़ना भी इसी दलका काम था। इन लोगोंके पीछे पीछे स्काटके दलके साथ आनेवाले घोड़े और कुत्ते भी रवाना किये गये।

इवान्सकी टुकड़ी एक दिनमें पन्द्रह मीलके हिसाबसे आगे बढ़ती थी। पन्द्रह मील पहुँचनेपर ये लोग ठहर जाते थे और आराम करते थे। उन बर्फ़ीले मैदानोंमें कितनी मुसीबतें झेलनी होती होंगीं इसका हम तो अनुमान भी नहीं कर सकते। आँधी और तेज़ हवा तो वहाँ बराबर चलती ही रहती थी। घोड़ोंको आँधीसे बचानेके लिए हर पड़ावपर इन लोगोंको बर्फ़की भारी भारी दीवारें खड़ी करनी पड़तीं थीं।

८१°१५ दक्षिणी अक्षांशके पास पहुँचकर जेहू नामका ख़च्चर मर गया और दो कुत्ते बिलकुल अशक्त हो गये। इसी स्थानसे दो आदमी भी उत्तरकी ओर लौट गये और अपने साथ अशक्त कुत्तोंको लेते गये। बचे हुए लोगोंने जेहूके मांसके टुकड़े कर डाले और उन्हें अपने पासके खुश्क और मसालेदार मांसके साथ मिलाकर बड़े स्वादके साथ खाया। उस दिन कुत्तोंको भी बहुत आहार मिला।

हर ६०–६५ मीलके बाद एक पड़ाव और रसद-शिविर स्थापित किया जाता था। हरेक शिविरमें वापस आनेवाले लोगोंके लिए एक एक हफ़्ते लायक़ खाद्य-सामग्री रख दी जाती थी। ८४° अक्षांश तक रास्तेमें कोई विशेष दुर्घटना न हुई और सब काम सहूलियतसे होता रहा।

उसके बाद एक ज़बरदस्त बर्फ़के तूफ़ानका मुकाबिला करना पड़ा। तूफ़ान चार दिन तक शान्त न हुआ। आँधी और बर्फ़ने नाकमें दम कर दिया। इस तूफ़ानको देखकर यात्रियोंकी सफलताकी सारी आशाएँ

विलीन हो गई। वास्तवमें स्काटको उस समय तक इतनी ज़बरदस्त मुसीबतका सामना भी न करना पड़ा था। उस वक्त स्काट 'बीअर्ड मोर ग्लेशियरसे केवल एक दिनकी दूरीपर थे। उनके साथ चौदह तन्दुरुस्त और मज़बूत आदमी, घोड़े, कुत्ते और खाने-पीनेका सब सामान था। सबके सब आगे बढ़नेके लिए जी जानसे तैय्यार थे। परन्तु उस तूफ़ानने सब कोशिशें मिट्टी कर दीं। एक क़दम आगे बढ़ना भी नामुमकिन हो गया। पाँच दिन तक लगातार यही हाल रहा। बेकारीकी हालतमें भूख भी ज़्यादा लगती थी। खाने और सोनेके सिवाय और कोई काम भी न था। तम्बुओंपर बर्फ़की तहें जम जाती थीं। बाहरसे देखनेपर वे बर्फ़के बने हुए मालूम होते थे।

पाँचवें दिन धीरे धीरे कुछ ताप-क्रम (हरारत) बढ़ा, बर्फ़ पिघलने लगी, पर तूफ़ानका वेग कम न हुआ। बर्फ़की बजाय पानी बरसने लगा। इससे कठिनाइयाँ कम होनेके बजाय बढ़ ही गईं। काई, बर्फ़ और पानीके मिल जानेके कारण वहाँ दलदल-सा बन गया और फिसलन बढ़ गई। परन्तु यात्री लोग इन सब कठिनाइयोंसे घबड़ानेवाले न थे। वे बिना अपने उद्देश्यको पूरा किये वापस न लौट सकते थे। तूफ़ान शान्त होनेके बाद जिस दिन ये लोग बढ़े उस दिन पन्द्रह घंटे लगातार चलते रहनेपर भी केवल पाँच मीलका फ़ासला ही तय किया जा सका। घोड़ोंकी बुरी हालत थी। वे बेचारे ज़रा ज़रा देर बाद पेट तक बर्फ़में धँस जाते थे। मनुष्योंकी हालत भी कुछ कम बुरी न थी। घुटनों घुटनों तक बर्फ़को झँझाकर चलना होता था। इसी बीचमें आगे बढ़नेवाली टुकड़ीकी रसद कम हो गई। घोड़ोंका खाना तो बिलकुल ही ख़त्म हो गया और

कुछ रास्ता न देखकर इवान्सने उन्हें गोलीसे मारनेका हुक्म दिया। एक एक करके सब घोड़े मार डाले गये। सबकी लाशें एक जगह जमा की गईं और उस स्थानको डेसोलेशन केम्प (Desolation camp) का नाम दिया गया।

इस घटनाके बाद दो दिन तक कुत्ते और उनके हाँकनेवाले वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्सकी टुकड़ीके साथ आगे बढ़ते रहे, पर दो दिनके बाद वे लोग भी स्लेज़-गाड़ियोंपर सामान आदि लाद कर उत्तरकी तरफ लौट गये। यहाँ स्काटने सब लोगोंको तीन हिस्सोंमें बाँटा। हरेक टुकड़ीमें चार चार आदमी रक्खे गये। सामानके भी हिस्से कर दिये गये। हरेक आदमीको लगभग दो मन सामान खींचकर साथ ले जानेके लिए दिया गया। इस सामानको लेकर सब लोग बीअर्ड मोर ग्लेशियर तक पहुँच गये। यह ग्लेशियर १५० मीलके लगभग लम्बा है और शायद संसारमें सबसे बड़ा ग्लेशियर है। इस ग्लेशियरका बर्फ़ बहुत ज़्यादा मुलायम था, इसलिए शुरू शुरूमें आगे बढ़नेमें बहुत दिक्क़त हुई, लेकिन जैसे जैसे आगे बढ़ते गये बर्फ़ ज़्यादा ज़्यादा सख़्त होता गया और १५ दिसम्बर तक फिर एक दिनमें पन्द्रह मीलकी रफ्तारसे आगे बढ़ना सम्भव हो गया। ग्लेशियरके अध-बीचमें एक पड़ाव डाला गया। बोझा कम हो जाने और रास्तेकी हालत सुधर जानेके कारण अब और अधिक तेज़ीसे आगे बढ़ा जाने लगा। एक दिनमें बीस मीलका फासला सहूलियतसे तय कर लिया जाता था। ग्लेशियरके किनारोंपर डोले राईट और कोल ग्रेनाइट पत्थरोंकी गोट-सी लगी हुई थी। बीच बीचमें इनपर भी बर्फ़ जमा हुआ मिलता था। बहुत दूर तक बराबर बर्फ़ ही बर्फ़ जमा हुआ

मिलता था। बहुत दूर तक बराबर बर्फ़ ही बर्फ़ पर चलते रहने और बर्फ़ ही देखते रहनेके बाद इनको देखकर तबियतको जरा तसकीन होती थी।

८५° अक्षांशमें सब लोग ग्लेशियरकी चोटीपर पहुँच गये। इस ग्लेशियरके आगे बर्फ़का एक झरना था। इसके कारण भीतरी पठार (प्लेटो) में जानेकी सड़क बहुत ही ज्यादा ढालू हो गई थी। २१ दिसम्बरको कड़ी मेहनतके बाद ८,००० फीटकी ऊँचाईपर एक पड़ाव कायम किया गया। इस पड़ावके पास फिसलन बहुत ज्यादा थी। वाइस एडमिरल इवान्स और डा० एटकिन्सन बुरी तरहसे गिर पड़े।

अगले दिन तीसरी सहायक टुकड़ी, जिसमें डा० एटकिन्सन, चार्ल्स राइट, शेरी-गेरार्ड और क्यूहेन शामिल थे, वान्स अन्तरीपको लौट गई। वहाँ पहुँचनेपर इस टुकड़ीने कुल मिलाकर ११६८ मीलकी यात्रा पूरी की।

अब केवल दो टुकड़ियाँ और बाकी थीं। इनमें एकके अध्यक्ष केप्टेन स्काट थे, और दूसरीके वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्स। स्काटकी टुकड़ीमें विलसन, ओट्स और सीमैन इवान्स थे और दूसरीमें बावर्स, लेशली और क्रीन्स। इन लोगोंको यात्रा पूरी करनी थी। बीअर्ड-मोर ग्लेशियरसे एडवर्ड सप्तम प्लेटो तक और वहाँसे ध्रुव तक पहुँचना था। इस बार प्रत्येकको दो मनसे कुछ अधिक,—१९० पौंड सामान खींचना पड़ा।

रास्तेमें पड़नेवाले बर्फ़ीले झरनेको एक ओर छोड़कर ये लोग दक्षिण-पश्चिमकी ओर आगे बढ़े। दिनके अवसरपर दोपहर तक तो

मजेमें आगे बढ़ते गये लेकिन दोपहरको बर्फ़ एकाएक पैरोंके नीचेसे खिसक गई और इवान्सकी टुकड़ीके मि० लेशली एक बड़ी-सी दरारमें सिरसे पैर तक फँस गये। लेशलीको बाहर निकालनेमें बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ीं। वे बीस फीट नीचे पहुँच गये थे। लेकिन रस्से वगैरह डालकर उन्हें किसी तरह बाहर निकाल लिया गया।

उस दिन फिर कोई दुर्घटना नहीं हुई और सत्रह मीलका फासला तय हो गया। बड़े दिनका त्यौहार होनेकी वजहसे उस दिन और दिनोंके मुकाबिले भोजन भी कुछ अधिक और बढ़िया किया गया। बढ़िया बिस्कुट और पेमिकन, घोड़ेका गोश्त, चाकलेट और मेवा मक्खन वगैरह खूब खाये गये। रसदकी देख-रेख करनेवाले मि० बावरने उस दिनके लिए खास तौरपर कुछ मिठाइयाँ पहलेहीसे अपने मोज़ोंमें छिपाकर रख ली थीं।

बड़े दिनके बाद कई रोज तक सब लोग खूब मज़े मज़ेमें आगे बढ़ते गये। बर्फ़ीले पठारपर चलनेमें पहले जैसी मुसीबतें न झेलनी पड़ीं। सर्दी बहुत ज़्यादा थी। हवा भी तीरकी तरह लगती थी। साँस तक दाढ़ीपर जम जाती थी। स्काटके पास दोहरा तंबू था। स्काट और उसके दलके लोग उसीमें रहते थे। दोहरा होनेकी वजहसे उसमें सरदी कुछ कम मालूम होती थी। इवान्स और उनके साथियोंने एकहरा तम्बू इस्तेमाल करना पसंद किया था।

खानेके लिए हरेक आदमीको दिन-भरमें एक सेर भोजन मिलता था। इसमें आधा सेर बिस्कुट, डेढ़ पावके करीब गोश्त, थोड़ा मक्खन, चाय, कोको और चाकलेट होते थे। कभी कभी गोश्तमें मेवा मसाला वगैरह भी मिला दिया जाता था।

स्काटका तम्बू, बाँस और फर्शका बिछौना मिलाकर वजनमें केवल १८ पौंड था। उसे स्काटने खास तौरपर तैयार करवाया था। वह हल्का होनेके साथ ही आराम देनेवाला भी था। सोनेके थैलोंको दिनमें बैठनेके काममें लाया जाता था। भोजन आदि भी इसी तम्बूके बीचमें पकाया जाता था।

१ जनवरी १९१२ की शामको भोजन और रसद वगैरहका आखिरी पड़ाव ८७° अक्षांशके पास स्थापित किया गया। इस पड़ावको 'थ्री डिग्री डिपो' (Three degree Depot) नाम दिया गया। यहाँसे ध्रुव केवल तीन डिग्रीकी दूरीपर रह गया था। इस पड़ावसे आगे बढ़नेके लिए बोझा और भी कम हो गया।

इस पड़ावपर यात्री लोग १०,००० फीटसे अधिक ऊँची जगहपर पहुँच गये थे। टेम्परेचर शून्यसे २० डिग्री नीचे पहुँच गया था। हवा बहुत ही तेज़ थी और काटनेको दौड़ती थी। कुतुबनुमाकी सुई ठीक दक्षिणकी तरफ इशारा करने लगी थी। यद्यपि बोझा १९० पौंडसे घटकर केवल १३० पौंड प्रति व्यक्ति रह गया था, फिर भी अब उतनी तेज़ीसे आगे न बढ़ा जा सकता था। सब लोग थकावट महसूस करने लगे थे।

३ जनवरीको केप्टेन स्काटने इवान्सके दलसे लेफ्टिनेंट बावर्सको अपनी टुकड़ीमें और शामिल कर लिया और चारों साथियोंको लेकर ध्रुवकी ओर बढ़नेकी इच्छा प्रकट की। जाते समय उन्होंने इवांससे यह साफ कह दिया कि वे ध्रुव तक पहुँच तो जायँगे पर वापस आ सकेंगे या नहीं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। सब लोगोंका ध्रुव तक जाना सम्भव भी न था। बहुत थोड़ा भोजन बाकी रह गया

था और उससे सब यात्रियोंकी ज़रूरतें पूरी न हो सकती थीं। इस बातसे इवान्स और उनके दूसरे साथियोंको बड़ी निराशा हुई परन्तु मजबूरी थी।

४ जनवरीको वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्स और उनके दोनों साथी चार दिनके लायक रसद अपने साथ लेकर वापस लौट पड़े। बाकी रसद स्काटके दलको सौंप दी गई। एक साथी कम हो जानेकी वजहसे इवान्सको वापस लौटनेमें भी काफ़ी तकलीफ हुई। परन्तु उस समय उन्हें अपनी तकलीफकी परवाह भी न थी। स्काटको सफलता-पूर्वक ध्रुवतक पहुँच जाना चाहिए, सभी यही कामना कर रहे थे। इस कार्यकी सफलतामें चाहे कितनी ही मुसीबतें क्यों न बर्दाश्त करनी पड़ें, इसकी किसीको परवाह न थी। वापसीमें इवान्सको फिर फिर बर्फ़ीले तूफ़ानका सामना करना पड़ा।

जिस समय स्काट इवान्ससे बिदा होकर ध्रुवकी ओर बढ़े थे, उन्हें ध्रुव तक पहुँचनेके लिए १४४ मीलका फासला और तय करना था। परन्तु स्काटके वहाँ पहुँचनेके पूर्व नार्वेवाले यात्री उधरसे आगे बढ़ चुके थे। वे लोग भी उन्हीं दिनों दक्षिण ध्रुवकी खोजमें निकले थे। स्काटको रास्तेमें उन लोगोंकी स्लेज-गाड़ियों और कुत्तों आदिके जानेके चिह्न मिले थे। स्काटके दलने इन्हीं पथ-चिह्नोंका अनुसरण किया और स्काट १९१२ को दक्षिणी ध्रुव पहुँच गये। उस दिन बलाकी सरदी थी। टेम्परेचर शून्यसे बहुत नीचे पहुँच गया था। नार्वेके अमंडसन-दलका तम्बू वहाँ पहलेहीसे लग चुका था और उस पर नार्वेका झंडा फहरा रहा था। उस तम्बूमें एक पत्र रक्खा था। उससे स्काटको मालूम हुआ कि अमंडसन वहाँ एक महीना पहले

ही पहुँच चुका था। स्काटको इस बातसे बड़ी निराशा हुई। उन्हें संसारमें सर्व प्रथम ध्रुवतक पहुँचनेका श्रेय न प्राप्त हो सका।

दो दिन तक वहाँ ठहरकर स्काट अपने चारों साथियोंके साथ लौट पड़े। बेस केम्पतक पहुँचनेके लिए उन्हें ९०० मीलकी मंज़िल तय करनी थी। शुरूमें अच्छी तरह आगे बढ़ते रहे। बर्फ़ीले पठारों तक अच्छी तरह वापस आ गये। परन्तु उसके बाद हवा और बर्फ़के मारे शरीर बिलकुल अशक्त-से हो गये और आगे बढ़ना बहुत कठिन हो गया। पैटी आफिसर सीमैन इवान्स जो उस टुकड़ीमें बहुत ही मज़बूत और तगड़ा समझा जाता था सबसे ज्यादा अशक्त हो गया। बीअर्ड मोर ग्लेशियरके पास पहुँचनेपर मौसम बहुत ख़राब हो गया। वहाँ पहुँचते पहुँचते बेचारे इवान्सकी हालत बहुत ख़राब हो गई और वह चक्कर खाकर सिरके बल बर्फ़की एक मजबूत-सी चट्टानपर गिर पड़ा। सिरमें बड़ी चोट आई। उस दिनसे स्काट इवान्सके बारेमें चिन्तित हो गये। स्वयं स्काटका दिल भी बहुत कमज़ोर पड़ गया और वे अन्य साथियोंकी तरह तेज़ीसे आगे न बढ़ पाये।

स्थिति बहुत गम्भीर होती जा रही थी। मौसमकी हालत भी बहुत खराब होती जा रही थी। फरवरीमें बेचारे सीमैन इवान्सकी मृत्यु हो गई। डा० विलसनका कहना था कि इवान्सको सिरके बल गिरनेकी वजहसे घातक चोट लगी थी। इवान्सको 'डेसोलेशन केम्प' के पास दफना दिया गया। ध्रुवकी तरफ जाते समय इस केम्पके पास चारा खतम हो जानेकी वजहसे सबके सब घोड़े गोलीसे मार दिये गये थे। इवान्सकी मृत्युके बाद आगे बढ़ना और भी कठिन हो गया। दिनमें चार मीलका फासला मुश्किलसे तय होता था। रसद

नित्य प्रति कम होती जा रही थी। इससे स्काट और उनके साथियोंकी चिन्ता भी बराबर बढ़ती जाती थी। १५ मील प्रति दिनकी रफ्तारसे फ़ासला तय करनेपर कहीं जाकर रसद पूरी हो सकती थी! पर एक दिनमें १५ मील तो बहुत दूर, १५ मीलकी दूरी तय करनेमें कभी कभी तीन चार दिन लग जाते थे।

इवान्सके बाद केप्टेन ओट्सका नम्बर आया। केप्टेन ओट्स स्काटके दलमें अकेला सैनिक था। सबसे पहले उसके हाथ और पैर गलने लगे। वह अपने साथियोंसे बराबर इससे बचनेकी सलाह पूछता। पर उस वक्त सलाह-मश्विरा क्या काम कर सकता था! वह यह अच्छी तरह समझ गया था कि उसका बेस केम्पतक जीवित लौटना असम्भव-सा है। इधर खानेका सामान भी रोज़-ब-रोज़ कम होता जा रहा था और सबको भर-पेट भोजन मिलना भी कठिन हो रहा था। उधर ओट्स अपने जीवनसे सर्वथा निराश हो चुका था। आख़िर उसने अपने साथियोंकी प्राण-रक्षाके लिए अपने प्राण गवाँ देना तय किया। १७ मार्चको अपने जन्म-दिवसके अवसरपर एक बिकट बर्फ़ीले तूफ़ानमें वह अपने सब साथियोंके लिए ठीक रास्ता ढूँढ़नेके लिए जान-बूझकर आगे बढ़ा चला गया और फिर कभी लौटकर नहीं आया। इस सम्बन्धमें केप्टेन स्काटने अपनी डायरीमें लिखा था, "ओट्सने एक वीर और साहसी पुरुषका काम किया है। हम सब भी उसी वीरता और साहसके साथ अपने अन्तिम समयकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अन्त बहुत दूर है भी नहीं।"

चार दिन तक स्काट, विलसन और बावर कठिनाइयोंसे युद्ध करते

और दिक्कतोंका सामना करते हुए आगे बढ़ते रहे। इस बीचमें वे लोग मुश्किलसे २० मील फ़सला तय कर पाये होंगे। चार दिनके बाद बर्फ़के तूफ़ानने उन्हें पड़ाव डालनेके लिए मजबूर कर दिया। यह तूफ़ान नौ दिन तक शान्त न हुआ। उस जगहसे उनका आख़िरी पड़ाव केवल ११ मीलकी दूरीपर रह गया था। वहाँ पूरे छह सप्ताहकी रसद मौजूद थी। परन्तु तूफ़ानने स्काट और उनके दोनों साथियोंका आगे बढ़ना असम्भव कर दिया और उन्हें चिरकालके लिए वहींपर विश्राम करनेको विवश कर दिया। आठ महीनेके बाद उनका तम्बू और उनके मृत शरीर बर्फ़में दबे हुए पाये गये थे।

इधर वाइस एडमिरल जी० आर० इवान्सकी टुकड़ीको भी कुछ कम कठिनाइयोंका सामना नहीं करना पड़ा। पहले तो इवान्सके दलके सभी व्यक्तियोंने अपने एक साथीके कम हो जानेके कारण बहुत कठिनाइयाँ अनुभव कीं, परन्तु बादमें वे उनके आदी हो गये। इस टुकड़ीके पास भी भोजन बहुत गिना-चुना था। बेस केम्प तक पहुँचनेके लिए इन लोगोंको प्रति दिन १७ मीलकी यात्रा करनी पड़ी। इससे कम चलनेमें खाद्य-सामग्री पूरी न पड़ सकती थी। बीअर्ड मोर ग्लेशियर तक ये लोग इसी रफ्तारसे चलते रहे। रास्तेमें मिट्टी या जल कहीं कुछ नहीं। जहाँतक दृष्टि दौड़ाइए, वृक्षहीन, लताहीन, शुभ्र धवल हिममय प्रदेशके सिवा और कुछ देख ही नहीं पड़ता था। बर्फ़की चादर-सी बिछी हुई थी। हवा भी बर्फ़-सी ठण्डी और आँधी भी बर्फ़के कणोंकी। दो रोज़ ज़बरदस्त आँधी चलती रही, इससे यात्रियोंको और भी अधिक मुसीबतें उठानी पड़ीं। आँधीके कारण एक एक क़दम आगे बढ़ना कठिन हो गया। कभी कभी

तो आँधी इतना बिकट रूप धारण कर लेती थी कि यात्रियोंको देखना-सुनना तक असम्भव हो जाता था। यात्री लोग ऐसी पोशाक पहने थे जिसपर हवाकी तेज़ीका कोई असर न हो सकता था। फिर भी यात्रियोंके चेहरे फटकर लहू-लुहान हो गये थे। कभी कभी यात्रियोंको ऐसा जान पड़ता था मानो हज़ारों सुइयाँ एक साथ उनके गालोंमें चुभो दी गई हों। परन्तु फिर भी इस दलपर परमात्माकी कृपादृष्टि थी। जब कभी ये लोग ज़बरदस्त मुसीबतोंमें फँस जाते, इनको अपने आप इन मुसीबतोंसे छुटकारा पानेका कोई न कोई रास्ता ज़रूर मिल जाता। इसके विपरीत जब कभी स्काटकी टुकड़ी कठिनाइयोंसे निकलनेकी कोशिश भी करती तो भाग्य उसके प्रतिकूल ही रहता।

तीन दिनमें ये लोग शेकल्टन हिम-प्रपातके पास पहुँच गये। वहाँसे बीअर्ड मोर ग्लेशियरतक पहुँचनेके दो रास्ते थे। एकमें तीन दिनका समय लगता था। परन्तु रास्तेमें कोई विशेष कठिनाइयाँ न थीं। दूसरे रास्तेसे हिम-प्रतापके सहारे सैकड़ों फीटकी गहराईमें नीचे उतरकर एक ही दिनमें बीअर्डमोर ग्लेशियरतक पहुँचा जा सकता था। परन्तु इस रास्तेसे होकर जाना अपने प्राणोंकी बाज़ी लगा देना था। परन्तु तीन दिन और उनके साथ ही तीन दिनकी खाद्य-सामग्रीको बचानेके ख्यालसे यात्रियोंने बर्फ़ीले झरनेके सहारे १५०० फीटकी सीधी गहराईमें उतरकर बीअर्ड मोर ग्लेशियरतक पहुँचनेका निश्चय किया। इस रास्तेसे यात्रा करना और मृत्युको आवाहन करना एक ही बात थी। फिर भी यात्री किसी तरहसे सकुशल नीचे पहुँच गये। स्वयं यात्रियों और उनके नेता वाइस एडमिरल इवान्सको अपने कुशलतापूर्वक नीचे पहुँच जानेपर बहुत आश्चर्य हुआ। उनकी समझमें नहीं आया कि वे उस महान् विपत्तिसे कैसे बच गये।

इसके बाद दो-तीन दिनतक मौसम बहुत अच्छा रहा। यात्री हँसी-खुशी रास्ता तय करते रहे। १६ जनवरीकी शामको जिस जगह पड़ाव डाला गया वह बहुत खराब थी। वहाँसे अगले पड़ावतक पहुँचनेके लिए केवल एक दिनका रास्ता रह गया था। यात्रियोंको इसकी पूरी उम्मेद भी थी। परन्तु रातहीको मौसमकी हालत ख़राब हो गई और साराका सारा बीअर्ड मोर प्रदेश एक बर्फ़के बादलसे ढक गया। इस बर्फ़ीले बादलकी वजहसे आगेका रास्ता ढूँढ़ निकालना बिलकुल नामुमकिन हो गया। सब लोग बड़ी बिकट विपत्तिमें फँस गये। दो दिनके बाद बादल कुछ साफ हुए। रास्ता इतना ज़्यादा खराब हो गया था कि उसपर चलनेवाली गाड़ियोंको चलाना भी असम्भव हो गया और कई बार यात्रियोंको क़रीब पाँच मन भारी स्लेज गाड़ियोंको अपने कंधोंपर उठाकर ले जाना पड़ा। कई बार ऐसी हालतमें बहुत गहरी खाइयोंको बर्फ़के पुलोंसे पार किया गया। दो दिन बाद जब ये लोग अठारह अठारह घंटे रोज चलकर अगले पड़ावपर पहुँचे तो इतने ज्यादा थक गये थे कि मारे थकावटके मुँहसे बोलना भी दूभर हो गया था। यहाँसे आगे बढ़नेपर बर्फ़की चकाचौंधके कारण कई बार यात्रियोंकी आँखें बहुत ज्यादा ख़राब हो गईं और कभी कभी तो वे दो दो दिनतक कुछ भी न देख पाते थे। इधर वाइस एडमिरल इवान्सकी हालत भी रोज़-ब-रोज़ खराब होने लगी और वे एक भयंकर रोगके शिकार हो गये। एक रोज़ तो वे चलते चलते बेहोश हो गये। होशमें आनेपर उन्होंने अपने साथियोंसे उन्हें थोड़ेसे भोजनके साथ वहीं छोड़कर आगे बढ़नेका अनुरोध किया। इस स्थानसे हिमाच्छादित 'एरबस' ज्वालामुखी पर्वत बहुत

नज़दीक रह गया था और बेस केम्पतक पहुँचनेमें दो-चार दिनसे अधिक समय लगनेकी सम्भावना न थी। जी० आर० इवान्सके लिए एक क़दम भी आगे बढ़ना असम्भव था। वे अपने जीवनसे निराश हो गये थे। लाचार होकर उन्होंने अपने दोनों साथियों लेशली और क्रीनसे उन्हें छोड़कर आगे बढ़नेका अनुरोध किया। पर उन दोनोंने इसे किसी भी तरहसे मंजूर न किया। दोनोंने मिलकर इवान्सको सोनेके थैलेमें लिटा दिया और स्लेज-गाड़ीमें बाँध दिया और कई दिन लगातार इवान्सको अपने आप खींचकर आगे ले गये। जिस स्थानपर दक्षिणकी ओर बढ़नेपर यात्रियोंने अपनी मोटर-स्लेज छोड़ दी थी वहाँतक तो लेशली और क्रीन किसी तरहसे इवान्सको खींच ले गये परन्तु उसके बाद वे स्वयं बहुत अशक्त हो गये। लगातार १५०० मीलतक चलते रहनेकी वजहसे उनकी थकावट बहुत बढ़ गई थी। मोटर-स्लेजवाले पड़ावसे गाड़ी खींचकर आगे बढ़ना असम्भव हो गया। परन्तु फिर भी वे इवान्सको छोड़कर आगे बढ़नेको तैयार न हुए। यहाँसे 'हट' नामक पड़ाव ३५ मीलकी दूरीपर था। वहाँ यात्रियोंको कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी। लेशली और क्रीनने आपसमें तय किया कि लेशली तो इवान्सकी देख-भालके लिए वहीं रह जाय और क्रीन सब सामानको स्लेजपर लादकर 'हट' पड़ावतक खींच ले जाय। हट पड़ावका रास्ता बहुत ज़्यादा ख़राब हो रहा था। फिर भी अपने दोनों साथियोंकी प्राण-रक्षाके लिए क्रीनने अकेले ही आगे बढ़ना तय किया। अट्ठारह घंटे लगातार चलनेके बाद वह हट पड़ाव तक पहुँच गया। जिस समय वह वहाँ पहुँचा था उसकी हालत बहुत ख़राब

हो रही थी। पड़ावतक पहुँचते पहुँचते वह पड़ावमें मौजूद डा० एटकिन्सनकी गोदमें बेहोश होकर गिर पड़ा। डा० एटकिन्सन और कुत्ते हाँकनेवाले डिमट्री इसी पड़ावमें छोड़ दिये गये थे। इन लोगोंके साथ स्लेज खींचनेवाले कुत्तोंके दो दल भी थे। क्रीनने स्वस्थ होकर डा० एटकिन्सनको वाइस एडमिरल इवान्स और लेशलीका हाल बतलाया। फौरन ही सहायताका प्रबन्ध किया गया और कुत्ते-गाड़ियोंको इवान्सकी रक्षाके लिए दौड़ा दिया गया। ठीक समयपर सहायता पहुँच जानेसे दोनों व्यक्तियोंके प्राण बचा लिये गये। लेशली और क्रीनको उनके साहस, त्याग और वीरत्वके लिए सम्राटने 'अलबर्ट-पदक' प्रदान किया।

कैप्टेन स्काट और वाइस एडमिरल इवान्सके अतिरिक्त और भी अनेकों साहसी ज्ञान-वीर दक्षिणी ध्रुवकी खोजमें अपनी जानोंको जोखिममें डाल चुके हैं। इनमें जेम्स कुक, कैप्टेन रौश, कैप्टेन लासेन, एमण्डसन और अमेरिकाके एडमिरल बायर्ड आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्हीं वीरोंकी यात्राओंके फल-स्वरूप दक्षिण ध्रुवके बारेमें हमें बहुत कुछ मालूम हो सका है। इन ज्ञान-वीरोंके साहस और जीवटकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है।

एडमिरल बायर्डने १९२८ में प्रथम बार वायुयानद्वारा दक्षिण-ध्रुवकी यात्रा की थी। इस यात्रामें इन्होंने पूर्वाविष्कृत स्थानोंसे और भी १५०० मील दूर दक्षिणमें अमेरिकाका झण्डा आरोपित किया था। इस यात्रामें एडमिरल बायर्ड और उनके साथी चौदह महीने तक दक्षिण ध्रुव-प्रदेशमें रहे थे। जिस स्थानपर इन्होंने डेरा डाला था, उसका नाम रखा गया था 'लिटिल अमेरिका'। चार वर्षके बाद

अपने उस वास-स्थानकी अवस्था जाननेके लिए इन ज्ञानान्वेषी दुस्साहसिक यात्रियोंके मनमें फिर कुतूहल उत्पन्न हुआ। अपने इस कुतूहलकी निवृत्तिके लिए एडमिरल बायर्डके नेतृत्वमें दूसरी बार फिर एक यात्री-दल १२ अक्टूबर १९३३ को बोस्टन नगरसे दो जहाजों 'रूपर्ट' और 'बेअर आफ आकलैण्ड' पर रवाना हुआ। इस दलमें एडमिरल बायर्ड, चार्ल्स मर्फी, जार्ज बेविल, विलियम हाईनेस

एडमिरल बायर्ड

और कार्ल पिटरसन थे। इनमें बायर्ड, पिटरसन और हाईनेस पिछले अभियानमें भी थे। १९ दिसम्बरको यह दल मेरु-मण्डलके सीमा-

प्रान्तपर पहुँचा। पूर्व-निर्मित वास-केन्द्र चारों ओर बर्फ़से इस प्रकार घिर गया था कि कहीं कुछ भी दृष्टि-गोचर नहीं होता था। बहुत पता लगानेपर जब बर्फ़के ढेरोंके बीच पूर्वनिर्मित गृहका कुछ चिह्न दिखाई पड़ा, तो अनुमानसे यात्रीगण उस गृहके प्रवेश-द्वारपर उपस्थित हुए। बर्फ़का ढेर हटाकर जब दरवाज़ा खोला गया, तब यह देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि पहलेकी यात्रामें जो जो वस्तुएँ जहाँ और जिस प्रकार रक्खी गई थीं वे सब ठीक वहीं और उसी प्रकार रक्खी हुई हैं। यहाँ तक कि खाद्य पदार्थोंमें भी कोई रूपान्तर नहीं हुआ है; केवल वे जमकर कठोर हो गये हैं। चार वर्ष पहलेका तैयार किया हुआ खाद्य पदार्थ फिर गर्म करके खानेके काममें लाया गया। इस बारकी यात्रामें यात्री-दलने ध्रुव-प्रदेशमें बारह महीनेसे अधिक समय बिताया और इस बीचमें भूगोल, भूतत्त्व, प्राणितत्त्व, समुद्रतत्त्व, जीवविद्या, शरीरविद्या, उद्भिद्‌तत्त्व आदिके सम्बन्धमें बहुतसे प्रयोजनीय वैज्ञानिक तथ्योंका संग्रह किया।

ध्रुव-प्रदेशके सीमाप्रान्तपर पहुँचते ही तुषार-पर्वत (Iceberg) देखे जाने लगे। कुछ घंटोंके अन्दर ही यात्रियोंको आठ सौ तुषार-पर्वत दृष्टिगोचर हुए। यहाँसे आगे बढ़नेपर ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँ एक विपुल तुषार-पर्वत उनका मार्ग अवरुद्ध किये हुए था। यहाँसे भी आगे बढ़नेपर इनका 'रूपर्ट' जहाज़ ऐसे स्थानपर पहुँचा जहाँसे आगेकी यात्रा निरापद न समझी गई। इसलिए जहाज़द्वारा यात्रा स्थगित कर दी गई और एडमिरल बायर्ड अपने कई चुने हुए साथियोंको लेकर वायुयानद्वारा आगे बढ़े। इस यात्रामें ये लोग २१४ मील तक वायुयानपर उड़े। इतनी दूर जानेपर भी जब

किसी भू-भागका पता न लगा तो फिर ये पूर्वकी ओर जहाज़द्वारा रवाना हुए। क्रमशः तुषार-पर्वतोंकी संख्या बढ़ने लगी और इस विपद्-संकुल मार्गमें बर्फ़के पहाड़ोंसे टकराकर चूर्ण-विचूर्ण होनेकी आशंका क्षण-क्षणमें होने लगी। अब जहाज़ जिस तुषारावृत्त जल-पथसे होकर जा रहा था वह बहुत विशाल था। इस स्थानको पार करके यात्री-दल जिस प्रदेशमें पहुँचा वहाँ बर्फके पहाड़ोंकी प्रबलता सबसे अधिक थी। इस स्थानका नाम यात्रियोंने 'शैतानोंकी कब्र' रक्खा। यहाँ लगातार कई दिनों तक सूर्यका दर्शन नहीं हुआ। २४ घंटेमें ८,००० से अधिक तुषार-पर्वत जहाज़के पाससे होकर गुज़रे थे। चारों ओर घना और अन्धकारपूर्ण कुहासा छाया हुआ था। तुषार-पर्वत चारों ओर तैर रहे थे। दस हाथकी दूरीपरकी वस्तु भी अच्छी तरहसे न देख पड़ती थी। प्रबल झंझावात रह-रहकर भीम गर्जन कर रहा था। इन कठिन परिस्थितियोंमें यात्रियोंने लगभग १,००० मीलकी यात्रा की।

यहाँसे फिर वायुयानोंद्वारा यात्रा शुरू हुई। वायुयानका मार्ग भी जहाज़के मार्गके समान ही अत्यन्त दुर्गम था। कुहासेके कारण चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था और इस कुहासेके बीचसे होकर जहाज बहुत नीचेकी सतहमें उड़ रहा था। इस तरह नीचे उड़नेके कारण एक बार वायुयान एक तुषार-पर्वतसे टकराते टकराते बच गया। वायुयानकी सहायतासे एडमिरल बायर्ड और उनके साथी ५०० मील तक वायुमण्डलमें प्रवेश करके बहुतसे तथ्योंका पता लगानेमें समर्थ हुए। उनके एक साथी लिङ्कन एक दूसरे वायुयानपर सवार होकर जलवायुके बारेमें अनुसन्धान कर रहे थे, किन्तु एक

आकस्मिक दुर्घटनाके कारण उनका वायुयान ख़राब हो गया और उन्हें विवश होकर अमेरिका लौट जाना पड़ा।

बायर्डका आकाश-पर्यटन शेष होनेपर उनका जहाज़ 'रूपर्ट' फिर 'लिटिल अमेरिका'की ओर चला। 'लिटिल अमेरिका' पहुँचकर यात्रियोंने जहाज़ बदल दिया और वे दूसरे जहाज़ 'बीअर आफ आकलैण्ड' पर सन्धान-कार्यके लिए रवाना हुए। लिटिल अमेरिकामें जो वास-केन्द्र बनाया गया था, वहाँतक जहाज़से सामान पहुँचाना सम्भव न था। इसलिए वायुयानकी सहायतासे वहाँतक सामान पहुँचानेकी व्यवस्था की गई। यन्त्रों और दूसरी ज़रूरी चीज़ोंको जहाज़से कैम्पतक पहुँचानेमें वायुयानको छब्बीस बार आवागमन करना पड़ा।

वैज्ञानिक अनुसन्धानके लिए आवश्यक यंत्रादि भी लिटिल अमेरिकाके इसी पड़ावमें स्थापित किये गये। बिजलीकी शक्ति और ताप प्राप्त करनेका प्रबंध किया गया। टेलिफोन, रसायनशाला, वैज्ञानिक गवेषणागृह, जलवायु-पर्यवेक्षण-केन्द्र, रेडिओ स्टेशन, औषधालय, सब कुछ निर्मित हुए। इस प्रसंगमें पाठकोंको यह जान लेना चाहिए कि 'लिटिल अमेरिका' कोई द्वीप नहीं है। एक विराट् बहता हुआ बर्फका स्तूप-मात्र है। यात्री लोग इस पड़ावमें रहनेका प्रबन्ध कर ही रहे थे कि एक दिन 'लिटिल अमेरिका'के चारों तरफ जो हिम-खण्ड थे, वे सब फट गये। जिस बर्फ़-खण्डके ऊपर पड़ाव था वह काँप उठा और हवाके ज़ोरसे धीरे धीरे पश्चिमकी ओर चलने लगा। यह आकस्मिक घटना इस प्रकार हुई कि किसीकी बुद्धि काम न कर सकी। 'बीअर' जहाज़ फौरन यात्रियोंकी रक्षाके लिए दौड़ा, पर वह भी कुछ न कर सका। किन्तु संयोग अच्छा था, इससे कोई भीषण

घातक दुर्घटना घटित न हो पाई। सहसा ठण्डी हवा बहने लगी और लिटिल अमेरिकाका बहना रुक गया। वह फिर स्थिर हो गया। यहाँ रहकर यात्रियोंने नाना प्रकारके वैज्ञानिक नवीन तथ्योंका ज्ञान प्राप्त किया। इस पड़ावमें भी यात्रियोंको एक महीने तक सूर्यका दर्शन नहीं हुआ। २७ सितम्बरको सूर्यका दर्शन हुआ। एक बार फिर यात्रीगण वायुमार्गसे भ्रमण करने निकले। जिस समय यह यात्रा शुरू हुई आकाश मेघाच्छन्न था। लिटिल अमेरिकासे १७३ मील आगे बढ़नेपर एक ३,००० फीट ऊँचा गिरि-शृंग मिला। २७० मीलके बाद एक और ऊँचा पर्वत देख पड़ा जिसकी ऊँचाई लगभग ४,५०० फीट थी। इस पर्वतके ऊपर चढ़कर अनेक विषयोंका अनुसन्धान किया गया। सबसे बढ़कर आश्चर्यकी बात तो यह थी कि इस पर्वतके ऊपर कई लताएँ देखी गईं। वर्ष-भर तक और समय तो ये लतायें बर्फके नीचे जमी रहती हैं; किन्तु केवल कुछ दिनोंमें सूर्य-किरण पाकर ही इस प्रकार बढ़ जाती हैं कि पहाड़के ऊपर तक फैल जाती हैं। इस सुदूर दक्षिण देशमें कई प्राणियोंके कंकाल भी दृष्टिगोचर हुए।

बीच-बीचमें जलाशय भी देखे गये। प्रत्येक जलाशयका जल एक विराट् बर्फकी चादरसे ढका हुआ था। इस बर्फके बीचमें फूलोंके कुछ अंश भी देखे गये। अणुवीक्षण यंत्रद्वारा परीक्षा करनेसे मालूम हुआ कि उनके साथ कई कीटाणु भी थे जिनमें जीवनके लक्षण पाये गये। तापमानमें शून्यके नीचे ७० डिगरीकी शीतलतामें भी ये क्षुद्र प्राणी जीवित थे। नाना विषयोंकी गवेषणा करके अभियानकारी दल ७७ दिनोंके बाद लिटिल अमेरिका लौट आया।

लिटिल अमेरिकासे और भी कई बार इन लोगोंने विभिन्न दिशाओंकी यात्रा की। १० मई १९३४ को एडमिरल बायर्ड और उनके साथी अमेरिका वापस पहुँचे। इस बार भी यात्रियोंको अनेकों कष्टोंका सामना करना पड़ा था। कभी उनका पड़ाव तुषार-स्रोतमें पड़कर बह जाता था, कभी वायुयान टूटकर चकनाचूर हो जाता था, कभी वायुयानको कुहासेके बीचसे होकर विपद्-संकुल मार्गमें उड़ना पड़ता था। कभी किसी पर्वतके साथ टकराते टकराते वह किसी प्रकार बच जाता था और कभी आँखोंके सामने ही बर्फ़का स्तूप गलकर पानी हो जाता था किन्तु, इन सब कष्टों और विपत्तियोंसे अणुमात्र भी विचलित न होकर ये ज्ञान-वीर अपनी ज्ञान-साधनासे कभी विरक्त न हुए।

४-विज्ञानकी वेदीपर

विज्ञानके बलसे आज पाश्चात्य देश संसारपर शासन कर रहे हैं। विज्ञानके प्रसाद-स्वरूप संसारके कला-कौशल्य और शिल्पकी अभूत-पूर्व उन्नति हुई है। सभ्य संसारकी तो काया ही पलट गई है। दुनिया अधिक संगठित होती जा रही है। आज एक देशके एक कोनेमें बैठकर सारे जगतकी घटनाएँ सहज ही मालूम हो जाती हैं। यांत्रिक साधनोंसे एक स्थानसे दूसरे स्थानतक जानेमें कोई कठिनाई नहीं होती। इसी विज्ञानके बलपर आज इंग्लैण्ड हमपर शासन कर रहा है और इसीकी अवहेलनासे हम इस अधोगतिको प्राप्त हुए हैं। परन्तु विज्ञानकी उन्नतिका मार्ग पुष्पोंसे आच्छादित नहीं है। विज्ञानकी बलि-वेदीपर अपने सपूतोंको निछावर कर देनेकी तत्परताने ही आज पश्चिमको पश्चिम बना रक्खा है। विज्ञानके लिए पाश्चात्य जगतमें अनेकों विज्ञान-भक्त अपने प्राणोंकी भेंट चढ़ा चुके हैं। इसी विज्ञानके लिए सुकरातको विष देकर मारा गया। इसी विज्ञानके लिए गेलिलियोको देश-निकाला हुआ। इसीके लिए यूरोपके अनेक विद्वानोंको भाँति भाँतिके कष्ट और तरह तरहकी यातनाएँ दी गईं। इस अध्यायमें हम पाठकोंको इन्हीं वैज्ञानिकोंकी अमर गाथाओंका संक्षिप्त परिचय देंगे।

विज्ञानकी उन्नतिके लिए और मनुष्य-समाजके कल्याणके लिए अनेक वैज्ञानिकोंने जीवन-भर वैज्ञानिक शोध और अन्वेषणोंमें बितानेके बाद अन्तमें हँसते हँसते अपने प्राण भी अर्पित कर दिये हैं। प्रत्येक

महत्त्वपूर्ण आविष्कार और शोधके साथ कष्ट-सहन, त्याग और आत्म-बलिदानकी अमर गाथा छिपी हुई है। वैज्ञानिकोंने मानव-समाजको विनाशकारी रोगों और स्वयं मृत्युसे भी बचानेके लिए अपने जीवनपर प्रयोग किये। कष्टों, यातनाओं और मृत्यु तककी अवहेलना करके इन वीरोंने जिस अपूर्व साहसका परिचय दिया है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। अनेक स्त्री-पुरुषोंने इस भाँति अपने प्राण देकर अपना नाम चिरस्मरणीय बना दिया है।

बेहोशीकी दवा

कुछ वर्ष पूर्व मैनचेस्टरके प्रतिष्ठित डाक्टर और अन्वेषक डा० सिडनी रासन विलसन अपनी प्रयोग-शालामें मरे हुए पाये गये थे। उनके मुखपर कृत्रिम चेहरा (Mask) लगा हुआ था और उनका शरीर एक मेशीनपर झुका हुआ था। इस मेशीनद्वारा गैस-मिश्रणके प्रयोग किये जाते थे। डा० विलसन बेहोशीकी दवाओंका प्रयोग किया करते थे।

बहुधा देखा जाता है कि किसी मरीज़को बेहोशीकी दवा देनेपर उसकी अनुभव करनेकी शक्ति तो विलुप्त हो जाती है, परन्तु उसकी चेतन-शक्ति बनी रहती है। डाक्टर विलसन मूर्छाकी इस निकटवर्ती अवस्थाको पूर्ण मूर्छामें परिवर्तित करनेके लिए कई वर्षोंसे बराबर प्रयोग कर रहे थे। अपने प्रयोगोंके परिणामों और उपलब्धियोंकी जाँच करनेका एकमात्र सुगम साधन स्वयं अपने ऊपर प्रयोग करना था। परन्तु, ऐसा करनेमें उन्हें अपने प्राणोंहीका विसर्जन करना पड़ा। लेकीने अपनी 'यूरोपियन सदाचारोंका इतिहास' नामक पुस्तकमें लिखा भी

है, 'सम्भवतः बेहोशीकी दवाका आविष्कार करनेवाले प्रथम वैज्ञानिकने संसारके सर्वश्रेष्ठ सात्विक दार्शनिकोंकी अपेक्षा मानव-समाजका अधिक कल्याण किया है।'

विषके प्रयोग

अनेक अन्वेषकोंने अपने ऊपर विषके प्रयोग किये हैं। न्यूयार्क-होमियोपैथिक मेडिकल कालेजके ५० विद्यार्थियोंने छह मासतक नित्य प्रति मकड़ी, मधुमक्खी और अन्य विषैले कीड़ों-पतिंगोंके विषको ग्रहण करनेके लिए अपनी अपनी सेवाएँ अर्पित की थीं। ये लोग यह जानना चाहते थे कि मनुष्य-शरीर किस कीड़ेका कितना विष बिना किसी हानिके सहन कर सकता है। सौभाग्यसे इस प्रयोगका अन्त विनाशकारी सिद्ध नहीं हुआ, वरन् इसके परिणामस्वरूप औषध-विज्ञानको कुछ महत्त्वपूर्ण बातोंका पता लग गया।

गेंग्रीन

गत महायुद्धके आरम्भिक दिनोंमें गेंग्रीन (Gangrene) नामके एक अत्यन्त कष्टदायक रोगसे सहस्रों सैनिक कालके ग्रास बन गये थे। इस दुर्दान्त रोगका शरीरके जिस भागपर भी असर हो जाता था उसकी चेतन-शक्ति विलुप्त हो जाती थी; और वह हिस्सा सुन्न होकर कभी कभी शरीरके स्वस्थ भागसे बिलकुल अलग हो जाता था। कुमारी मेरी डेविस नामक एक वेल्स युवतीने इस रोगके कीटाणुओंका प्रभाव और उसका उपचार ज्ञात करनेके लिए साहस पूर्वक जान-बूझकर अपने शरीरपर प्रयोग किये।

महायुद्धके अवसरपर अनेक वीरोंने अपने शौर्य और साहसका

परिचय दिया था किन्तु कुमारी मेरी डेविसकी हिम्मत और वीरता उन सबसे बढ़कर अपना स्थान रखती है ।

अणुवीक्षण यन्त्र

कीटाणुओंसे अनेक रोगोंकी उत्पत्ति होती है । उनमेंसे अनेक तो अत्यन्त भीषण और विनाशकारी होते हैं । सहस्रों और लाखों तरहके कीटाणुओंको हम अपनी आँखोंसे देख भी नहीं सकते । कीटाणुओंकी परीक्षाके लिए अणुवीक्षण यन्त्र (खुर्दबीन) का अविष्कार किया गया । उन दिनों आजकलकी तरह उन्नत और परिपक्व यन्त्र तैयार न हो सके थे । उच्च कोटिके वैज्ञानिकोंको भी अत्यन्त निम्न श्रेणीके यन्त्रोंसे ही काम चलाना पड़ता था । वे निम्न श्रेणीके यन्त्र ही उन दिनों अत्यन्त उच्च कोटिके समझे जाते होंगे । अस्तु, एक उच्च वैज्ञानिक सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित निम्न श्रेणीके अणुवीक्षण यन्त्रसे मधुमक्खीके शरीरके विभिन्न अंगोंकी परीक्षा कर रहे थे कि एकाएक उनकी दृष्टि विलीन हो गई और वे अन्धे हो गये !

पाचन-क्रिया

अठारहवीं शताब्दितक यूरोपमें ' पाचन-क्रिया ' के बारेमें विचित्र धारणाएँ थीं । उस समय तक लोगोंने पाचन-क्रियाके वैज्ञानिक निरूपणको स्वीकार नहीं किया था । यूरोपमें सर्वप्रथम एक साहसी इटालियनने पाचन-क्रियाकी वैज्ञानिक व्याख्या की । लोगोंने उसका विश्वास न किया । उसने स्वयं अपने अन्न-मार्गपर प्रयोग किये । कपड़ेकी छोटी छोटी थैलियोंमें रोटीके टुकड़े भरे, और वह अपने विरोधी मित्रोंके सामने उन्हें निगल गया । मित्रोंको इससे बड़ा भय लगा, और वे सशंकित हो गये । उन्हें आशंका हुई कि उसका दम घुट

जायगा और वह मर जायगा! परन्तु उनकी सब शंकाएँ निर्मूल प्रमाणित हुईं। वास्तवमें पेटमें पहुँच जानेपर थैलियोंकी रोटियाँ साधारण क्रियानुसार हज़म हो गईं। इसके बाद उस साहसी इटेलियनने एक और प्रयोग किया। उसने लकड़ीकी छोटी छोटी छिद्रित नलियोंमें मांस, हड्डियाँ और स्नायु आदि भरकर निगले। मांस हज़म हो गया। आमाशयका रस छिद्रोंद्वारा मांसतक पहुँच गया और इससे वह हज़म हो गया। अधिक कठोर हड्डियाँ आदि हज़म न हो सकीं और अधोभागद्वारा बाहर निकल गईं और वह जीवित बना रहा।

मलेरियाके विशेषज्ञ

कुछ वर्ष पूर्व लोगोंको ख्याल था कि मलेरिया बुखार विशेष जल-वायुके कारण पैदा होता है। इसीलिए बुख़ारका नाम 'मलेरिया' अर्थात् 'बुरी हवा' (Malaria=Bad air) रक्खा गया था। वैज्ञानिकों और डाक्टरोंने इस बुखारके ठीक कारण और उन्हें दूर करनेके उपाय मालूम करनेके लिए बहुतसे प्रयोग किये। वे इस निष्कर्षपर पहुँचे कि यह बुखार एक विशेष प्रकारके मच्छड़ों और कीटाणुओंके काटनेसे पैदा होता है, वायु-विशेषके प्रभावसे नहीं। जनताके मनमें एक बार जो विचार घर कर लेता है उसे दूर करना अत्यन्त कठिन कार्य होता है, भले ही वह विचार निराधार और असंगत ही क्यों न हो। ऐसे विचारोंके विपरीत यदि कोई कुछ कहता भी है तो उसका तीव्र विरोध किया जाता है। मलेरिया बुख़ार कीटाणुओंके काटनेसे उत्पन्न होता है, सर पेट्रिक मेनसन इस सिद्धान्तके कट्टर पक्षपाती थे। उन्होंने इसके लिए अनेक प्रयोग भी किये थे, और उन्हीं प्रयोगोंके परिणामस्वरूप वे इस निष्कर्षपर

पहुँचे थे; परन्तु लोगोंने उनका विश्वास नहीं किया। अपने सिद्धान्तकी पुष्टिके लिए और जनताका भ्रम दूर करनेके लिए सर पेट्रिक मेनसनने अपनी जिन्दगीको ख़तरेमें डालकर अपने शरीरको मलेरियाके मच्छरोंसे कटवाया। फलस्वरूप वे सख़्त बीमार हुए, परन्तु ईश्वरकी कृपासे उनके प्राण बच गये।

पीला बुख़ार

अमेरिकामें पीला बुख़ार (Yellow fever) बहुत कष्टदायक समझा जाता है। इसके बारेमें भी लोगोंके विचार बड़े भ्रान्तिमय थे। डा० जेसी लेज़ीर (Jessi Lazear) ने लोगोंको बतलाया कि पीला बुख़ार संक्रामक या छूतका रोग है। इसके कीटाणु एक विशेष प्रकारके मच्छरद्वारा पैदा होते हैं। लोगोंने डाक्टर महोदयकी बातपर विश्वास न किया। आख़िर उन्होंने सर्वसाधारणके सम्मुख अपने शरीरको इन मच्छरोंसे कटवाया। फलस्वरूप वे सख़्त बीमार पड़े और फिर कभी अच्छे न हो सके। जनताके भ्रमपूर्ण विचारोंको दूर करने और एक अत्यन्त भीषण रोगका ठीक ठीक निदान ढूँढ़ निकलनेके लिए उन्होंने अपने प्राणोंकी भेंट चढ़ा दी।

बहुत सम्भव है कि लोग इन वीरों और साहसी आत्माओंके बलिदानको महत्त्वकी दृष्टिसे न देखें और कहें कि उन्होंने ऐसा केवल अपने सिद्धान्तोंहीकी पुष्टिके लिए तो किया था! हमारे ऊपर क्या एहसान किया? परन्तु यह याद रखनेकी बात है कि इन्हीं वीरोंके आत्म-बलिदान, तपस्या और त्यागका परिणाम है कि अत्यन्त भीषण रोगोंके ठीक ठीक उपचार और औषधियाँ ढूँढ़ निकाली गई हैं जिनसे सहस्रों व्यक्ति असमयमें ही मृत्युका ग्रास बननेसे बच जाते हैं। इन लोगोंने

अपने त्याग और बलिदानसे मानव-समाजका अकथनीय उपकार किया है।

अमेरिकन सरकारने पीले बुखारकी जाँचके लिए एक कमीशन नियुक्त किया था। क्यूबामें इस रोगका अत्यन्त तीव्र प्रकोप हुआ करता था। यह कमीशन उन दिनों क्यूबाहीमें जाँच कर रहा था। डा० जेसी लेज़ीरकी मृत्युके बाद भी जनसाधारण तो क्या, स्वयं कमीशनके सदस्यों तकको विश्वास न हुआ कि इस रोगके लिए कीटाणु ही ज़िम्मेदार हैं। उन लोगोंने कहा कि अभी इस बातकी पुष्टिके लिए कुछ और प्रमाण चाहिए। अमेरिकन सेनाके जान आर० किसिन्जर नामक एक सैनिकने कमीशनको अपनी सेवाएँ अर्पित कीं और वह साहसपूर्वक अपने शरीरको सन्दिग्ध मच्छरोंसे कटानेके लिए तैयार हो गया। कमशिन अपनी जाँच तो पूरी करना ही चाहता था। सैनिकके ऊपर प्रयोग किया गया। तीसरे दिन पीले बुखारने उसके ऊपर अपना पूरा असर जमा लिया। कई सप्ताह तक वह साहसी और वीर सैनिक जीवन और मृत्युसे युद्ध करता रहा और अन्तमें विजयी हुआ। यद्यपि वह अच्छा हो गया, परन्तु जीवनमें फिर कभी पूर्णतया स्वस्थ न हो सका। इस वीर सैनिकके सम्बन्धमें उक्त कमीशनके अध्यक्ष डा० रीडने कहा था—

"मेरी सम्मतिमें इस वीर सैनिकने जिस चरित्र-बलका परिचय दिया है, वह अमेरिकन सेनाके इतिहासमें अपूर्व और अनुपम है।"

अन्य रोगोंके निदान और उपचार ढूँढ़नेके लिए ऐसे ही अनेक प्रयोग किये गये और बहुत-से वैज्ञानिकोंने सहर्ष कष्टों और यातनाओंको सहन किया। एक जर्मन डाक्टर राबर्ट रिमार्कने

'दाद'का उपचार ढूँढ़नेके पहले अपने शरीरमें अत्यन्त भिषण प्रकारका दाद पैदा कर लिया था।

लुई पास्तोर

पागल कुत्ते और अन्य पागल जानवरोंके काटनेके इलाजके आविष्कारसे लुई पास्तोरका नाम संसारमें अमर हो गया है। सारे संसारमें पास्तोर संस्थायें स्थापित हो गई हैं। हमारे देशमें भी कसौली-में एक ऐसी ही संस्था है। इस आविष्कारके लिए पास्तोरको अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था। लोगोंको विश्वास ही न होता

लुई पास्तोर

था कि पागल जानवर द्वारा काटे गये रोगीको उसी जानवरके खूनके कीटाणुओंके इंजेक्शनद्वारा अच्छा किया जा सकता है। पास्तोरको स्वयं अपने शरीरपर प्रयोग करनेका निश्चय करना पड़ा। परन्तु, उसी दिन सौभाग्यसे जोज़फ मीस्टर नामक एक बालक उनके पास लाया गया। उसे पागल कुत्तेने काटा था। पास्तोरने उसे अपनी पद्धतिसे इंजेक्शन लगाकर अच्छा कर दिया। इस लड़केके अच्छे हो जानेपर लोगोंको पास्तोरके आविष्कारमें विश्वास हो गया और पास्तोर स्वयं एक दारुण व्यथा सहन करनेसे बच गये।

हँसानेवाली गैस

दाँतोंके इलाजमें अक्सर मरीज़ बेहोश किये जाते हैं। इस बेहोशीके लिए नाइट्रस ऑक्साइड (Nitrous oxide) नामक एक गैस व्यवहारमें लाई जाती है। इसे लाफ़िंग गैस (Laughing gas) अर्थात् हँसानेवाली गैस भी कहते हैं। इसे सूँघनेपर नशा-सा चढ़ता है। पहले तो खूब हँसी आती है; मनुष्य पागल हो जाता है और बादमें बेहोशी आ जाती है।

अठारहवीं शताब्दि तक इस गैसके बारेमें लोगोंके बड़े विचित्र विचार थे। वैज्ञानिकों तकका विश्वास था कि इसे सूँघनेपर मनुष्य जिन्दा नहीं बच सकता। १७९७ के लगभग सर हम्फ़री डेवी गैसोंके ऊपर कुछ प्रयोग कर रहे थे। विभिन्न गैसोंके सूँघनेका मनुष्य-शरीरपर क्या क्या प्रभाव पड़ता है, यह उनका मुख्य विषय था। उन्होंने अन्य गैसोंके प्रयोग करनेके साथ ही नाइट्रस गैसपर भी प्रयोग करना तय किया। कुछ लोगोंने उनको समझाया भी कि व्यर्थ ही जान-बूझकर प्राण मत गवाँओ, पर डेवीके विचार इससे

भिन्न थे। अपने विचारोंको सत्य प्रमाणित करके गैसके बारेमें पूरी पूरी जानकारी हासिल करनेके लिए यह आवश्यक था कि वे उसे स्वयं सूँघें। आखिर उन्होंने पहले कई बार गैसको थोड़ी थोड़ी मात्रामें सूँघा और धीरे धीरे इस मात्राको बढ़ाते गये, अन्तमें एक कमरेमें गैस भर ली और उसमें जाकर खूब अच्छी तरह साँस ली। सौभाग्यसे जनताके विचार बिलकुल ग़लत साबित हुए। डेवी महोदय मरे नहीं। मरनेकी बजाय उन्होंने अनुभव किया कि गैसके सूँघनेसे एक प्रकारका तेज़ नशा-सा चढ़ जाता है और बेहोशी आ जाती है। जितनी देर गैसका प्रभाव बना रहा, वे पागलसे बने रहे और गा गा करके अपने विचारोंको व्यक्त करते रहे। इस प्रयोगसे जनताकी भ्रान्ति दूर हो गई। डेवी महोदयने और भी अनेक विषैली गैसोंपर प्रयोग किये थे।

क्लोरोफार्म

क्लोरोफार्मके नामसे पाठकगण भली भाँति परिचित होंगे। आपरेशनसे पहले मरीज़को बेहोश करनेके लिए इसका उपयोग किया जाता है। सर जेम्स सिम्पसनने सबसे पहले यह घोषित किया था कि बेहोशी लानेके लिए क्लोरोफोर्म भी इस्तैमाल किया जा सकता है। इसके गुण और दोष अच्छी तरह मालूम न होनेके कारण लोग इसके उपयोगसे अपरिचित थे। वे इसका व्यवहार करते हुए घबड़ाते थे। कोई अपने ऊपर आज़माइश करनेके लिए तैयार ही न होता था। अतः सर जेम्स सिम्पसनको स्वयं अपने ऊपर क्लोरोफार्मके प्रयोग करने पड़े। वे प्रयोग करते करते अक्सर बेहोश हो जाया करते थे। बेहोशी कभी कभी घंटों बाद दूर होती थी।

बादमें क्लोरोफार्म, ईथर और लाफिंग गैस इन तीनों ही बेहोशी

लानेवाली चीज़ोंका स्थान एथिलीन गैस (Ethelene gas) ने ले लिया। शिकागो विश्वविद्यालयके प्रो० आर्नो लकार्ट (Arno Luckhardt) और उनके एक सहकारी जे० एल० कार्टरने इसके प्रयोग किये। प्रो० लकार्टका विवाह हो चुका था, अतः उनके सहकारी कार्टरने उन्हें अपने ऊपर प्रयोग करनेसे मना किया और वह स्वयं इस संघातक गैसको सूँघते सूँघते बेहोश हो गया। तब लकार्टने और अधिक गैस सुँघाना बन्द कर दिया। एक ही मिनटके बाद कार्टर हड़बड़ाकर उठ बैठा और प्रो० लकार्टसे बोला—'आपने गैस बन्द क्यों कर दी, प्रयोग पूरा क्यों नहीं किया?' कार्टरपर गैसका असर हुआ भी और जाता भी रहा, इसका उसे पता भी न लगा था।

मक्खियाँ

लन्दनके साइंस और टेकनॉलाजी कालेजके प्रो० हेराल्ड मैक्सवेल लेफ्राये मक्खियोंको दूर करनेके लिए एक विशेष प्रकारके तेलकी भाफका प्रयोग कर रहे थे। इस तेलको वे काठका तेल (Wood Oil) कहते थे। एक दिन शामको देखा गया कि उनके ऊपर तेलकी भाफका विष चढ़ गया है और वे बेहोश पड़े हैं। उनकी बेहोशी कभी भी दूर न हो सकी, और वे उसी अवस्थामें मर गये।

हवाई जहाज़

वैज्ञानिकोंने केवल डाक्टरी और औषध-विज्ञानहीमें अनेकों यातनायें और कष्ट नहीं सहन किये हैं, विज्ञानकी प्रायः हर एक शाखामें इस प्रकारके आत्म-त्याग और बलि-दानके अनेकों उदाहरण मिलते हैं। जनसाधारणके लिए अनेक स्त्री और पुरुषोंने विज्ञानकी

बलि-वेदीपर अपने प्राण न्यौछावर करनेमें तत्परता दिखलाई है। हवाई जहाज़के आरम्भिक प्रयोगोंमें तो सैकड़ों ही वीरोंकी जानें गई हैं। उन्नीसवीं शताब्दिके अन्तमें जब आधुनिक वायुयान बनकर भी तैयार न हो पाये थे, अमेरिकाके प्रो० ओटो लिलीन्थलने हवासे भारी वायुयान बनाने और उसमें बैठकर हवामें उड़नेके प्रयत्नमें अपने प्राण उत्सर्ग कर दिये थे। लिलीन्थलके सिवाय और भी अनेक बलिदानोंके बाद कहीं वायुयान बननेकी नौबत आई थी। वायुयान बन जानेके बाद भी उसकी उपयोगिता प्रमाणित करनेके लिए वायुयानोंके आविष्कारकों एवं प्रेमियोंको भगीरथ प्रयत्न करने पड़े थे। अटलांटिक महासागरको एक ही बारमें उड़कर पार कर लेनेकी चेष्टामें फ्रांसके दो वीर युवकोंने,—कैप्टेन नगेस और कैप्टेन कोलीने, अपने प्राण गवाँ दिये। हवाई मार्गके विषयमें पूरी पूरी जानकारी हासिल करने और वायुपर विजय प्राप्त करनेके लिए इन वीरोंने अपने प्राणोंतककी परवाह न की। दोनों अपने प्रयत्नमें सफल तो न हो सके, पर उनकी सफलता उनके प्रयत्नोंहीमें अन्तर्हित है।

वायु और समुद्रपर विजय पानेके लिए और भी अनेक वीरोंने हँसते हँसते बातकी बातमें प्राण गवाँ दिये हैं। इन दोनों फ्रेंच युवकोंकी वीरतापूर्ण मृत्युके एक सप्ताहके अन्दर ही एक अज्ञात और साधारण उड़ाकेने 'स्पिरिट आफ़ सेंट लुई' नामक छोटेसे हवाई जहाजपर अकेले अटलांटिक महासागरको बिना रुके हुए पार कर लिया। जहाज चलाने और उसकी मेशीन आदिकी देख-भालके सब काम स्वयं उसने ही किये। इस उत्साही युवककी वीरता और हिम्मत कैप्टेन नगेस और कैप्टेन कोलीसे किसी भी भाँति कम नहीं

कही जा सकती। बहुत सम्भव था कि अपने पूर्व-गामियोंहीकी भाँति यह वीर युवक भी अटलांटिक महासागरको पार करनेके बजाय इस संसार-सागरहीको पार कर जाता! इस तरह इन लोगोंने अपने वीरतापूर्ण बलिदानों और आत्म-त्यागसे नई दुनिया और पुरानी दुनियामें अटूट सम्बन्ध स्थापित करनेमें सफलता प्राप्त की।

ऊर्ध्वाकाशमें

वायुपर विजय प्राप्त करनेहीसे मनुष्यको संतोष नहीं हुआ। वायुके ऊपर क्या है, वायुयानोंकी सहायतासे शुरूमें यह समस्या हल न हो सकी। परन्तु वैज्ञानिक इससे निराश नहीं हुए। उन्होंने गुब्बारेकी सहायतासे ऊर्ध्वाकाशमें जाकर स्वयं वहाँकी परिस्थितियोंका निरीक्षण करनेमें भी आगा-पीछा न किया। प्रो० पिकार्ड सर्वप्रथम १९३१ में साढ़े नौ मील ऊर्ध्वमें उड़े। उन दिनों इतना अधिक ऊँचा उड़ना साक्षात् मृत्युको आमंत्रित करनेके बराबर समझा जाता था। वहाँ पहुँचना,—पहुँचकर जीवित रहना और फिर जीवित ही पृथ्वीपर लौट आना, ये सभी बातें असम्भवसरीखी समझी जाती थीं। परन्तु पिकार्ड सरीखे साहसी वीर इन कठिनाइयोंसे तनिक भी नहीं घबड़ाये। मानव-ज्ञान-भण्डारको परिपूर्ण करनेके लिए वे अपने प्राणोंका मोह छोड़कर, अपने प्राणोंको घोर संकटमें डालकर भी प्रयत्न करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। प्रो० पिकार्डके पथ-प्रदर्शक अभियानके बाद मेजर कज़िन्स, सेटिल, प्रोकोपीप बर्नबाम, गॉड्नफ, स्टीवेंस, एण्डर्सन और केपनर आदि अनेक वैज्ञानिक ऊर्ध्वाकाश-यात्राके सफल प्रयत्न कर चुके हैं। इन प्रयत्नोंमें भी अनेक साहसी पुरुष अपने प्राणोंको उत्सर्ग कर चुके हैं। १९३४ में 'एक्सप्लोरर

प्रथम' नामक गुब्बारेकी सहायतासे उर्ध्वाकाशमें ६०,००० फीट (११ मीलके लगभग) की ऊँचाईपर अभियान करते समय घटना-वश कैप्टेन आलिवर एण्डर्सन, कैप्टेन अलबर्ट स्टीवेंस और मेजर केपनरका गुब्बारा फट गया था। उस समय ये तीनों व्यक्ति अपने जीवनसे सर्वथा निराश हो गये, परन्तु सौभाग्यसे तीनों व्यक्ति जीवित ही पृथ्वीपर लौट आये।

चन्द्रलोककी यात्रा

ऊर्ध्वाकाश-अभियानके बाद मनुष्य अब यह जाननेके लिए उत्सुक है कि उसकी इस पृथ्वीके बाहर क्या है। उसकी यह उत्सुकता कल्पनाओंसे शान्त नहीं होनेकी। वह तो स्वयं वहाँ पहुँचकर आधुनिक वैज्ञानिक रीतिसे निरीक्षण करना चाहता है। उसे ऊर्ध्वाकाशसे परे पहुँचकर चन्द्रलोक और मंगल आदि ग्रहोंकी यात्रा करना है। अभी वैज्ञानिकोंको इसमें सफलता नहीं मिल सकी है, परन्तु फिर भी, उन्होंने एक ऐसे साधनका आविष्कार ज़रूर कर लिया है जिसकी सहायतासे चन्द्रलोककी यात्राकी सम्भव मालूम होती है। वैज्ञानिकोंका यह नवीन साधन है रॉकेट। रॉकेटद्वारा चन्द्रलोककी यात्रा करनेके प्रयत्नोंमें अबतक कई एक साहसी व्यक्ति अपने प्राण उत्सर्ग कर चुके हैं। जर्मनीके एक वैज्ञानिक मेक्स वेलियरने चन्द्रलोककी यात्राके लिए तरल गैससे चलनेवाला एक रॉकिट मोटर बनाया था। परन्तु मोटरको काम लायक बनानेके पहले ही उसपर प्रयोग करते समय मेक्स वेलियरकी मृत्यु हो गई। मेक्स वेलियरहीके समान जर्मनीके एक दूसरे वैज्ञानिक फ्रिज बान ओवलने भी राकेटद्वारा वायुमण्डलमें उड़नेमें अपने प्राणोंकी आहुति दी है। इसके बाद भी दो-तीन वर्ष

पूर्व रेल होल्ड टिलिंग नामक एक और वैज्ञानिकने सफ़्फ़ ईंधनद्वारा चलनेवाला राकेट बनाया था। यह राकेट ६०० मील फी घंटेकी रफ्तारसे छह मीलकी ऊँचाई तक पहुँचा भी था। परन्तु बादमें रेल होल्डकी हनोवरके पास अपनी प्रयोगशालामें प्रयोग करते समय आकस्मिक धड़ाकेसे मृत्यु हो गई। उसके तीन सहायक थे। इनमें एक तरुणी थी। वह भी उसके साथ ही धड़ाकेसे मृत्युको प्राप्त हो गई। इस तरह चन्द्रलोकके मार्गको प्रशस्त करनेवालोंको अब तक अनेक बार हँसते हँसते अपने प्राणोंकी आहुतियाँ दे देनी पड़ी हैं।

रेडियम

कुछ वर्ष पूर्व डा० जार्ज हेरेट रेडियमके सम्बन्धमें खोज करते करते स्वर्ग सिधार गये। डा० हेरेट लेरी वोज़िर अस्पताल (Lari boisiere Hospital) के रेडियोग्राफिक विभाग (Radiographic department) के अध्यक्ष थे। रेडियमके सम्बन्धमें खोज करते करते वे रोग-ग्रसित हो गये थे। अपनी मृत्युसे पहले भी ऐसे ही कार्योंमें बहुत-से कष्ट और यातनाएँ सहन कर चुके थे। सन् १९०२ में उन्होंने एक्स-किरणों (X-Rays) पर कार्य आरम्भ किया था। इसमें उनके दाहिने हाथकी एक उँगली जल गई और उस उँगलीको उन्हें कटवा देना पड़ा। उस समय वे युद्ध-क्षेत्रमें सैनिकोंकी सेवा कर रहे थे। युद्धके बाद उनको और भी अधिक भीषण यातनाएँ सहन करनी पड़ीं। दो सालके बाद उनकी एक बाँह जाती रही, परन्तु वे फिर भी काम करते ही रहे। उनकी दशा भी बिगड़ती ही गई। मृत्युके दस मास पूर्व उन्हें महत्त्वपूर्ण सैनिक सम्मान (Cross of the Legion of Honour) से विभूषित किया गया था।

डा० हेरेटका सारा जीवन आत्म-त्याग और बलिदानके उदाहरणोंसे भरा हुआ है। उन्होंने रेडियमके अन्वेषणमें अपने प्राणोंको न्यौछावर कर दिया। रेडियमकी किरणोंसे आहत होनेपर भी उन्होंने अपनी उद्देश्य-पूर्तिसे मुख नहीं मोड़ा। बार बार आपरेशन होनेपर भी वे पीछे नहीं हटे। कहा जाता है कि उनके जितने ही आपरेशन हुए, उनका उत्साह भी उतना ही अधिक बढ़ता गया और वे मानव-समाजके कल्याणके लिए निरन्तर कार्य करते रहे। रेडियमके आविष्कारमें मेडम क्यूरीके साथ काम करते हुए उनके पति पीयरी क्यूरीकी उँगलियाँ बिलकुल गल गई थीं। क्यूरी-दम्पतिके अतिरिक्त और भी बहुतसे वैज्ञानिकोंको रेडियम-सम्बन्धी सन्धानमें शारीरिक कष्ट सहन करने पड़े हैं।

भारतीय विद्यार्थी

एक समय था जब भारतका विज्ञान-भाण्डार परिपूर्ण था, भारतमें उच्च कोटिके वैज्ञानिकोंकी कमी न थी; परन्तु बीचमें हमने विज्ञानकी घोर अवहेलना की जिसका परिणाम हमारी वर्तमान अधोगति है। अब भारतमें भी लोग विज्ञानकी ओर अग्रसर होने लगे हैं और थोड़ेसे ही समयमें भारतीय वैज्ञानिकोंने अपने महत्त्वपूर्ण आविष्कारों और अन्वेषणोंसे समस्त संसारको आश्चर्य-चकित कर दिया है। भारतीयोंने भी यथाशक्ति विज्ञानकी सेवा की है। यद्यपि इन लोगोंकी संख्या उँगलियोंपर गिनी जा सकती है, पर इन्होंने जो कुछ कार्य किये हैं, उनके बलपर हम संसारमें गर्वसे अपना मस्तक ऊपर उठा सकते हैं। तीन-चार वर्ष पूर्व कलकत्तेके प्रभातकुमार मित्र नामक विद्यार्थीने विज्ञानके लिए प्राण-दान करके संसारके सम्मुख इस बातको प्रमाणित

कर दिया है कि भारतीय युवक भी विज्ञानके लिए हँसते हँसते प्राण देनेकी क्षमता रखते हैं।

पोटाशियम सियानाइड (Potassium Cyanide) नामक भयंकर विषका स्वाद कैसा होता है, इसका पता अब तक नहीं लगा था। कई वैज्ञानिक इस विषका ठीक ठीक स्वाद जाननेके प्रयत्नमें अपने प्राण गवाँ चुके थे, परन्तु सफल न हुए थे। इसी विषका स्वाद जाननेके प्रयत्नमें इस वीर विद्यार्थीकी भी मृत्यु हुई। अपनी एक चिट्ठीमें मृत विद्यार्थीने लिखा था कि 'रसायन-विज्ञानमें पोटाशियम सियानाइडका स्वाद अब तक अनिश्चित है। अपनी वैज्ञानिक मनोवृत्तिसे प्रेरित होकर मैं वैज्ञानिकोंको उसके स्वादका निश्चय करनेमें मदद देना चाहता हूँ।'

उसने कागज़पर चार अक्षर लिखे थे। 'ए', 'बी', 'एस', और 'एस-डब्लू।' 'ए'से एलकलाइन (Alkaline) अर्थात् क्षारके समान, 'बी'से बिटर (Bitter) अर्थात् कड़वा, 'एस'से सावर (Sour) अर्थात् खट्टा और 'एस डब्लू'से स्वीट (Sweet) अर्थात् मीठेका बोध कराया गया था। प्राण निकलनेके पहले उसने 'ए'पर चिह्न लगा दिया, जिसका मतलब हो सकता है कि विषका स्वाद एलकलाइन है। उसने कागज़-पर 'झरल' शब्द भी लिख दिया था, जिसका मतलब तीक्ष्ण या तीखा होता है।

वैज्ञानिकका जीवट

वैज्ञानिक लोग सत्यके अन्वेषणमें अपने जीवन तकको ख़तरेमें डालनेकी तनिक भी परवाह नहीं करते। विज्ञानकी उन्नतिके साथ ही साथ इस प्रकारके जीवट और साहसपूर्ण कार्य बराबर बढ़ते जा

रहे हैं। कुछ वर्ष हुए केम्ब्रिजके एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक प्रोफेसर बार क्राफ्टने हाइड्रोस्यानिक एसिड गैस नामक एक अत्यन्त विषैली गैसकी जाँच करते हुए अपनी ज़िन्दगीको ख़तरेमें डाल दिया। लन्दनकी रिसर्च डिफेन्स सोसाइटी (Research Defence Society) के सम्मुख भाषण देते हुए उन्होंने स्वयं इस प्रयोगका हाल बतलाया था और कहा था कि १००० घन सेंटीमीटर हवामें अगर इस गैसका केवल ०·६ मिलिग्राम (ग्रामका एक हज़ारवाँ भाग) भी मिला दिया जाय और इस दूषित वायुमें मनुष्यको १५ मिनटके लिए भी रहने दिया जाय तो यह निश्चित है कि वह जीवित नहीं बचेगा। वे यह भी बतलाते हैं कि इस दूषित वायु-मण्डलमें एक मिनट तक बन्द रहनेपर मनुष्यके मरनेकी बहुत कम सम्भावना है। प्रोफेसर साहब स्वयं अपने ऊपर प्रयोग करके इस निष्कर्षपर पहुँचे हैं।

विषैली एवं घातक हाइड्रोस्यानिक एसिड गैसका मनुष्यों और जानवरोंपर ठीक ठीक प्रभाव जाननेके लिए प्रोफेसर महोदय एक कुत्तेको लेकर एक कमरेमें बंद हो गये। इस कमरेकी हवामें प्रत्येक सहस्र सेंटीमीटरमें ०·६ मिलीग्राम विषैली गैस मिला दी गई थी। वे दो मिनट तक लगातार कमरेमें बंद रहे। कमरा खुलनेपर देखा गया कि कुत्तेका प्राणान्त हो चुका था, परन्तु प्रोफेसर साहब अपने होश-हवासमें थे।

इस प्रयोगके पूर्व यह ज़रूर मालूम था कि हाइड्रोस्यानिक गैस बहुत विषैली होती है परन्तु उसकी घातकताकी उपर्युक्त सीमाओंका लोगोंको तनिक भी ज्ञान न था। प्रोफेसर बारक्राफ्टने इस गैसके अत्यन्त विषैले स्वभावको जानते हुए भी अपने ऊपर उपर्युक्त प्रयोग करके

जीवटका एक अत्यन्त प्रशंसनीय उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने अपने ऊपर इसके अलावा और अनेक प्रयोग किये हैं। एक बार तो उन्होंने अपनी रक्तवाहिनी नाड़ियों (Arteries) में नली लगाकर खून भी खिंचवाया था! साधारणतया ऐसे अवसरोंपर मनुष्यका प्राणान्त हो जाता है।

विज्ञानके लिए आत्मोत्सर्ग

इसी प्रकारके एक परोपकारव्रती महानुभाव सज्जनका वृत्तान्त और देकर यह अध्याय समाप्त किया जायगा। ये सज्जन इस समय अफ्रीकाके युगाण्डा प्रदेशमें रहते हैं और मि० ई० के नामसे विख्यात हैं। जातिके आप अंग्रेज़ हैं और इंग्लैण्ड ही आपकी जन्म-भूमि है।

अफ्रीकामें एक प्रकारका भयंकर रोग होता है, जिसे 'काल-निद्रा' (Sleeping Sickness) कहते हैं। इस रोगका देशी नाम 'नगोना' है। अफ्रीकाके जंगली प्रदेशोंके और अनेक रोगोंकी ही भाँति इस रोगका कारण भी एक भयानक विषैली मक्खी है। यह रोग इस मक्खीके काटनेसे उत्पन्न होता है और इसमें मृत्यु अनिवार्य होती है। इस मक्खीका आहार प्राणीका रक्त होता है। अफ्रीकामें इस जातिकी मक्खी बहुतायतसे पाई जाती है। इसी व्याधिके लिए मि० ई० ने अपने जीवनकी आहुति दी है। इसपर भी उन्होंने अपनेको अपरिचित एवं अज्ञात रक्खा है। संसार उन्हें मि० ई० के नामसे जानता है। मि० ई० ने स्वयं वनमें जाकर अपने शरीरमें इस जातिकी मक्खीसे कटवाया।

उन दिनों अफ्रीकामें इस काल-निद्रा व्याधिके बारेमें वैज्ञानिक खोज की जा रही थी। डा० एच० लिडहर्स्ट डयूक इस रोगके सम्बंधमें बीस

वर्षसे खोज कर रहे थे। उनकी खोज इस स्थितिपर आ पहुँची थी कि किसी स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें इस रोगका विष प्रवेश कराकर औषधादिका प्रयोग किया जाय। इसके लिए एक बार यह प्रस्ताव पास किया गया था कि प्राण-दण्डकी सज़ा पाये हुए किसी अपराधीपर वह परीक्षा की जाय। परन्तु ब्रिटिश सरकारने इसकी इजाज़त नहीं दी। तब डाक्टर डयूकने अफ्रीकाके आदिम निवासियोंमें परीक्षाके लिए किसी मनुष्यकी तलाश की किन्तु कोई तैयार नहीं हुआ। अफ्रीकाकी बागन्दा जातिके लोगोंमें यह रोग विशेष रूपसे फैला हुआ है। वे इस काल-व्याधिकी भयंकरतासे भली भाँति परिचित हैं। रोगकी यातना और रोगकी दुर्दशा वे प्रत्यक्ष देखते हैं, इसलिए स्वभावतः उनमेंसे कोई राजी नहीं हुआ। मि० ई० इस परीक्षाके लिए सबसे आगे आये। मि० ई० ख्यातिके लोभसे परीक्षाके लिए अग्रसर नहीं हुए। उन्होंने अपना परिचय भी गुप्त रक्खा। उन्होंने कहा—मनुष्य चाहिए, मैं परीक्षाके लिए आया हूँ, नामका क्या प्रयोजन है?

जिस वनमें उक्त जातिकी मक्खियोंका वास है, वहाँ वे एक साहसी वीरकी भाँति गये और मक्खीसे कटवाकर चिकित्सक डा० डयूकके पास आये। मक्खीने मि० ई० के हाथमें काट खाया था। काटनेके कई दिनों बाद मि० ई० का गला सूज गया, हाथ सूज गया और बुख़ार आ गया। सारी देहमें फोड़े निकल आये। उनकी ज्वालाकी वेदना असह्य थी। इसके साथ सिरमें अत्यन्त पीड़ा भी थी। शरीर क्रमशः क्षीण होने लगा। उनके रोगके प्रति सहानुभूति प्रकट करनेपर उन्होंने मृदु मुस्कानके साथ कहा—विज्ञानका इतना

बड़ा व्रत-पालन करनेके लिए किसीको अग्रसर होना चाहिए। इसीलिए स्वेच्छापूर्वक मैंने यह व्रत ग्रहण किया है।

मि० ई० जब इस परीक्षाके लिए सबसे आगे आये तो कई दिन बाद तीन देशी आदमी भी इस प्रकार विज्ञानकी बलि-वेदीपर आत्म-समर्पण करनेके लिए उपस्थित हुए। भगवानकी दयासे मि० ई० और देशी आदमी सबके सब बच गये। वैज्ञानिक परीक्षा सफल हुई। मि० ई० बिना किसी स्वार्थके एक अज्ञात जातिके लिए इस प्रकार आत्माहुति देनेको तैयार हो गये, यह उनके जीवटका द्योतक है। मानव-जाति और विज्ञानके इतिहासमें यह घटना स्वर्ण अक्षरोंमें अंकित की जायगी।

इस प्रकारके जीवटपूर्ण साहसिक कार्यों और निस्स्वार्थ बलिदानोंके और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। इन वीरोंने केवल इसी उद्देश्यसे नाना प्रकारकी कठिनाइयोंका सामना किया और अपने प्राणोंतककी परवाह न की कि दूसरे लोग अच्छी तरहसे रह सकें, और मनुष्यकी अज्ञानता दूर हो जाय। इन लोगोंकी वीरता, साहस, बलिदान और त्यागकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। अपने बहुमूल्य प्राणोंका बलिदान करके इन अमर वीरोंने मानव-समाजकी अमूल्य सेवाएँ की हैं। संसार इनका चिर ऋणी रहेगा। इनकी कथाएँ पढ़कर और सुनकर हमारे हृदयमें एक प्रश्न उठता है कि यदि इन वीरोंने अपने प्राणोंका बलिदान न किया होता और नाना प्रकारकी कठिनाइयोंका सामना न किया होता तो आज दिन संसारकी क्या गति होती?

५-घोड़ेपर दस हज़ार मील

[ए० एफ० शिफली अर्जेन्टाइनाके रहनेवाले एक अध्यापक हैं। आपने इंग्लैण्डमें रहकर शिक्षा प्राप्त की और बादमें आप दक्षिण अमेरिकाके अर्जेण्टाइन प्रदेशमें शिक्षकका काम करने लगे। आपके अवकाशका अधिकांश समय घोड़ेपर चढ़कर पम्पा प्रदेशोंकी यात्रा करनेमें बीता। उत्तरी अर्जेण्टाइनाके जंगली भागोंमें कई बार आप घूम आये हैं। इस अध्यायमें आपकी एक साहसपूर्ण यात्राका वर्णन आपहीके शब्दोंमें दिया जा रहा है।]

ए० एफ० शिफली

दक्षिण अमेरिकाके दक्षिण छोरसे लेकर उत्तरीय छोर संयुक्त राज्य अमेरिका तक घोड़ोंके द्वारा यात्रा करनेका कारण, जब कि बढ़ियासे

बढ़िया जहाज़ मौजूद थे, न तो पागलपन ही था और न प्रसिद्धि प्राप्त करनेकी अभिलाषा ही।

मैंने अपनी यात्राके लिए दो घोड़े पसंद किये थे। ये दोनों उसी नस्लके थे जो कि चार सौ वर्ष पूर्व स्पेनिश लोगोंद्वारा अमेरिकामें लाई गई थी। इनमैसें बहुतोंको तो उन्होंने अपने आप ही खुला छोड़ दिया था और बहुत-से इंडियन लोगों (यूरोपवाले अमेरिकाके प्राचीन निवासियोंको 'इंडियन'के नामहीसे पुकारते हैं) के आक्रमणके मौक़ोंपर भाग गये थे। परन्तु कई कारणोंसे घोड़ोंकी यह नस्ल बिलकुल नष्टप्राय-सी हो चुकी थी। इस यात्राका प्रमुख उद्देश्य इन घोड़ोंकी उपयोगिता सिद्ध करना और सरकारको यह बतला देना था कि उनको नष्ट होनेसे बचाना चाहिए।

मुझे अपनी यात्रा पूरी करनेमें ढाई वर्ष लगे। शायद आजकल घोड़ेपर इतनी लम्बी यात्रा और किसीने न की होगी।

मैं लम्बे-चौड़े मैदानों, रेगिस्तानों, जंगली दलदलों और ऊँचे ऊँचे पहाड़ों आदि सभी स्थानोंमें होकर गुज़रा। एण्डीज़ पर्वतपर एक बार तो हम लोग १८,००० फीटकी ऊँचाईतक पहुँच गये और उसके बाद हमें फिर दलदल और जंगलोंमें होकर गुज़रना पड़ा कहीं कहीं जंगल इतने घने थे कि बिना झाड़ी काटे आगे बढ़ना असम्भव हो जाता था। यद्यपि मैं अकेला चल रहा था और मेरे साथ कोई भी मनुष्य न था फिर भी मैंने 'हम' का प्रयोग किया है क्योंकि उस यात्रामें अधिकांश मुश्किल काम तो मेरे दोनों घोड़ोंहीने किया था। एक बार नहीं अनेक बार उन्होंने मुझे कठिनाइयाँ झेलने और मृत्युके मुखमें जानेसे बचाया।

यात्रा आरम्भ करनेसे पहले घोड़ोंका प्रबन्ध करनेके लिए मुझे अर्जेण्टाइन रिपब्लिकके दक्षिणमें जाना पड़ा। वहाँ मैंने तीस घोड़े खरीदे। दौड़ाने और दूसरी तरहसे जाँच करनेके बाद उनमेंसे दो अपनी यात्राके लिए चुन लिये।

उन घोड़ोंमें एक सोलह साल और दूसरा अठारह सालका था। इतनी उम्रके होते हुए भी कोई चढ़नेके काममें न लाया गया था। इससे आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि जब मैं पहले पहल उनपर चढ़ा होऊँगा तब उन्होंने मुझे कैसा नाच नचाया होगा! परन्तु, धैर्य, सद्व्यवहार, नर्मी और दो-एक बार बुरी तरहसे गिर पड़नेके बाद वे मेरे मित्र हो गये और मैं यात्राके लिए रवाना होनेको तैयार हो गया।

* * *

मैंने अपनी यात्राके लिए जो मार्ग चुना था, उसके अध्ययन करनेमें मैंने पूरे दो वर्ष लगाये थे और रास्तेमें पड़नेवाले प्रदेशोंके बारेमें यथासम्भव बहुत काफ़ी बातें मालूम कर ली थीं, पर बादको मुझे पता लगा कि वे सब बहुत ही अपूर्ण और अस्पष्ट थीं।

यद्यपि मैं ख्यातिसे बहुत बचना चाहता था तथापि प्रेस-प्रतिनिधियोंकी दृष्टिसे बच सकना असम्भव हो गया। उन्हें मेरी भावी यात्राका हाल मालूम हो गया और अखबारोंमें तरह तरहकी आलोचनाएँ होने लगीं। बहुतसे अखबारोंने यात्राको असम्भव बतलाया और दो-एक तो बहुत आगे बढ़ गये, और यहाँतक कह डाला कि मुझे डाक्टरसे सलाह लेनी चाहिए। कुछकी रायमें ऐसी यात्रा करना घोड़ोंके ऊपर अत्याचार करना था। परन्तु उस समय

इन सुयोग्य पत्रकारोंने इस बातके ऊपर ज़रा-सा भी दिमाग़ नहीं खर्च किया कि जब एक आदमी दो घोड़ोंपर जंगलमें यात्रा करेगा तो उसका जीवन भी तो बहुत अंशोंमें उन्हींके ऊपर निर्भर रहेगा और वह उनकी देख-भाल करना अपना परम कर्त्तव्य समझेगा।

साधारणतया मैं एक घोड़ेपर चढ़ता था और दूसरेपर सामान आदि लाद देता था। जब कभी ज़रूरत देखता तो मैं दोनोंके काम बदल दिया करता था। जब कभी कठिन चढ़ाई या ज़बरदस्त ढाल पड़ जाता तब सामानको आधा आधा करके दोनोंकी पीठपर लाद देता और अपने आप पैदल चलता। इस तरह घोड़े तेज़ीसे भी चल लेते थे और मैं भी उनके ऊपरसे गिरकर चोट खा जानेके डरसे छुटकारा पा जाता था। रास्तेमें मुझे बराबर खुले मैदानमें सोना पड़ता था क्योंकि बोझके कारण मैंने अपने साथ तम्बू वगैरह न रक्खा था।

जंगली जानवरोंके बारेमें तो मैं कभी परेशान ही नहीं हुआ। उनमेंसे बहुत-से तो मनुष्योंसे डरते हैं और उनकी दृष्टिसे बचे रहनेहीमें अपना कल्याण समझते हैं। घोड़ेके बालोंके बने हुए रस्सेको कुचले हुए लहसुनसे रगड़कर उसकी वड्डी बनाकर सिरके नीचे रखकर सोनेसे साँप कभी भी पास नहीं फटकते। दक्षिण और मध्य अमेरिकामें चीतेका बड़ा ख़तरा रहता है, परन्तु वह बहुत कम जगहोंमें पाया जाता है और बहुत ज़्यादा परेशानीका कारण नहीं होता।

प्यूमा (एक तरहका शेर) के बारेमें मैंने बहुतसे किस्से पढ़े और सुने थे। उनसे बचनेके लिए मुसाफिर लोग रात-भर आग जलाये रखते हैं। उत्तरी अमेरिकामें प्यूमाको कोजर भी कहते हैं।

यह जानवर बहुत ही डरपोक होता है। परन्तु मुझे जो कठिनाइयाँ सहनी पड़ीं वे इनसे बिलकुल भिन्न थीं, और भोजन एवं पानीकी कमी तथा पहाड़के दुर्गम रास्ते थे। इनका सामना करके आगे बढ़ने पर जलते हुए रेगिस्तान, बड़े भारी दलदल, तथा बुखार और दूसरी बीमारी पैदा कर देनेवाले कीड़ोंका सामना करना होता था। एक बार तो मुझे एक घृणित जगहमें चार दिन बिताने पड़े। वहाँ लगभग डेढ़ सौ ग्रामीण, अमेरिकाके मूल निवासी, एक प्रकारके भीषण प्लेगसे पीड़ित थे। उनमेंसे चौबीस तो मेरे सामने ही मर गये।

पार्वत्य प्रदेशोंकी नदियोंमें तैरना भी कोई कम कठिन काम नहीं है। कहीं कहीं तो मगरों और घड़ियालोंका मुकाबिला भी करना पड़ता है। परन्तु मनुष्य-भक्षी मछली इनसे भी अधिक भीषण होती हैं। ये मछलियाँ बहुत छोटी होती हैं और कैराइब या पिरहाना कहलाती हैं। ये हजारोंकी तादादमें आक्रमण करती हैं और कुछ सेकंडोंमें ही आदमी या जानवरको ख़त्म कर डालती हैं। अगर शरीरपर कोई खरोंच या चोट वगैरह हुई तब तो बस ख़ैर मत समझिए, मछलियाँ दूरहीसे खून सूँघ लेती हैं।

इनके अलावा एक चिपटी मछली होती है, उसका डंक बहुत पैना और विषैला होता है। यह मछली घोड़ोंकी तो जानी दुश्मन होती है। उसके प्रवेश करते ही घोड़ेको लकवा-सा मार जाता है और वह फौरन पानीमें डूब जाता है। ये मछलियाँ तीनसे लेकर पाँच फीटतक लम्बी और मनुष्योंकी भुजाओंकी तरह मोटी होती हैं। विषैली मछलियोंके साथ ही साथ दक्षिण अमेरिकामें नाना प्रकारकी विषैली घास-फूस भी पैदा होती है। इन्हें खाते ही घोड़ेका प्राणान्त

हो जाता है। मुझे इस बातकी बड़ी चिन्ता रहती थी कि मेरे घोड़े कहीं उस घासको न खा लें। विषैली घास-फूसके साथ ही मुझे रास्तेमें कई उपयोगी जड़ी-बूटियाँ भी मिलीं।

* * *

मैं ब्यूनस आयर्ससे उत्तर-पश्चिमकी ओर बोलेवियन राज्यकी सीमाकी तरफ रवाना हुआ। पहाड़ी प्रदेशोंमें सड़कें वगैरह बहुत कम होती हैं, इसलिए मैंने गर्मीके दिनोंहीमें बोलेविया पहुँच जानेका प्रोग्राम बनाया। मैं यह बात अच्छी तरह समझता था कि गर्मियोंमें नदियाँ सूख जाती हैं और उनके द्वारा सफर करनेमें सहूलियत होती है। जल्दीकी कोई बात भी न थी। मुझे सुविधानुसार काम करनेके लिए बहुत काफी वक्त था। यात्राके शुरूके कुछ दिन तो मुझे घोड़ोंको ठीक करनेहीमें लग गये। घोड़े पालतू न होनेके वजहसे भीड़-भाड़ और शहरोंकी चहल-पहलसे बहुत घबड़ाते थे। पैम्पाज़ मैदानमें पहुँचते ही सब बातें ठीक हो गईं और मंचा और गेटो, मैं घोड़ोंको इन्हीं नामोंसे पुकारा करता था, मेरे दोस्त बन गये।

मैंने अपनी पेटीमें ०.४५ की दो छह-नली रिवाल्वरें रख ली थीं। दूसरे घोड़ेपर लदे हुए सामानमें भी एक ०.४४ की राइफल और १६ बोरकी बन्दूक थी। मैं यह बात अच्छी तरह जानता था कि अपने लिए खानेका इन्तज़ाम करनेमें इनसे बहुत मदद मिलेगी। घोड़ेकी काठी हलकी लकड़ीकी बनी थी और उसपर चमड़ा चढ़ा हुआ था। उसके ऊपर मैंने भेड़की खाल बिछा ली थी। इस खालको मैं सोते समय बिछानेके काममें भी लाता था।

हमें मैदान पार करनेमें कई दिन लग गये। उल्लुओं और कुछ

चिड़ियोंके सिवाय और किसी जंगली पशु-पक्षीके दर्शन भी न हुए। कभी कभी पशुओंके—गाय, भैंस, बकरियोंके झुण्ड और उनकी देख-भाल करनेवाले ग्वाले, जिन्हें वहाँवाले 'गांचो' (Gancho) कहते हैं, ज़रूर मिल जाते।

उत्तरकी तरफ़ बढ़नेके साथ ही साथ गर्मी भी बढ़ गई और जब हम खादसे ढके हुए मैदानोंमें पहुँचे तब तो सूर्य-किरणें हमारी हड्डियों तक़के भीतर पहुँचनेकी कोशिश करने लगी थीं। वह मैदान बहुत बंजड़ है। वहाँ पानीके दर्शन ही नहीं होते। मिलता भी है तो बहुत ख़राब। घास-फूस भी नहींके बराबर है। कहीं कहीं नागफनीकी या ऐसे ही और वृक्षोंकी कटीली झाड़ियाँ ज़रूर मिलती हैं। वहाँ पहुँचनेपर मुझे बतलाया गया कि घोड़ोंको साथ लेकर उधरसे कभी गुज़रना ही न चाहिए। परन्तु हम वहाँ पहुँच चुके थे और किसी तरह वहाँसे बचकर निकल भी आये। मैं अपने दोनों घोड़ोंसे बहुत सन्तुष्ट हुआ। उनकी दृढ़ता और मज़बूतीका सबसे पहला सुबूत मुझे यहीं मिला।

पेम्पाज़ पार करनेके बाद हमने विशाल एण्डीज़में प्रवेश किया। कई दिनतक बड़ी बड़ी घाटियोंमें होकर सफर करते रहे। सूखी हुई नदियोंके मैदान सड़कोंका काम देते थे। आगे बढ़नेके लिए अनुमान और भाग्यहीका भरोसा रहता था।

बोलीवियाकी सीमाके नज़दीक पहुँचनेपर हमें अमेरिकाके मूल निवासी भी मिलने लगे। ये लोग साल-भरमें केवल एक बार गर्मीके मौसममें लम्बी लम्बी यात्राएँ करते हैं। उनके कपड़े और बर्तन वगैरह लामाओं (llamas) पर लदे रहते हैं। इन जानवरोंको वे

अपने सामने हाँककर आगे ले जाते हैं। अपने मालको बेच या बदल चुकनेके बाद वे लोग वर्षा आरम्भ होनेसे पहले ही अपने घरोंको वापस चले जाते हैं।

जैसे जैसे हम इस पहाड़ी प्रदेशके अन्दर घुसते गये, रास्ता बहुत ऊँचा-नीचा और पथरीला होता गया। ऊँची ऊँची चोटियोंसे बर्फीली हवाएँ आकर हमारा स्वागत करने लगीं। मीलोंतक हरियालीके दर्शन न होते थे। रास्तेमें कई कई दिन चट्टानों और नदियोंकी पथरीली घाटियोंमें काटने पड़ते थे। कहीं कहीं तो ऊपर चढ़ना भी मुश्किल हो जाता था।

ऊँचे दर्रोंमें तो बड़ी कड़ी सर्दी थी। हवाके दबावके कम हो जानेके कारण मेरी नाकसे अक्सर बहुत-सा खून निकलने लगता और घुमनी एवं चक्कर आने लगते। एण्डीज़में यह बीमारी 'प्यूना' (Puna) के नामसे पुकारी जाती है और कभी कभी जानवरोंको भी परेशान कर देती है। ऐसी हालतमें यदि सवार सावधानीसे काम न ले और घोड़ेसे ज़रूरतसे ज़्यादा काम ले तो जानवरकी मृत्यु अवश्यम्भावी है।

यहाँके मूल निवासी इस रोगका इलाज भी जानते हैं। इलाजका तरीक़ा भद्दा होते हुए भी वह बहुत फ़ायदा पहुँचाता है। वे लोग घोड़ेके मुँहके ऊपरी हिस्सेमें एक गहरा घाव कर देते हैं जिससे खून बहने लगे और फिर उसके नथनेमें होकर थोड़ा-सा शुद्ध अलकोहल भीतर पहुँचा देते हैं। जहाँ रास्ते ज्यादा ढालू थे मैंने अपने जानवरोंको कभी तेजीसे नहीं चलाया और जब जब उन्होंने इच्छा प्रकट की उन्हें आराम करनेका पूरा मौक़ा दिया। यहाँ मैं इस बातका विश्वास

दिला देना चाहता हूँ कि जब घोड़ा अपने मालिकको समझ लेता है तब वह अपनी ज़रूरतकी चीजें माँगना भी सीख जाता है।

बोलीवियाके बहुतसे हिस्सोंमें पानी न पीना ही श्रेयस्कर है। देखनेमें पानी साफ तो जरूर मालूम होता है, पर वह अधिकतर ख़राब और हानिकारक होता है। यहाँके मूल निवासी अनाजकी एक तरहकी शराब-सी तैयार करते हैं जो उनकी बस्तियोंमें बहुतायतसे मिलती है। इसके बनानेका तरीक़ा बहुत ही गंदा होता है। पीनेमें भी यह सुस्वादु नहीं होती। इसे मूल निवासी लोग 'चीचा' (Chicha) के नामसे पुकारते हैं। मुझे पानीकी कमीकी वज़हसे प्यास बुझानेके लिए बहुत काफी 'चीचा' पीनी पड़ी।

लगातार कई हफ्ते चलते रहनेके बाद हम बोलीवियाकी राजधानी लापाज़ पहुँचे। वहाँ पहुँचनेके थोड़े ही दिन बाद जिस प्रदेशमेंसे होकर हम आये थे वहाँ बड़ा भीषण विप्लव हुआ और देशी लोगोंने बहुत-से गोरोंको मार डाला। वास्तवमें मेरी सहानुभूति इन बेचारे मूल निवासियोंके ही साथ है। जबसे पिज़ारो (Pijarro) की अध्यक्षतामें स्पेनवालोंने इस देशपर आक्रमण किया तबसे इन लोगोंको बराबर अत्याचार और अन्यायपूर्ण दुर्व्यवहार सहन करना पड़ रहा है।

* * *

लापाज़से हम लोग बराबर उत्तरकी ओर बढ़ते रहे और टीटीकाका झीलके किनारे किनारे होते हुए प्राचीन इंका साम्राज्य (Inca Empire) की राजधानी कर्को पहुँचे। यह झील समुद्रके धरातलसे १४,००० फीट ऊँची है। यद्यपि नकशेमें यह बहुत बड़ी नहीं मालूम होती फिर भी मुझे दक्षिणसे उत्तर तक इसकी लम्बाई तय करनेमें पूरा एक

सप्ताह लग गया। इसके आसपास हमें बहुत-से मनोरंजक खण्डहर मिले। इनमेंसे कुछ इंका-काल और कुछ इंका-कालके पूर्वके थे। यद्यपि मैं पुरातत्त्व-विज्ञानमें बहुत काफी दिलचस्पी लेता हूँ फिर भी तबियत भरके मैं वहाँ ठहर न सका। वहाँसे हम सीधे पश्चिमकी तरफ रवाना हुए और एक दूसरे ज़बरदस्त पहाड़ी प्रदेशमें पहुँचे। यहाँपर प्रकृतिका कार्य-कलाप देखकर तो मेरे छक्के छूट गये।

पहाड़ोंकी चोटियोंपर बलाकी ठण्ड थी, और जब हम उतरकर घाटियों और तराईमें पहुँचे तो मच्छड़ोंकी ज़बर्दस्त सेनाने हमारे ऊपर आक्रमण किया और आगमनका विरोध करनेके लिए तोतोंके झुण्डने ज़बर्दस्त किलकारियाँ लगाईं। कभी कभी हमें गहरी दरारोंको पार करनेके लिए लटकते हुए देशी पुलोंके ऊपरसे होकर जाना पड़ता था। जब मैं अपने घोड़ोंको लेकर इन पुलोंके बीचोंबीच पहुँचता तो ऐसा मालूम होता कि घोड़े पुलको कभी पार न कर सकेंगे, परन्तु वे बड़ी सावधानीसे आगे बढ़ते। पुल जब बहुत ज़्यादा हिलने-डुलने लगता तो बिल्कुल ठहर जाते और जब तक पुलका हिलना-डुलना रुक न जाता आगे न बढ़ते। इनमेंसे कुछ पुल केवल तीन फीट चौड़े थे। ऐसी हालतमें मुझे घोड़ोंसे उतरकर उन्हें एक एक करके आगे ले जाना होता था। मुझे बराबर यही डर बना रहता कि कहीं पुल टूट न जाय। दोकी कौन कहे मुझे एक घोड़ेको पैदल ले जानेमें डर बना रहता था। पुल कमज़ोर होते हुए भी देशी लोगोंके साहसका परिचय देनेके लिए बहुत काफी थे।

एक बार एक तंग रास्तेसे गुज़रते हुए एक घोड़ेका पैर उचट गया और वह एक विकट ढालके नीचे लुढ़क गया। उसकी मृत्यु

बिलकुल निश्चित-सी थी। सौभाग्यसे एक पेड़के रास्तेमें पड़ जानेके कारण वह नीचे गिरनेसे बच गया। फिर भी उसे बचाना और उस ढालके ऊपर खींचना आसान बात न थी। घोड़ा काफी समझदार था, ख़तरेको अच्छी तरह समझ गया था। जब तक उसे रस्सोंसे बाँधकर ऊपर न खींचा गया वह टससे मस न हुआ। उस मौक़ेपर देशी लोगोंने मेरी बहुत काफी सहायता की।

इसी तरह कठिनाइयाँ झेलते हुए हम पीरूकी राजधानी लीमा पहुँच गये। यह पुराना शहर प्रशान्त महासागरके तटपर बसा हुआ है। पीरूसे आगे हम समुद्रके किनारे किनारे उत्तरकी तरफ आगे बढ़े।

हमें रेगिस्तानोंमें होकर गुज़रना पड़ा। गर्मी बड़ी सख़्त थी। समुद्र-तटके पासवाले उन मैदानोंमें कभी वर्षा ही होती नहीं है और पानी केवल एण्डीज़से उतरनेवाली पहाड़ी नदियोंहीमें देखनेको मिलता है। हम लोगोंको ९६ मील चौड़ा विशाल रेगिस्तान पार करना पड़ा। रास्ता बहुत ख़तरनाक था। हमें इसे तय करनेमें पूरे बीस घंटे लग गये। ऐसे मौक़ोंपर हम अधिकतर रातहीमें चला करते थे। ऐसा भी केवल शुक्ल पक्षमें किया जा सकता था। कृष्ण पक्षमें मज़बूर होकर दिनमें ही आगे बढ़ना होता था। कभी कभी तो इतनी ज़बरदस्त गर्मी पड़ती कि बालू खौलती हुई मालूम होती थी। मेरे सवारीके जूते बहुत भारी भरकम थे, अगर उनमें यह बालू किसी तरहसे प्रवेश कर जाती तो बस पूछिए मत!

कभी जलती हुई बालूके बजाय तर बालूपर मीलों तक चलना होता। उस समय हज़ारों समुद्री चिड़ियाँ हमारे ऊपर चक्कर काटा

करतीं। बराबर एकहीसे दृश्य देखते देखते तबीयत उचाट हो जाती। समुद्रकी लहरोंको देख देखकर औंघाई आने लगती। जागते रहना मुश्किल हो जाता। भूमध्य-रेखाके पास पहुँचकर मैं फिर पहाड़ोंकी ओर चलने लगा। यहाँ काफी ठण्डक थी लेकिन तेजीसे आगे न बढ़ा जा सकता था। मैं पीरूके समुद्र-तटपर रेगिस्तान, खुश्की और गरमीका काफी अनुभव प्राप्त कर चुका था। अस्तु, मैंने इक्वेडरके दलदलोंसे भरे हुए नम किनारेको पार करनेकी चेष्टा न की।

हमारा रास्ता कभी ऊपर जाता और कभी नीचे। कभी पहाड़ी घाटियोंमें होकर और कभी घने जंगलोंमेंसे। कभी कभी घोड़ोंको कीचड़में घुसकर आगे बढ़ना होता। यहाँ मुझे बड़ी सावधानीसे काम लेना पड़ता। ये दलदल बहुत धोखेबाज़ होते हैं। इन्हें पहचान लेना बड़ा कठिन है। यदि मुसाफिर इनमेंसे एकमें भी फँस गया तो बस, खैर नहीं। अगर फौरन ही मदद न मिले तो वह उसमेंसे शायद ही निकल सके।

एक बार मेरे घोड़ेने एक क़दम भी आगे बढ़नेसे क़तई इन्कार कर दिया। मैं उसे आगे बढ़ानेकी जितनी भी कोशिश करता वह आगे बढ़नेका उतना ही तीव्र विरोध करता। जब मैंने उसके एड़ लगाई तब तो बड़े ज़ोरसे हिनहिनाया और अपनी पिछली टाँगोंके बल खड़ा हो गया और आगे न बढ़ा। सौभाग्यसे एक देशी व्यक्ति वहीं आ निकला। वह स्पेनिश बोल लेता था। उसने मुझे बताया कि आगे दलदल है। घोड़ेको उस ख़तरेका पता कैसे लग गया, यह मेरी समझमें न आया। उसके प्रदेशमें तो दलदल होते भी नहीं। कुछ भी हो, उसने अपने साथ ही मेरी ज़िन्दगी भी बचा ली। मुझे

अच्छी तरह याद है कि एक घुड़सवार जो मेरे लिए काम कर रहा था एक बार दलदलमें फँस गया। उसका घोड़ा तो फौरन ही धँस गया। हम लोग यदि उसी समय रस्से और फन्दे वगैरह लेकर दौड़ न पड़ते तो बेचारा जानवर उसके बाहर निकल ही न पाता। परन्तु, फिर भी उसे बाहर निकालनेमें बड़ी दिक्कतें पड़ीं।

जिस समय मैंने इक्वेडरकी राजधानी कीटोके पास भूमध्य-रेखाको पार कर लिया तो मुझे बड़ी खुशी हुई और मैं अपनेको गौरवान्वित समझने लगा। समुद्रके धरातलसे बहुत ऊँचे होनेके कारण यहाँपर काफी ठण्डक थी। हमारे नज़दीक ही बहुत-से हिमाच्छादित गिरि-शृंग गर्वसे अपना मस्तक उठाये हुए खड़े थे। वे नीले आकाशको छूनेकी चेष्टामें थे और सूर्यकी किरणोंमें बहुत चमकदार मालूम होते थे।

मैं जिन जिन प्रदेशोंमें होकर गुज़रा देशी लोगोंकी पोशाक और रहन-सहनमें विभिन्नता पाई। उनकी भाषाएँ भी अलग अलग और अनेकों थीं। उनमेंसे बहुत-से लोग स्पेनिश बिलकुल न समझते थे। उस समय मुझे इशारोंसे काम लेना पड़ता था। यह कोई आसान काम न था। बड़े धैर्यकी ज़रूरत पड़ती थी।

कोलम्बियाको पार करना लोहेके चने चबाना था। परन्तु फिर भी हम किसी तरह दक्षिण अमेरिकाके उत्तरमें करेबियन सागरके तटपर पहुँच गये। हमें यात्रा शुरू किये हुए एक साल बीत चुका था और वर्षा शुरू हो चुकी थी। कहीं कहीं तो जितना फासला घोड़ेपर तय होता था उतना ही तैरकर पार करना पड़ता था। एक बार एक ज़बरदस्त तूफ़ानमें फँसकर मैं घोड़ेसे गिर गया। भाग्यसे मुझसे कुछ गज़के फ़ासलेपर बिजली गिरी और मैं बाल बाल बच गया।

कोलम्बियासे पनामातक खुश्कीके रास्ते पहुँचना असम्भव-सा है। रास्तेमें घने जंगल और दलदल बहुत पड़ते हैं। इसलिए मुझे मजबूरन क्रिस्टोबलतक घोड़ोंको जहाज़द्वारा ले जाना पड़ा। क्रिस्टोबलसे पनामाकी नहर थोड़ी ही दूर रह जाती है। यहाँपर मैं लगभग एक महीनेतक ठहरा रहा। अपनी यात्रामें इतने ज़्यादा समयके लिए मैं और कहीं ठहरा भी न था। इस बीचमें वर्षा खत्म हो गई और जंगलोंका पानी खुश्क हो गया। मैं अपने घोड़ेपर सवार हो पनामासे आगे बढ़ा। पनामा और कोस्टारिकाके बीचके जंगल बहुत घने और दुर्गम हैं। यहाँ हमें एक ११,००० फीट ऊँचा पहाड़ भी पार करना पड़ा। इसके ऊपरसे अटलांटिक और प्रशान्त दोनों ही महासागर देख पड़ते हैं। पहाड़के नीचेके जंगल भी एक विशाल लहराते हुए हरे समुद्रकी भाँति मालूम होते थे।

किसी किसी भागमें तो खाना-पीना भी दुश्वार हो जाता था। ऐसे मौक़ोंपर मुझे तोतों, जंगली कबूतरों, टर्की तथा अन्य जंगली चिड़ियोंका आहार करना होता था। कभी कभी जंगली सूअरको मारकर उसके मांससे उदर-पूर्ति कर लेता था। एक बार तो भूखसे पीड़ित होकर गोलीसे मारकर बंदरोंतकका मांस खाया। ऐसा करनेमें मुझे बड़ा दुःख हुआ और मैं अपनेको हत्यारा समझने लगा। मांस भी कुछ विशेष अच्छा न था। पेट भरनेके लिए उन जंगलोंमें शायद ही कोई ऐसा जानवर बचा हो जिसका मांस मैंने न खाया हो। जो भी जानवर मुझे सुविधापूर्वक मिल जाता बस वही मेरा शिकार बन जाता। छिपकली, बाज़, शुतुरमुर्ग, मगर, आर्मेडिलो नामका एक छोटा चौपाया,—यहाँ तक कि साँप भी न बच सका। उस हिस्सेके लोग साँपको बड़े स्वादके साथ खाते भी हैं।

घोड़ोंका चारा भी बड़ा विचित्र होता था। घास तो वहाँ कहीं होती ही नहीं। अपना पेट भरना तो दूर, वे दूसरोंका चारा बननेसे बचे रहे यही क्या कम ग़नीमत थी ! चिमगादड़ों और अन्य अनेक प्रकारके कीड़े मकोड़ोंने घोड़ोंकी ज़िन्दगी हराम कर दी थी। दक्षिण अमेरिकाके चिमगादड़ साधारण चिमगादड़ोंसे कहीं ज़्यादा बड़े होते हैं। यद्यपि उन्होंने स्वयं मुझे तो कभी परेशान नहीं किया पर वे जब कभी मेरे घोड़ोंपर आक्रमण कर बैठते थे तो मेरी परेशानी कुछ कम न होती थी। वे होते भी बहुत ही खूँख़्वार हैं। कोई कोई तो एक ही बारमें पाव भरतक खून पी लेता है। परन्तु अनुभवसे मैं शीघ्र ही अपने घोड़ोंको इन भीषण जानवरोंसे बचानेकी तरकीब सीख गया।

* * *

मध्य अमेरिकाके जंगलों और विप्लवोंसे मैं परेशान हो गया। जब कभी मैं यह सोचता कि अब आगेका सफर शान्तिपूर्वक व्यतीत हो जायगा, तभी कोई न कोई उपद्रव ज़रूर उठ खड़ा होता। मेक्सिकोमें तो मेरे सामने ही कई विप्लव हुए। इनसे परेशान होकर मैं पहाड़ोंकी तरफ़ बढ़ गया। पहाड़ पार करनेमें बहुत काफ़ी वक्त लग गया। परन्तु धीरे धीरे मैं अपने गोलतक पहुँच ही गया। मुझे शीघ्र ही यह बात मालूम हो गई कि उत्साही और प्रसन्नचित्त व्यक्तिके लिए बड़ीसे बड़ी कठिनाई भी आसान हो जाती है। उन विप्लवके दिनोंमें मैं बिना किसी तरहके हथियारको काममें लाये हुए मुस्कराता हुआ बराबर अपना सफर तय करता रहा। मैंने अनुभव किया कि डरते हुए बन्दूकोंकी सहायतासे भी शायद उतनी सुगमतापूर्वक आगे न बढ़ पाता।

जब विप्लव बहुत ही ज़्यादा बढ़ गया तब मेक्सिकोकी सरकारने मेरी रक्षा करनेके लिए कई सैनिकोंको नियुक्त कर दिया। ये लोग सबसे अधिक ख़तरनाक भागोंमें बराबर मेरे साथ रहते थे। उस देशमें पहुँचनेके बहुत पहले वहाँके अधिकारी और जनसाधारण मेरी यात्राका हाल सुन चुके थे। मेक्सिकोके निवासी अच्छे घुड़सवार होते हैं और साहसपूर्ण कामोंको बहुत पसन्द करते हैं। ऐसी हालतमें उनका मेरी यात्रामें दिलचस्पी लेना स्वाभाविक ही था। उन्होंने इस बातकी पूरी कोशिश की कि उनके देशमें जहाँ विप्लवकी आग लगी हुई थी, मुझे किसी तरहकी तकलीफ़ या असुविधा न होने पावे। रिओग्रेन्ड पारकर टेक्साज़ पहुँचनेपर सब बातें ठीक हो गईं। परन्तु यहाँ हम जैसे जैसे आगे बढ़ते थे लोगोंकी आमद-रफ्त भी बढ़ती जाती थी। अन्तमें न्यूयार्क पहुँचकर मैं घोड़ोंसे उतर पड़ा और जहाज़द्वारा अर्जेण्टाइना वापस आया।

घर वापस आकर मैंने अपने घोड़ोंको फिरसे उनके प्रिय पम्पाज़में स्वच्छन्द रूपसे विचरण करनेके लिए छोड़ दिया। उन्होंने अपना कर्त्तव्य पूरी तरहसे निबाहा था।

६-सिनेमाकी वेदीपर

फिल्म-व्यवसायने अपनी थोड़ीही-सी आयुष्यमें आशातीत उन्नति कर ली है, और वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है। पाश्चात्य देशोंमें फिल्म देखना साधारण दिन-चर्याका एक अंग बन गया है। परन्तु अब वहाँकी जनता मामूली क़िस्से-कहानियों और प्रेमसम्बन्धी फिल्मोंको देखकर सन्तुष्ट नहीं हो जाती। वहाँ आये दिन दिल दहलानेवाले, दुस्साहसिक और रोमाञ्चकारी फिल्मोंकी माँगका जन्म फिल्मोंके निर्माणके साथ ही हुआ है। जबसे फिल्मोंका बनना शुरू हुआ है, तभीसे सिनेमा-प्रेमी जनसमुदाय हम 'दिल दहलानेवाले जीवटपूर्ण फिल्म चाहते हैं' की आवाज़ बुलन्द कर रहा है। अतएव इन जीवटपूर्ण फिल्मोंका श्रीगणेश फिल्म-निर्माणके शैशवकालहीमें हो गया था।

बलिदानका श्रीगणेश

'स्टंट' या दिल दहलानेवाले फिल्म बनानेका सबसे पहला प्रयत्न अप्रेल १९०७ में किया गया था। एक अँग्रेज़ी फिल्म कम्पनीने ऐसा फिल्म बनानेका प्रबंध किया। कथानकके अनुसार कुछ दु:साहसिक डाकू रेलगाड़ीको गिरानेके लिए पटरीपर बड़े बड़े पत्थर डालकर उसका मार्ग अवरुद्ध कर देते हैं। रेलके आनेके कुछ ही मिनट पूर्व एक सिगनल दिखानेवाला इस बातको देख लेता है। वह अपने जीवनकी परवाह न करके उस भीषण रेलवे-दुर्घटनाको

रोकनेका संकल्प करता है, और उन पत्थरोंको हटानेके लिए दौड़कर पटरीपर सो जाता है ।

उन दिनों स्टुडिओमें फिल्म तैयार करनेकी कला आज कल जैसी उन्नत अवस्थामें न थी। मामूलीसे मामूली फिल्म भी घटनास्थल ही पर जाकर लिये जाते थे । इसलिए उपर्युक्त फिल्मको तैयार करनेके लिए लन्दनके निकट एक रेलवे लाइन चुनी गई । विलियम जीज़ नामक व्यक्तिको समझा-बुझाकर इस दु:साहसिक आयोजनमें भाग लेनेके लिए तैयार किया गया । इस मनुष्यकी रक्षाके लिए पहलेहीसे सब प्रबंध कर लिये गये । उधरसे गुज़रनेवाली ट्रेनके अधिकारियोंसे मिलकर सब बातें तय कर ली गई थीं । गाड़ीके निश्चित स्थान तक आनेके समय तककी सब घटनायें आयोजनके अनुसार ठीक ठीक होती रहीं । परन्तु एकाएक ट्रेनके आनेमें कुछ गड़बड़ी हो गई । जिस ट्रेनका इन्तज़ार किया जा रहा था, उसके बजाय एक दूसरी ही ट्रेन उधरसे आ निकली । ट्रेन निश्चित स्थानपर रुकनेके बजाय सीधी धड़धड़ाती हुई गुज़र गई । बेचारा विलियम जीज़ वहींपर कटकर रह गया । सिनेमा-प्रेमी जन-समुदायकी दिल दहलानेवाली फिल्मोंकी माँगपर यह प्रथम बलिदान था ।

उस समयसे आज तक सहस्रों एक्टरोंने इससे कहीं अधिक दिल दहलानेवाले हजारों लाखों जीवटके काम किये हैं, परन्तु १९०७ ई० में वह एक अनहोनी बात थी। इंग्लैण्डमें फिल्म तैयार करनेके लिए विशेष रूपसे जीवटपूर्ण मनुष्यकी नियुक्तिका यह पहला मौका था। १९०७ ई० के बाद तो फिल्मोंके लिए जीवटपूर्ण कार्य करना एक पेशा ही हो गया । इन पेशेवर आदमियोंके लिए सिंहों

और अजगरोंसे कुश्ती लड़ना, आकाशगामी वायुयानसे पृथ्वीपर कूद पड़ना, अथवा जहाज़समेत पृथ्वीपर आ गिरना, और तेज़ रफ्तारसे चलती हुई मोटरसे कूदकर रस्सेके सहारे उड़ते हुए हवाई जहाज़पर चढ़ जाना, साधारण-सी बातें हो गई हैं। इन व्यक्तियोंने जल, थल, और आकाशमें अनेक अलौकिक और अभूतपूर्व कार्य सफलतापूर्वक कर दिखाये हैं। इनमेंसे बहुत-से भाग्यशाली पुरुष कई बार साक्षात् मृत्युसे युद्ध करनेके बाद भी जीवित हैं। परन्तु बहुत-से ऐसे भी हैं जिनपर भाग्य देवताकी कृपा नहीं हुई और उन्हें मानव-समाजकी दिल दहलानेवाली फिल्मोंके देखनेकी अभिलाषापर अपने प्राण निछावर कर देने पड़े हैं। जीवटपूर्ण और दिल दहलानेवाली फिल्मोंका इतिहास इस प्रकारकी अनेक रक्तरंजित घटनाओंसे परिपूर्ण है। नीचेकी पंक्तियोंमें कुछ ऐसी ही दुःसाहसिक घटनाओंका वर्णन किया जायगा।

हेरी यंग

यह सुप्रसिद्ध अमेरिकन युवक कठिनसे कठिन चढ़ाइयोंपर बहुत आसानीसे चढ़ जाया करता था। जिन फिल्मोंमें अभिनेताओंको कठिन अथवा दुर्गम चढ़ाइयोंपर चढ़ना होता था, उन फिल्मोंमें अभिनेताओंके बजाय हेरी यंगको चढ़ा दिया जाया करता था। हेरी यंग बहुत ऊँची और दुर्गम इमारतों और दूसरी विकट चढ़ाइयोंपर आसानीसे, बिना किसी आयोजनके, चढ़ जानेमें अपना सानी नहीं रखता था। उसके संबंधमें अमेरिकामें अनेक कहानियाँ प्रचलित हो गई थीं।

१९२३ में हेरी यंगको 'सेफ्टी लास्ट' (Safety Last)

नामक फिल्ममें न्यूयार्कके एक मशहूर होटलकी बाहरी दीवारोंपर किसी भी प्रकारके आयोजनके बिना चढ़ जानेके लिए नियुक्त किया गया। होटलकी इमारत बहुत ही ऊँची थी और उसकी चिकनी दीवारोंपर किसी प्रकारके सहारेके बिना चढ़ जाना ख़तरेसे खाली न था। इससे पहले हेरी यंग इससे भी अधिक कठिन चढ़ाइयोंपर सफलतापूर्वक चढ़ चुका था। इस बार भी वह बिना किसी आशंकाके चढ़नेके लिए तैयार हो गया। हेरी यंगके होटलकी इमारतपर बाहरसे चढ़नेकी ख़बर पाकर हज़ारों दर्शक होटलके सामने आकर जमा हो गये। होटलके ऊपर और नीचे दोनों ही स्थानोंपर फिल्म-कैमरे इस दुस्साहसिक कार्यके चित्र लेनेके लिए तैयार रक्खे गये थे। निश्चित समयपर हेरी यंगने उस विराट् जनसमूहको आश्चर्यचकित करते हुए होटलकी इमारतपर चढ़ना आरम्भ कर दिया। एक—दो—तीन—चार—नौ—दस, और ग्यारह मंज़िलें तो वह आसानीसे पार कर गया। ग्यारहके बाद बारहवीं मंज़िलतक पहुँचनेमें भी कोई अड़चन न पड़ी। परन्तु बारहवीं मंज़िलसे ऊपरकी ओर बढ़ते समय उसका पैर फिसल गया, वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा और आश्चर्यचकित जनताको भयविह्वल करके इस संसारसे सदैवके लिए चलता हुआ।

इसी तरह विलियम एस० हार्ड नामक एक दूसरा सिनेमा-अभिनेता एक दिल दहलानेवाले फिल्मके निर्माणमें घोड़ेको बलाकी तेज़ीसे दौड़ाते हुए एक पेड़से टकरा गया। उसका सिर फट गया। वह बुरी तरह आहत हुआ और मरणासन्न हो गया।

रूडी सिमिनाक

इस दिल दहलानेवाले फिल्मोंके चक्करमें पड़कर सुप्रसिद्ध जीवट-

कलाविदू (Stunt Artist) रूडी सिमिनाकका तो बहुत ही शोचनीय अन्त हुआ। १९२९ में वह शिकागोकी ४० मंजिलकी बादलोंसे बातें करनेवाली एक नई इमारतसे एक रस्सेके सहारे उतर रहा था। उसका सिर नीचेकी ओर था। आधी दूरतक अच्छी तरह उतरनेके बाद रस्सा एकाएक उसके हाथसे फिसल गया और वह उसी क्षण नीचे गिरकर समाप्त हो गया।

दौड़ती हुई मोटरसे पुलका गार्डर

फिल्म-निर्माता अपने फिल्मको अधिकसे अधिक दिल दहलानेवाला, सनसनी-खेज़ और लोकप्रिय बनानेके लिए नित नई नई बातें सोच निकालते हैं। आये दिन जो नवीन दिल दहलानेवाले फिल्म तैयार होते हैं, उनका यह दावा होता है कि नवीन फिल्म अपने पूर्वगामी समस्त फिल्मोंसे सनसनी-खेज़ और साहसपूर्ण कार्योंसे परिपूर्ण है। 'पर्ल ह्वाइट' फिल्म-कम्पनीने इसी उद्देश्यसे एक फिल्ममें इस प्रकारका आयोजन किया था कि एक आदमी बहुत तेज़ दौड़नेवाली मोटरकी छतपर बिठाया जाय और मोटरको बहुत तेज़ रफ्तारसे एक पुलके नीचे ले जाया जाय। वह व्यक्ति उस दौड़ती हुई मोटरकी छतसे कूदकर उस पुलका गार्डर पकड़ ले जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं। पाश्चात्य देशोंमें इस प्रकारके दुस्साहसिक खेलोंमें भाग लेनेवाले आदमियोंकी भी कमी नहीं है। कुछ लोगोंने तो इसे अपना पेशा ही बना लिया है। आख़िर इस कामके लिए भी एक अभिनेता आसानीसे तैयार हो गया। वह मोटरकी छतपर बिठाया गया। मोटर पुलके नीचे तेजीसे दौड़ाई गई। उसने बहुत सफाईके साथ उछलकर पुलका गार्डर पकड़ लिया, पर गार्डर फौरन ही हाथसे छूट

गया और वह कुलमुंडी खाता हुआ सड़कसे २५ फीटकी गहराईमें जा गिरा। हड्डी-पसली चूर चूर हो गई और उस आदमीने चिरकालके लिए अवकाश ग्रहण कर लिया।

महिलाका जीवट

इन जीवटपूर्ण फिल्मोंमें भाग लेना केवल पुरुषोंतक ही सीमित नहीं है। पाश्चात्य देशोंमें पुरुषों और महिलाओंमें एक ज़बरदस्त होड़-सी लगी हुई है। यह होड़ जीवनके किसी विशेष पहलूकी ओर निर्धारित न होकर सर्वाङ्गीण है। पुरुष आगे बढ़ जायँ और स्त्रियाँ पीछे रह जायँ, यह कब हो सकता है? जीवटपूर्ण फिल्मोंका भी यही हाल है। इनके निर्माणका अधिकांश श्रेय पुरुष अभिनेताओंहीको प्राप्त है, परन्तु समय समयपर महिलाएँ भी बराबर भाग लेती रही हैं। इन महिलाओंमें मिस मेडेलिन डेविसका नाम प्रमुख है। कुछ लोगोंका तो कहना है कि मिस मेडेलिन डेविस अपने ढंगकी प्रथम और अन्तिम जीवटकी अभिनेत्री थीं। मिस डेविसकी मृत्यु भी अत्यन्त शोचनीय और दुःखान्त हुई। मृत्युके समय वह केवल तेईस वर्षकी युवती थी।

५ अक्टूबर १९२१ की बात है। मिस डेविस एक फिल्मकी प्रधान नायिकाका पार्ट कर रही थी। उसे तेजीसे मोटरको चलाते समय उससे कूदकर आकाशमें उड़नेवाले हवाई जहाजसे लटकते हुए एक बड़े रस्सेको पकड़कर जहाज़पर चढ़ जानेका काम सौंपा गया था। इस कामको वह इससे पहले भी कई बार कर चुकी थी। परन्तु उस दिन उसके ऊपर मौत मँडरा रही थी। वह मोटर चलाते चलाते उससे कूद पड़ी। रस्सेको अच्छी तरह पकड़ लिया। कुछ सेकंडतक

वह हवामें झूलती रही। उस समय जहाज़ ८० मील फी घंटेकी रफ़्तारसे उड़ रहा था। एकाएक रस्सा उसके हाथसे छूट गया। नीचे गिरकर उसके सिरके टुकड़े टुकड़े हो गये। वह फौरन ही बेहोश हो गई और बहुत कुछ उपचार करनेपर भी कभी होशमें न आई।

फ़िल्म-अभिनेताओंके जीवटकी कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। पाश्चात्य देशोंमें फ़िल्मोंके निर्माणमें आये दिन ऐसी घटनाएँ प्रायः हुआ ही करती हैं। अकेले अमेरिकाहीमें एक वर्षमें ऐसी घटनाओंकी संख्या कई हज़ारतक पहुँच जाती है। जुलाई १९३० में अमेरिकाके कैलिफोर्निया प्रदेशमें उद्योग-धन्धों आदिमें होनेवाली दुर्घटनाओंकी जाँचके लिए एक कमीशन नियुक्त किया गया था। इस कमीशनके पास अकेले सिनेमा-व्यवसायसे सम्बन्ध रखनेवाली १०,९७४ दुर्घटनाओं और मौतोंका हरजाना दिलवानेके लिए प्रार्थना-पत्र आये थे। इससे पाठकगण स्वयं अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि इन दिल-दहलानेवाले फ़िल्मोंका इतिहास भी कितना रक्त-रंजित और हृदय-विदारक है।

१९२९ ई० में फ़िल्म कम्पनियोंको युद्धसम्बन्धी फ़िल्म बनानेका एक रोग हो गया था। जिसे देखो वही युद्धसम्बन्धी फ़िल्म तैयार कर रहा है। उस वर्ष इस तरहके फ़िल्म खूब तैयार हुए। फ़िल्म-प्रेमियोंने इनकी भूरि भूरि प्रशंसा भी की। परन्तु यह सब ऐसे ही नहीं हो गया। इनकी तैयारीमें अनेक साहसी युवकोंको अपनी जानसे हाथ धोने पड़े। उस वर्ष इस तरहके फ़िल्मोंकी बलि-वेदीपर ४५ अभिनेताओंकी आहुति दे दी गई। घायल होनेवाले व्यक्तियोंकी संख्या तो इससे भी कहीं अधिक है।

वायुयान-दुर्घटना और अग्नि-काण्ड

उस वर्ष वायुयानोंमें चढ़कर आकाशमें जीवटके खेल दिखानेका बड़ा प्रचार हो गया था। आकाशगामी जीवट-कलाविदोंके कार्योंकी चारों ओर भूरि भूरि प्रशंसा होती थी। डिक ग्रेसकी तरह अनेक जीवट-कलाविद् वायुयानोंकी सहायतासे संसारके करोड़ों फिल्म-प्रेमियोंके मनोरंजनके लिए अपनी जानको हथेलीपर रखकर नाना-प्रकारके असाधारण दुस्साहसिक कार्योंसे परिपूर्ण फिल्म तैयार करनेमें जुट गये थे।

अभागा रोज़

डिस ग्रेसको उस वर्ष एक बहुत ही भीषण और भयावह खेल दिखानेका आयोजन करना पड़ा था। इस खेलमें डिक ग्रेसको अपने वायुयानसे एक मोटा रस्सा लटकाकर 'रोज़' नामक एक दूसरे जीवट अभिनेताको प्रशान्त महासागरकी उत्ताल तरङ्गोंपरसे खींचना

पड़ा था। वायुयानों और जहाजोंपर बैठे हुए फोटोग्राफर इस दृश्यके फिल्म उतार रहे थे।

चित्र उतारनेके लिए पहलेहीसे स्थान तय कर लिया गया था। ग्रेसने निश्चित स्थानपर पहुँचकर अपने वायु-यानको नीचे उतार दिया और वह उसे समुद्रसे २५ फीटकी ऊँचाईपर उड़ाने लगा। निश्चित योजनाके अनुसार वायु-यानको कुछ दूर तक इतनी ही ऊँचाईपर उड़ना था। परन्तु घटना-स्थलके निकट ही कुछ फौजी जहाज़ बन्दूकें और तोपें चलानेका अभ्यास कर रहे थे। तोपोंके छूटनेके घनघोर शब्दसे वायुमण्डल काँप उठा। इसी झमेलेमें ग्रेसको एकाएक अपना जहाज़ नीचा कर देना पड़ा। जहाज़के निश्चित ऊँचाईसे नीचा होते ही बेचारा रोज़ समुद्रकी लहरोंका शिकार हो गया। स्वयं ग्रेस समुद्रके थपेड़ोंसे बाल बाल बचा। उसने अपने कौशलसे जहाज़को ठीक समयपर उठा दिया। जहाज़के ऊपर उठते ही उसने वहींपर वायुमें चक्कर काटने शुरू कर दिये। शायद कहीं बेचारे रोज़का पता लग जाय। परन्तु उसका कोई निशान भी न देख पड़ता था। यह बिलकुल निश्चित मालूम होता था कि अभागा रोज़ समुद्रके ज़बरदस्त थपेड़ोंकी चोट न सह सका होगा और बेहोश होकर वहीं कहीं डूब गया होगा।

ग्रेसके पास भी अब सिवाय एयरोड्रोमको वापस लौट जानेके और कोई चारा न था। आखिर ग्रेसने अपने जहाज़का रुख ड्रोमकी तरफ कर दिया और वापस जाने ही वाला था कि एकाएक उसे समुद्रमें एक हाथ ऊपर उठता दिखाई पड़ा। हाथके बाद एक लहूलुहान मुख और फिर एक शरीर जिसके ऊपरके सारे वस्त्र फटकर

चिथड़े चिथड़ें हो गये थे। यही अभागा रोज़ था। प्राणोंका मोह भी बड़ा ज़बरदस्त होता है। उसने किसी प्रकारसे हवाई जहाज़से लटकते हुए रस्सेको पकड़ लिया था। उसे कितनी असह्य पीड़ा और कष्ट सहना पड़ा होगा, इसका अनुमान इसी तरह लगाया जा सकता है कि प्रशान्त महासागरकी शक्तिशाली लहरोंके थपेड़ोंसे उसकी टाँगोंकी सारीकी सारी खाल चिथ गई थी।

साहसी डिक ग्रेस

वायुयानोंकी सहायतासे जीवटके खेल दिखानेवालोंमें साहसी डिक ग्रेस अग्रगण्य समझा जाता था। 'विंग्स' (Wings) नामक फिल्ममें डिक और उसके साथियोंको जो दुस्साहसिक कार्य करने पड़े, उन्हें स्वयं डिक अपने जीवनके कठिनतम कार्य बतलाता है। उस फिल्ममें ग्रेसको एक पुराने स्पेड हवाई जहाज़को आकाशमें उड़ाते उड़ाते कँटीले तारोंसे घिरी हुई ज़मीनसे टकरा उसे पीठके बल उड़ाकर फिल्म-कैमेरेके ५० फीट पासतक लाना पड़ा था। उसके बाद उसे एक बहुत बड़े बम बरसानेवाले गोथा जहाज़को एक ऊँची इमारतसे टकराना पड़ा। अन्तमें उसे एक छोटे जहाज़को उड़ाते उड़ाते फिर पृथ्वीसे टकरा देना पड़ा। इस कार्यको चतुरसे चतुर और साहसी उड़ाकोंने 'आत्म-हत्या' करनेके बराबर बतलाया और ग्रेसको इस भीषण विभीषिकामें भाग न लेनेकी सलाह दी। परन्तु उसने एक न माना। खेल शुरू होनेके पहले ही रक्षक-दल, एम्बुलेन्स और डाक्टरोंका समुचित प्रबन्ध कर लिया गया था। एक हवाई जहाज़पर अस्पतालों जैसी पूरी व्यवस्था थी। जिस समय ग्रेसने खेल शुरू किये, प्रतिक्षण उसकी मृत्युकी आशंका की जाती

थी। प्रेसके निकटतम मित्र तो उसके जीवनसे सर्वथा निराश हो गये थे। ज़रा-सी भी असावधानी, जहाज़की गतिकी गणनामें ज़रा-सी भी गल्ती अथवा ग़फ़लतसे केवल प्रेसहीके प्राणोंकी आशंका न थी वरन् फ़िल्म-कैमरेके संचालन करनेवाले व्यक्तियों और तमाशबीनोंतकके प्राणोंपर आ बननेकी नौबत आ सकती थी।

पहला खेल किसी तरह सकुशल समाप्त हो गया। उस खेलमें प्रेस अपनी चतुरता और हस्त-लाघवसे मृत्युके मुखमें जाकर भी जीवित लौट आया। दूसरी घटना दो जर्मन फौजी वायुयानोंसे युद्ध करते हुए आरम्भ हुई। जर्मन जहाज़ प्रेसका बुरी तरहसे पीछा कर रहे थे। उनके आक्रमणसे बचनेके लिए प्रेस अपने जहाज़के साथ सीधा पृथ्वीकी ओर १०० मीलकी रफ़्तारसे नीचे उतरने लगा। निश्चित समयपर पृथ्वीपर आकर टकरा गया। जहाज़के पंख टूटकर चूर चूर हो गये। जहाज़ उलट गया। जहाज़के उलटते ही प्रेस अपना सिर बाहर निकाल और किसी तरह रेंगकर उसके बाहर निकला। बाहर निकलनेपर उसे मालूम हुआ कि जिस जगहपर उसने अपना जहाज़ टकरा दिया था वह फिल्म-कैमरोंसे केवल १७ फीटकी दूरीपर था। जिन रस्सोंसे कैमरेको घेर रक्खा गया था उन्हें तो वह बिलकुल स्पर्श ही कर रहा था। इसके साथ ही उसे एक बात और भी मालूम हुई। जहाज़के उलटते ही कोई चीज़ उसमें घुस गई थी और उसके बैठनेके स्थानके बहुत क़रीब पहुँच चुकी थी। यदि उसने जहाज़से निकलनेमें फुर्तीसे काम न लिया होता तो मृत्यु अवश्यम्भावी थी। तीसरी घटना भी ठीक ठीक आरम्भ हुई। प्रेस ११० मील फी घंटेकी रफ़्तारसे आकाशमें उड़ते

उड़ते अपने जहाज़सहित पृथ्वीकी ओर चल पड़ा। जहाज़के पंख ज़मीनसे टकरा गये। उसका इञ्जिन बिगड़ गया, परन्तु फिर भी जहाज़ पृथ्वीपर न ठहर सका। दूसरे ही क्षण वह टूटा फूटा जहाज़ पृथ्वीपर ठहरनेके बजाय फिर आकाशमें उड़ने लगा। कुछ ही क्षणोंमें वह कैमरोंकी दृष्टिसे ओझल हो गया होता और उसका फिल्म लेनेके लिए नवीन आयोजन करना पड़ता। परन्तु ग्रेसने उस समय बड़े साहससे काम लिया। जहाज़के ऊपर उठते ही उसने फिर उसके आगे निकले हुए नोकीले भागको पृथ्वीसे टकरा दिया। ऐसा करनेमें स्वयं उसके प्राण ख़तरेमें पड़ गये। इस बार जहाज़ अच्छी तरहसे टूट गया। जहाज़को दुबारा पृथ्वीसे टकराने तक ग्रेस होशमें रहा। उसके बाद जब वह होशमें आया तो देखा कि वह नष्टप्राय जहाज़से थोड़ी दूरपर पीठके बल पड़ा हुआ है और उसका सारा शरीर बुरी तरहसे चोट खा गया है। उसे फौरन ही अस्पताल पहुँचाया गया। वहाँ डाक्टरोंसे मालूम हुआ कि उसकी गर्दन टूट गई है। अमेरिकाके सर्वश्रेष्ठ डाक्टरोंको उसकी गर्दन ठीक करनेमें कई हफ्ते लग गये। दो-तीन मास उसकी गर्दन प्लास्टरमें बन्द रक्खी गई। जब वह स्वस्थ होकर अस्पतालसे घर जाने लगा, डाक्टरोंने स्पष्ट शब्दोंमें चेतावनी दे दी कि जहाज़को टकरा देना तो बहुत दूरकी बात है सिरमें एक साधारण टक्कर मात्र लगनेसे उसकी मृत्यु हो सकती है।

'विंग्स' फिल्ममें दिखाये जानेवाले भीषण खेलोंसे ग्रेस और उसके साथी बहुत प्रसिद्ध हो गये। विंग्सके बाद और भी बहुत-से रोमाञ्चकारी फिल्म तैयार हुए। इन फिल्मोंमें भी ग्रेस और

उसके साथियोंने बहुतसे दुस्साहसिक कार्य किये। परन्तु ग्रेसके दूसरे साथियोंपर भाग्य-देवताकी विशेष कृपा नहीं थी। ग्रेसका एक साथी 'लिओनामिस' स्काई ब्राइड्स (Sky Brides) नामक फ़िल्मके लिए अपना जीवट-कौशल दिखलाते हुए फरवरी १९३० में समाप्त हो गया। इस दुर्घटनाके पाँच मास बाद ग्रेसके एक दूसरे साथी विलसनने अपने विवाहकी रात्रिको बुरी तरहसे चोट खाकर अपनी इह-लीला समाप्त कर दी। मृत्युके पूर्व विलसन लगातार चार-पाँच वर्षतक सभी प्रकारके वायुयानोंको आकाशमें उड़ाते उड़ाते उन्हें पृथ्वीसे टकराकर तोड़ दिया करता था और स्वयं सही-सलामत ज़िन्दा बच निकलता था। इसका उसे बहुत अच्छा अभ्यास हो गया था। उन दिनों युद्धसम्बन्धी जितने भी फिल्म तैयार हुए थे, प्रायः उन सबमें विलसनने प्रमुख नायकोंके बदलेमें भीषण विभीषिकाओंमें भाग लिया था। कहा जाता है कि उसकी प्रत्येक हड्डी किसी न किसी समय अवश्य टूट चुकी थी। फिल्मवाले उसे भाग्यवान् विलसनके नामसे पुकारते थे। परन्तु अन्तमें भाग्यने उसका साथ छोड़ दिया और ठीक उसी दिन जब वह उस रोजके पैदा किये हुए सौ पौंड अपनी प्रेम-रातका आनन्द लूटनेमें खर्च करनेवाला था!

कांगो रेड

इसी तरह कांगो रेड (Congo Raid) नामक फिल्म बनानेके लिए फिल्म-निर्माताओंको केवल 'कांगो' के भीषण और दुर्गम जंगलोंहीको नहीं पार करना पड़ा था, वरन् वहाँकी जंगली एवं बर्बर जातियोंके युद्ध-नृत्यका भी फिल्म तैयार करना पड़ा था। वहाँकी सर-कारने युद्ध-नृत्यकी मनाही कर दी थी। उससे सार्वजनिक शांति भंग

होनेकी आशंका थी। फिल्म-निर्माताओंने इसके लिए दौड़-धूप करके विशेष आज्ञा प्राप्त की। ५०० जंगली योद्धाओंको युद्ध-नृत्यमें सम्मिलित होनेके लिए तैयार किया गया। नृत्य आरम्भ होनेपर योद्धा लोग यह बात बिलकुल ही भूल गये कि वे लोग फिल्मके लिए कृत्रिम युद्ध कर रहे हैं। नाचते नाचते वे लोग अपने चमचमाते हुए भाले लेकर दौड़ पड़े। योद्धागण पहलेहीसे दो दलोंमें विभक्त हो गये थे। दोनों दल एक दूसरेपर आक्रमण कर बैठे। युद्धकी तेज़ीमें उन्हें और किसी भी बातका ध्यान न रहा। युद्धकी कशमकशमें दो-तीन कैमरे उलट पुलट गये, दो हबशी मरणासन्न हो गये। एक गोरा बुरी तरहसे कुचल गया। स्थिति बिगड़ती देख स्थानीय पुलीसने हस्तक्षेप कर बड़ी मुश्किलसे युद्ध बंद किया।

मगर-मच्छोंमें

जंगलों और जंगली जातियोंके और भी बीसियों फिल्म बनाये गये हैं। कांगो रेडके बाद और भी कई एक भीषण एवं लोमहर्षक फिल्म तैयार किये जा चुके हैं। एक बार तेज़ रफ्तारसे बहनेवाली नील नदीमें विशालकाय जंगली नावोंके खेनेके दृश्य लेनेका प्रबंध किया गया। इस कामके लिए ५०० बर्बर तैयार किये गये। अत्यन्त भीमकाय वृक्षोंके तनोंको साफ करके डोंगियाँ तयार की गईं। इनमेंसे प्रत्येक डोंगीमें ५०—६० व्यक्तियोंके बैठनेकी गुंजाइश थी। इस तरहकी बारह डोंगियाँ नील नदीकी तेज धारमें उतार दी गईं। धारा बहुत ही तेज़ थी और पग पगपर भँवर मिलते थे। उन बर्बरोंने अपने कौशलसे एक भी डोंगी डूबने न दी। परन्तु चित्र तैयार करनेवाले कैमरा-मैन इतने भाग्यशाली सिद्ध न हुए। कुछ चित्र खींचनेके लिए उन्हें एक टूटे फूटे भग्न जहाज़का आश्रय लेना पड़ा था। यह

जहाज़ नील नदीके बीचोंबीच खड़ा कर दिया गया था। जहाज़के पास ही कई एक मगर-मच्छों और दरियाई घोड़ोंके रहनेका अन्देशा था। फिल्म तैयार करते समय एकाएक जहाज़के लंगरोंकी ज़मीन टूट गई। वह पुराना जर्जर जहाज़ द्रुत वेगसे बहनेवाली नीलकी धारामें लट्टूकी तरह नाचने लगा और दो-तीन कैमरेवालोंको पानीमें फेंककर कुछ ही क्षणोंमें डूब गया। जहाज़में जितने भी व्यक्ति मौजूद थे उनमेंसे कोई भी इस तरहकी तेज़ धाराका आदी न था। वे सबके सब धारामें पड़कर बहने लगे और उसी ओर जा पहुँचे जहाँ मगर-मच्छों और दरियाई घोड़ोंके रहनेका अन्देशा किया जाता था। परन्तु शीघ्र ही बर्बर लोग उनकी रक्षाके लिए दौड़ पड़े। बचनेको तो सभी बच गये, किन्तु कुछ अत्यन्त दर्दनाक और दिल दहलानेवाले क्षण व्यतीत करनेके बाद।

मगर-मच्छोंसे युद्ध

इससे कहीं भीषण दुर्घटना मगर-मच्छोंसे युद्ध करते समय घटित हुई। समुद्रके भीतर जाकर मगर-मच्छोंसे युद्ध करनेमें मि० अर्नस्ट विलियमसनने अपूर्व साहस और जीवटका परिचय दिया था। इस कार्यके लिए वे स्वेच्छासे तैयार हुए थे। इसके पूर्व इस तरहका कोई और फिल्म तैयार न हुआ था। मि० विलियमसन अपने भाईको साथ लेकर समुद्रके गर्भ और भीतरी धरातलका फिल्म तयार करनेके लिए लम्बी यात्रा तय करके बहामा टापू पहुँचे। समुद्रमें उतरनेके लिए उन्होंने एक विशेष प्रकारकी पनडुब्बी तैयार की। यह धातुकी बनी थी। बीचमें काचकी एक खिड़की लगाई थी। इसके द्वारा समुद्रके भीतरी दृश्य अच्छी तरहसे देखे जा सकते थे। ताज़ी हवाके लिए समुद्रके ऊपरी धरातलपर मौजूद नावों तक नलियाँ लगाई गई थीं। विलियमसन

बहामानिवासी किसी पनडुब्बे और मगर-मच्छके युद्धका फिल्म तैयार करनेके बहुत इच्छुक थे। कोशिश करनेपर कई एक पनडुब्बे इस कामके लिए तैयार हो गये, परन्तु उनमेंसे कोई भी पनडुब्बीकी खिड़कीके पास आकर युद्ध करनेमें समर्थ न हो सका। बारबार असफल

समुद्रके गर्भमें अष्टपादोंसे युद्ध

होनेपर विलियमसनने स्वयं युद्ध करनेका निश्चय किया। इन नर-भक्षक हिंसक जलजंतुओंको आकर्षित करनेके लिए दो घोड़ोंके मृत शरीर पनडुब्बीके पास लटकाये गये। कुछ देरतक सन्नाटा रहनेके बाद एक विशालकाय मगर-मच्छ वहाँ आ गया। मि० विलियमसन भी फौरन ही एक बड़ा-सा चाकू लेकर पनडुब्बीसे उतर पड़े। वे इससे पहले इन मगर-मच्छोंसे युद्ध करनेके ढँगका भली भाँति अध्ययन कर चुके थे। तैरनेमें वे पहलेहीसे दक्ष थे। युद्ध करना उनके लिए कोई कठिन बात न थी। वास्तविक कठिनाई कैमरेके दृष्टि-क्षेत्रमें युद्ध

करनेमें थी। विलियमसनको देखते ही शार्कने उनपर दो बार आक्रमण किया। पर ये दोनों ही आक्रमण कैमरेके दृष्टि-क्षेत्रके बाहर थे। विलियमसन थककर ऊपर वापस लौट गये और स्वस्थ होनेके बाद फिर नीचे उतरे। इस बार जैसे ही वे तैरकर कैमरेके पास पहुँचे शार्क उनपर झपटा। विलियमसनने गोता लगाकर फौरन ही अपनी रक्षा की। कुछ ही क्षणके बाद ऊपर उठते उठते उन्होंने अपने ज़बरदस्त चाकूको उस भीमकाय जन्तुके पेटमें भोंक दिया। समुद्रके अन्दर चाकू चलाना और वह भी ऐसे भीषण अवसरोंपर कोई आसान काम नहीं है। परन्तु सौभाग्यसे विलियमसनका चाकू काम कर गया और कुछ ही क्षणोंमें वह भीषण जन्तु वेदनासे तड़प तड़प कर अपनी दुम पानीमें पटकने लगा। उस समय समुद्रके अन्दर भूचाल-सा आया प्रतीत होता था। विलियमसनने साहस करके एक बार और आक्रमण किया। इस बार भी चाकू काम कर गया। पर विलियमसनकी दुर्दशा हो गई। उस जन्तुकी पूँछका एक थपेड़ा विलियमसनके मुँहपर पड़ गया। विलियमसन उस चोटको बर्दाश्त न कर सके और फौरन ही बेहोश हो गये। वैसे समुद्रके अन्दर उस तरहका थपेड़ा काम तमाम करनेके लिए बहुत काफी होता है, परन्तु विलियमसनकी ज़िन्दगीके कुछ दिन और बाकी थे। जब वे होशमें आये तो अपने आपको नावपर पाया। बहामानिवासी उन्हें चारों ओरसे घेरे हुए थे। एक गोताख़ोर ठीक समयपर घटना-स्थलपर पहुँचकर उन्हें उठा लाया था।

टाम मिक्स

दिल दहलानेवाले फिल्मोंके लिए टाम मिक्स खूब मशहूर है।

उसका घोड़ेका काम खूब प्रशंसनीय होता है। दुस्साहसिक कार्योंसे तो वह कभी घबड़ाता ही नहीं। बहुत-से अभिनेता जीवटका काम करनेके लिए अपने स्थानपर पेशेवर आदमीको बुला लेते हैं, परन्तु टाम मिक्स अपना काम खुद अदा करता है। घोड़ेपर बैठे बैठे ऊँचे ऊँचे मकानोंकी छतसे कूद जाना, जबरदस्त मार-पीट और युद्धमें भाग लेना तथा जीवटके ऐसे ही अन्य कार्य कर दिखाना उसके लिए एक साधारण-सी बात हो गई है। इन कार्योंमें बराबर भाग लेते रहनेसे उसके शरीरमें गोलियों, चाकुओं और छुरोंके बीसियों घाव हो गये हैं और अनेक हड्डियाँ टूट चुकी हैं।

फिल्मोंमें दौड़ों (Races) के दृश्य दिखाकर उन्हें बहुत सनसनीखेज़ बना दिया जाता है। ये दौड़ें आदमियों और मोटरों ही तक सीमित नहीं होतीं। कभी कभी जलयानों और वायुयानोंमें भी दौड़ोंका आयोजन किया जाता है। फिल्मको अधिक सनसनीख़ेज बनानेके लिए हवाई जहाज़ोंके पंखोंपर एक दो आदमी बिठा दिये जाते हैं। इस तरहकी दौड़ोंमें अनेक भीषण दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं। मोटर और रेलकी दौड़ अब एक साधारण-सी बात हो गई है। परन्तु उनमें नवीनता और जीवटका पुट देनेके लिए फिल्म अभिनेता दौड़ती हुई मोटरसे कूदकर तेज़ रफ्तारसे चलनेवाली रेलगाड़ीके इंजनपर बैठ जाते हैं। कभी कभी इन पेशेवर जीवट-कलाविदोंको मोटर-साइकिलपर बैठकर जलती हुई बड़ी बड़ी मेशीनोंके अन्दरसे गुज़रना पड़ता है।

इन पृष्ठोंमें हमने दिल दहलानेवाले फिल्मोंके निर्माणमें अपने प्राणोंकी आहुति देनेवाले थोड़ेहीसे उदाहरण दिये हैं। इस तरहके फिल्मोंके निर्माणमें आये दिन ऐसी घटनायें हुआ ही करती हैं।

७-जंगलमें

हवाई जहाज़द्वारा समुद्र, रेगिस्तान और जंगल पार करते समय साहसी उड़ाके बहुधा दुर्घटनाओंमें फँस जाते हैं। रास्तेमें जहाज़ टूट जानेपर इन वीरोंको कैसी आपत्तियों और कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है, उसका हाल नीचे लिखी घटनासे बहुत कुछ मालूम हो जायगा।

जी० डब्ल्यू० टी० गरुड

इस घटनाके नायक मिस्टर जी० डब्ल्यू० टी० गरुड हैं। विगत महायुद्धके अवसरपर आपने अनेक वीरतापूर्ण कार्य किये थे। गेलीपोलीके भीषणयुद्धमें भी भाग लिया था। 'अचीबाबा'के युद्ध-स्थलमें

आप बुरी तरहसे घायल हो गये थे और मुर्दा समझे जा कर दफ़नानेके लिए भेज दिये गये थे। पर सौभाग्यसे एक डाक्टरने आपको जीवित पाया। महायुद्धके बाद आप फ्रांसकी हवाई सेनामें भेज दिये गये और वहाँसे जर्मन पूर्वी अफ्रीका और मिश्र आदिमें भेजे गये।

नीचे लिखी घटना आपहीके शब्दोंमें उद्धृत की जा रही है—

१९१६ में जब पूर्वी अफ्रीका पहुँचा तब मेरी अवस्था केवल तेइस वर्षकी थी। मैं गेलीपोलीके युद्धमें बुरी तरहसे घायल हो चुका था। उड़ना सीखकर मैंने फ्रान्सकी शाही उड़ाकू सेनामें नौकरी कर ली थी। उस समय डाक्टरोंने मुझे गरम जल-वायुमें जाकर रहनेकी सलाह दी थी। मैं तो इसके लिए कमर कसे तैयार ही बैठा था। आख़िर पूर्वी अफ्रीकामें उड़ाकू सेनाके २६ वें स्क्वाडरनमें नियुक्त कर दिया गया।

मैं दो और पाइलटोंके साथ मोम्बासा पहुँचा। अफ्रीकाके बारेमें मेरे दिमाग़में तरह तरहके ख्यालात मौजूद थे। हमने उसे शिकार खेलनेके लिए बहुत उपयुक्त स्थान समझ रक्खा था। वास्तवमें पूर्वी अफ्रीकामें शिकारकी कोई कमी थी भी नहीं। उस समय हमारे शत्रुओंने आजकलके टेंग्यानिका प्रदेशपर क़ब्ज़ा जमा रक्खा था। उन लोगोंने हमें शिकार खेलनेमें बाधा डाली। इसके बाद हमें शीघ्र ही युद्ध-घोषणा करनी पड़ी।

टूलूके पास झाड़ियोंसे घिरे हुए मैदानमें हम अपने जहाज़ वगैरह उतारा करते थे। टूलू उलुगुरु पर्वतके ठीक दक्षिणमें स्थित है।

एक दिन तीसरे पहर मैं लोगीलोगी नामक स्थानपर बम-वर्षा करनेके लिए अपने जहाज़से रवाना हुआ।

लोगीलोगी सफीजी नदीके दाहिने किनारेपर स्थित है और हमारे जहाज़ उतारनेकी जगहसे लगभग ४५ मील दक्षिणमें है। हमारी पैदल सेनाकी एक टुकड़ी बायें किनारेतक पहुँच चुकी थी।

टूटूसे पश्चिमकी तरफ उड़नेपर ३० मीलतक और दक्षिणमें भी कुछ दूरीतक हम अपने सहयोगियोंसे सम्बध बनाये रख सकते थे। उस बीचमें अगर हमें मजबूरन कहीं उतरना भी पड़ता तो अपने आदमियोंहीके बीच उतरते परन्तु जवानीके जोश और उत्साहमें मुझे इसका कोई ख्याल न रहा और सीधा दक्षिणकी ओर उड़ चला। वह भाग बिलकुल निर्जन और घने अफ्रीकन जंगलोंसे भरा हुआ था।

लोगीलोगी पहुँचनेके तीन मील पहले ही मेरा इंजन बिगड़ने और खरखराने लगा। मैंने उसका टेंटुआ (Throttle) या वायु-मार्ग ठीक किया, परन्तु कुछ नतीजा न निकला। प्रोपेलर एकदम रुक गया और जहाज़ ८०० फीटकी ऊँचाईसे ६०० फीटपर आ गया। मैंने हरी घासके एक सुन्दर अण्डाकार मैदानमें जहाज़ उतारनेका इरादा किया। परन्तु वहाँसे २०० फीटकी ऊँचाईपर मुझे अपने बमके गोलोंका ख्याल आया। सौ एक एक पौंडके, चार पचीस पचीस पौंडके और दो पेट्रोल बमोंको साथ लेकर जहाज़को उतारना ख़तरेसे खाली न था। मैंने उन सब गोलोंको एकदम नीचे फेंक दिया। गोलोंके धड़ाकेकी आवाज़के ख़त्म होनेसे पहले

ही मैंने जहाज़की रफ़्तार बहुत कम कर दी थी और मैं उसे अपने पूर्वनिर्वाचित हरे-भरे मैदानकी ओर चलाने लगा था।

ऊपर हवामेंसे वह मैदान बहुत ही आकर्षक मालूम होता था। परन्तु मैं यह देखकर हैरान हो गया कि घास छह फीट ऊँची थी। वह भी पानीसे ढकी हुई। एक अच्छा खासा दलदल था। मेशीन उसके ऊपरतक पहुँच चुकी थी।

वहाँके ज़बरदस्त सन्नाटेसे मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मेरे वहाँ पहुँचते ही एक जंगली चिड़िया बुरी तरहसे चीख पड़ी—शायद मेरे शोर-गुल मचाते हुए जबरदस्ती वहाँ घुस आनेके विरोधमें। परन्तु, उसे क्या मालूम कि म वहाँ आनेके लिए जरा भी उत्सुक नहीं था और कई अच्छे और सुविधाजनक स्थानोंको जानते हुए भी वहाँ उतरनेके लिए मजबूर हुआ था। जहाज़से उतरनेके पहले मैं कुछ देर तक गम्भीरतापूर्वक यही सोचता रहा कि मुझे अब क्या करना चाहिए।

उतरनेके पहले मैंने अपना रिवाल्वर, थोड़ी-सी गोलियाँ, पानीकी बोतल, कुनैनकी शीशी, सारडीन मछलियोंका डिब्बा और चाकलेटका एक पैकेट अपने साथ ले लिया।

उतरनेके साथ ही मैं यह बात अच्छी तरह समझ गया कि मुझे अब काफ़ी देर इधर उधर मारे मारे फिरना होगा। किसी दूसरे जहाज़के उधरसे गुज़रने और मुझे सहायता पहुँचानेकी आशा ही न की जा सकती थी। यह भी बिलकुल निश्चितही-सा था कि कमसे कम ४० मीलके इर्द-गिर्द कोई बस्ती न थी। जहाज छोड़नेसे पहले मैंने कुतुबनुमा और घड़ीकी तरफ़ देखा पर पीछेसे न मालूम क्या सोचकर उन्हें वहीं रहने दिया।

जहाज़से उतरकर उलूगुरु पर्वत तथा उसके आसपास दौड़नेवाली फौजी सड़कको पकड़नेके लिए मैं उत्तरकी तरफ बढ़ा। उस समय मुझे पश्चिमकी तरफ पड़ी हुई अपनी पैदल सेनाकी टुकड़ीका ख्याल ही न आया। दोनों तरफ़का फ़ासला क़रीब क़रीब बराबर ही था।

उस समय पौने पाँच बज चुके थे। मैंने शीघ्रसे शीघ्र सबसे नज़दीकवाले पेड़ोंतक पहुँचनेकी कोशिश की। पेड़ उस जगहसे २०० गजकी दूरीपर थे। वहाँतक पहुँचनेके लिए पानीमें उतरना पड़ा, परन्तु सौभाग्यसे वह मेरे घुटनोंसे ज़्यादा न था। उससे तीन दिन पहले ही मैं मलेरिया बुखारसे पीड़ित हो चुका था, परन्तु मजबूरी थी। वर्षाके दिन होनेकी वजहसे चारों तरफ पानी भरा हुआ था। पेड़ोंके पास पहुँचनेपर माळूम हुआ कि वहाँ पानी बहुत कम है।

रास्ता बहुत तंग था झाड़ियोंसे भरा हुआ। मुझे बार बार पीछे लौट कर नया रास्ता ढूँढ़ना पड़ता था। मैं मुश्किलसे आधा मील आगे बढ़ा होऊँगा कि रात हो गई और आगे बढ़ना नामुमकिन हो गया। बीस गजके फासलेपर एक भद्दी शकलका चार फ़ीट ऊँचा जानवर मेरे मुक़ाबिलेके लिए मौजूद था। उसके दाँत बहुत भीषण माळूम होते थे। मैं जंगली पशुओंके बारेमें बिलकुल अनभिज्ञ था। यह भी न जानता था कि मेरे सामनेवाला पशु ख़तरनाक है या नहीं। परन्तु फिर भी मैंने निकटतम पेड़के ऊपर चढ़ जानेहीमें अपनी भलाई समझी। जानवर भी पासकी झाड़ियोंमें ग़ायब हो गया। उसके जाते ही फिर एक ज़बरदस्त सन्नाटा छा गया और मैं एक बार फिर काँप गया।

पेड़ चुननेमें मैं ज़रा जल्दी कर गया था। उस वक़्त उसके

बारेमें ज्यादा फ़िक्र भी न थी। दूसरा पेड़ देखनेके पहले ही बहुत काफी अँधेरा हो गया। इसलिए मैं जहाँ था वहीं आराम करनेकी फ़िक्र करने लगा। अपने सामानको आसपासकी डालियोंमें लटका दिया और खुद दो शाखोंके जोड़पर टिक गया। परन्तु मैं जितने ही ज़्यादा आरामसे बैठनेकी फ़िक्र करता, पेड़की शाखें मेरे साथ उतना ही असहयोग करतीं।

सात बजेके करीब बादल बड़ी ज़ोरसे गरजने लगे और पानी बरसने लगा। आधे मिनटमें मैं बिलकुल शराबोर हो गया। एक घंटेतक पानीका वेग कम न हुआ। पानी बंद होते ही मच्छड़ों और कीड़े-पतिंगोंके झुंडके झुंड निकल आये। उस वक्त मैं नेकर पहने हुए था। मेरे घुटने बिलकुल खुले हुए थे और मच्छर सबके सब बहुत भूखे थे। बस, समझ लीजिए कि क्या हालत हुई होगी। मच्छड़ोंने बाहर निकलते ही ज़बरदस्त राग अलापना शुरू किया। बीच-बीचमें मेंढक भी उसमें सहयोग देने लगते थे। उस समय मुझे अपनी टूटूवाली झोंपड़ी और उसमें पड़ी हुई चारपाईकी बहुत याद आई, परन्तु मनको यह कहकर समझाया कि कल राततक तो वहाँ ज़रूर ही पहुँच जाऊँगा।

रातके नौ बजे कहीं दूरपर सिंहकी दहाड़ सुनकर मेरे होशोहवास ग़ायब हो गये। मैंने हड़बड़ाकर अपनी पिस्तौल कसकर पकड़ ली। उस समय भी मैंने अपने आपको यह कहकर समझाया कि वह भद्दी शकलका जानवर जो थोड़ी देर पहले मेरे सामने आकर खड़ा हो गया था, शेरको आकर्षित करनेके लिए काफी था। उसके रहते शेरको मेरी तरफ़ आनेका मौक़ा ही न मिलेगा। थोड़ी देरमें सिंहकी

दहाड़ ख़त्म हो गई और उसके साथ ही मच्छरोंका राग भी।—एक बार फिर वही गम्भीर और डरावना सन्नाटा!

दस बजेके करीब मैंने झपकी लेनेकी बड़ी कोशिश की। मुझे आँखें बंद किये हुए कुछ सेकंड ही बीते होंगे कि पासकी एक शाखके हिलनेसे वे फिर खुल गईं। उस समय बादल कुछ खुल गये थे और चन्द्रमा निकलकर चारों तरफ़ अपना प्रकाश फैला रहा था। मेरे पेड़से तीन फ़ीटके फ़ासलेपर दो हरे हरे बल्बसे चमकते हुए मालूम हुए। मैंने अपने रिवाल्वरको मज़बूतीसे पकड़ लिया। मेरा सारा शरीर थर थर काँप रहा था। वे दोनों आँखें मेरे पेड़के चारों तरफ़ चक्कर काट रही थीं। ज़रा-सी भी आवाज़ न होती थी। मुझे शक हुआ कि मैं अपनी घबड़ाहटमें स्वप्न देख रहा हूँ। मैंने कई बार आँखें बंद कीं और कई बार खोलीं। यह निश्चय करना चाहता था कि रोशनी वास्तविक है या काल्पनिक। एक बार मैंने रिवाल्वर दाग़ कर गोली चलानेकी बात भी सोची, परन्तु पानीके कारण और सब चीजोंकी तरह वह भी भीग गया था। मुझे डर लगा कि शायद रिवाल्वर चले ही नहीं। उसे न चलाना ही अच्छा था। जब तक चलाया नहीं जायगा तब तक उसका भरोसा तो बना रहेगा!

इस बीचमें वे दोनों आँखें बराबर चक्कर काटती रहीं। कभी कुछ सेकंडोंके लिए ग़ायब हो जातीं और कभी फिर दिखाई पड़ने लगतीं। लगभग दस मिनट तक यही होता रहा। लेकिन वे दस मिनट दस घंटे-से मालूम हुए। मुझे फिर कपकपी लग आई और गिरने तककी नौबत आ गई। मीलों दूर तक मनुष्यका कहीं नामोनिशान न था।

परन्तु यह ख्याल आते ही भीतर न मालूम कैसे मैं बहुत उत्तेजित हो गया और बड़े ज़ोरसे चीख़ पड़ा। मैंने चीखनेकी कल्पना तक भी तो न की थी! मेरे चीखते ही पेड़के नीचे भी सरसराहटकी-सी आवाज़ हुई। दोनों आँखें ग़ायब हो गई थीं,—चीता लौट गया था।

इस तरह डर जानेपर मैं आप ही आप बहुत शर्मिन्दा हुआ। मैंने साहस करके एक बार फिर उतनी ही तेज़ी और ज़ोरसे चिल्लानेकी कोशिश की और ज़ोर ज़ोरसे गाने लगा। उस वक्त मुझे कोई गाना भी ठीक ठीक याद न आया। बचपनमें पढ़ी हुई कविताकी एक कड़ी याद थी, उसे ही बार बार ज़ोर ज़ोरसे दोहराने लगा। फिर तो मुझे ऊटपटाँग उल्टा-सीधा जो भी गाना आया गाता रहा। गानेसे मुझमें आत्म-विश्वास फिरसे लौट आया।

कुछ देरके बाद मुझे अपने गानोंपर आप ही आप हँसी भी आ गई। सोचिए तो सही, मैं उस अंधकारपूर्ण बियाबान जंगलमें ज़मीनसे चौदह फीटकी ऊँचाईपर पेड़की डालमें टँगा हुआ था। चारों तरफ़ जंगली जानवरोंसे घिरा हुआ था। कपड़े-लत्ते सभी भीग गये थे। मेंढक और मच्छरोंके शब्द, जंगली जानवरोंकी डरावनी आवाज़ें,—कभी सब एक साथ बोलने लगते और कभी एकदम बिलकुल सन्नाटा छा जाता। और मैं गाने गा रहा था विधाताके विश्वके सौन्दर्य और उसकी चमक-दमकके!

प्रातःकाल तीन बजे बड़ी भूख मालूम हुई। जहाजसे उतरनेके पहले मैं दो बार अच्छी तरह खाना खा चुका था। मैंने अपने चाकलेटके पैकेटमें हाथ लगानेके लोभका बहुत कुछ संवरण

किया परन्तु पानी पिये बिना न रहा गया। अरुणोदयके पूर्व एक बार फिर गम्भीर सन्नाटा हो गया। प्रातःकाल ब्राह्म-मुहूर्तमें धीमी धीमी हवा चलने लगी और सब कीड़े-मकोड़ोंका चिल्लाना आप ही आप बंद हो गया।

आँखसे दिखाई देने लायक उजेला होते ही मैं पेड़से उतर पड़ा और अपने सब सामानको फिरसे दुरुस्त किया। उस वक्त शायद छह बजा होगा। मेरी ख़ाकी कमीज, नेकर और पट्टियाँ सभी बुरी तरहसे भीग गये थे। उसी हालतमें मुझे दो नालोंको तैरकर पार करना पड़ा। ढाई बजेके क़रीब मैं एक विशालकाय जलसे उमड़ती हुई नदीके पास जा पहुँचा। वह पूरबसे पश्चिमकी ओर बह रही थी।

मैंने उसे भी पार करना तय किया। घूम-घामकर एक ऐसी जगह चुनी जहाँ पानीकी धार बहुत कम चौड़ी थी। दोनों ओर घने जंगल थे। कपड़ोंको इस पारसे उस पार फेंकना असम्भव था। मैंने अपनी रिवाल्वर और खानेकी चीज़ोंको कोटकी जेबमें रख लिया और उसको तह करके गर्दनमें लपेट लिया जिसमें रिवाल्वर सूखी बनी रहे। जूतोंको पेटीके पीछे बाँध दिया।

उस समय और कोई चारा भी न था। मैं मुश्किलसे चन्द गज़का फ़ासला ही तय कर पाया था कि मुझे दस गज़की दूरीपर मगर-मच्छकी नाक देख पड़ी। उसे देखकर मुझे कुछ ऐसी घबराहट हुई कि मेरी गरदनमें लिपटा हुआ कोट खुल गया और रिवाल्वर तथा अन्य दूसरी चीज़ोंको लिये हुए पानीमें डूब गया। ख़ैर तो यह हुई कि मैं जीता-जागता किनारेपर जा पहुँचा। पानीके बाहर पहुँचकर मैंने देखा कि मगर-मच्छ आसपासके पानीको मथता हुआ उसी तरफ़ बढ़

रहा है जहाँ कुछ देर पहले उसने मुझे देखा था। मुझे बाहर पहुँचे हुए कुछ ही मिनट बीते होंगे कि झाड़ियोंमें बड़ी हलचल-सी हुई और एक दरियाई घोड़ा फुफकारता हुआ मेरी तरफ झपटा। मैंने ज़ू (Z00=अजायबघर) के अलावा और कहीं दरियाई घोड़ा (hippo) देखा भी न था। मैं ख़रगोशकी-सी तेज़ीसे पासहीके एक पेड़पर चढ़ गया। मेरे दौड़नेसे जो शोर-गुल हुआ उससे उसका ध्यान बँट गया। वह कुछ देर तक मेरे पेड़के पास खड़ा रहा और फिर शायद निराश होकर दूसरी तरफ़ चला गया।

अब न मेरे पास कोई हथियार था, न खाना और न कम्पास। वहाँ चढ़े चढ़े भी काम न चल सकता था। मुझे फिर जंगलके अन्दर जाना पड़ा। उफ्! वह कितना घना और भीषण था! एक एक कदम आगे रखना दुश्वार था! एक घंटेमें मुश्किलसे १०० गज चला गया होगा। झाड़ियाँ, मेरे मुँह हाथ और पैरोंमें निर्दयतापूर्वक काँटे भोंक देती थीं। इतनेमें वहाँ पानी भी बरसने लगा और दो घंटे तक मूसलाधार वृष्टि होती रही।

पानी रुक जानेपर मैं फिर पश्चिमकी तरफ चलने लगा। इस बार मुझे एक पगडंडी-सी मिल गई,—जो शायद शिकारियोंके आने जानेसे बन गई थी। इसके सहारे चलनेमें कुछ सहूलियत हो गई। मेरे पेटमें चूहे कूदने लगे थे। भूखकी ज्वाला शान्त करनेके लिए कहीं कोई चीज़ न दिखाई देती थी। उसी हालतमें मेरा सिर भन्नाने लगा और मुझे बुखारकी-सी शिकायत मालूम हुई। वह पगडंडी भी एक दलदलके पास जाकर ख़त्म हो गई। उसमें भी घुटनों घुटनों तक पानी भरा हुआ था। मैंने पासके एक पेड़पर चढ़कर इधर उधर

निगाह दौड़ाई। उस पोखरेको मँझाकर पार करनेके अलावा और कोई चारा ही न था। पेड़से उतरकर मैं एक ऊँची-सी सूखी हुई ज़मीनपर चढ़ा परन्तु तबियत ठीक न होनेकी वजहसे खड़ा न रहा गया और गिर पड़ा। एक घंटेके बाद फिर सूखी ज़मीनपर पहुँच पाया।

जब मैं उस खुश्कीमें बैठकर सुस्ता रहा था तब एक हवाई जहाजकी आवाज़ सुन पड़ी। आवाज़ सुनते ही मेरे शरीरमें बिजली-सी दौड़ गई। मैंने जहाज़को इशारा करनेके लिए अपनी कमीज़ फाड़ डाली और उसे हिलाहिलाकर संकेत किया। जहाज़ एक मीलके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रहा और मुझे अकेला छोड़कर विलीन हो गया।

* * *

दोपहर बाद मैं फिर रवाना हुआ। इस बार जंगल ज़रा खुला हुआ था। कँटीली झाड़ियोंके अलावा और कोई पेड़ वगैरह न था। दो बजेके करीब मुझे दो नाले फिर तैरकर पार करने पड़े। दूसरे नालेमें मेरी पट्टियाँ बह गईं। अब मेरी टाँगें बिलकुल नंगी थीं और काँटों तथा पैनी घाससे रक्षा न कर सकती थीं। इनके साथ साथ मक्खियोंकी भी कोई कमी न थी। एक तरहकी मक्खी तो बुरी तरह परेशान कर रही थी। देखनेमें बहुत दुबली-पतली पर खून पी कर ही पिंड छोड़ती थी। परन्तु उसमें अच्छाई केवल एक थी कि वह अन्धी थी। और मेरी गर्दनमें दर्द अलग हो रहा था।

खानेकी समस्या अभीतक हल न हो पाई थी। पानीकी कमी न थी, यद्यपि उसे अच्छा और पीने योग्य नहीं कहा जा सकता। मैंने कई पेड़ोंपर चढ़कर चिड़ियोंके घोंसले और उनके अंडे ढूँढ़नेकी चेष्टा की पर वह निष्फल हुई। चार बजेके करीब एक नाला और

पार किया पर उसकी दूसरी तरफ इतनी घनी झाड़ियाँ थीं कि मुझे लौटकर कुछ दूर आगे बढ़कर एक बार फिर तैर कर पार करना पड़ा। उस दिन मैं इस तरहसे सात बार तैर चुका था। खाई और खन्दकोंकी तो कोई बात ही नहीं।

अब मैं फिर आराम करनेके लिए बैठ गया। अभी सूर्यास्त होनेमें बहुत काफी देर थी। धूप छिटकी हुई थी। मैंने कमीज़ और नेकर उतारकर धूपमें सूखनेके लिए फैला दिये। मैं निश्चिन्त बैठा हुआ था कि पासकी झाड़ियोंमें हलचल-सी हुई और एक दूसरा दरियाई घोड़ा देख पड़ा। उस समय इत्तफ़ाक़से पासमें कोई पेड़ वगैरह भी न था। उस जन्तुको देखते ही मैं बेतहाशा दौड़ा। ३०० गज़के फ़ासलेपर एक पेड़ था। बस चटपट चढ़ गया। मैं बड़ी देरतक वहीं टँगा रहा। जब मुझे उसके चले जानेका बिलकुल विश्वास हो गया तब नीचे उतरा। उस पेड़में रात बिताने लायक कोई उपयुक्त जगह थी भी नहीं। अँधेरा हो चला था। जल्दी जल्दी कुछ बड़ी बड़ी पत्तियाँ तोड़कर ज़मीनपर बिछाईं और सोनेकी तैयारी करने लगा।

परन्तु नींद काहेको आती? मैं पेड़का तकिया लगाकर बैठ गया। कमज़ोरी पैदा करनेवाली तरह तरहकी बातें मेरे दिमाग़में घर करने लगीं। उस समय मैंने फिर गानेकी कोशिश की। दो-तीन बन्दनायें याद थीं। उनसे वक्त काटनेके साथ ही कुछ ढाढ़स भी मिला। मेरा सिर फिर भन्नाने लगा था। उस समय मुझे कुनैनकी गोलियोंकी याद आई। गोलियोंवाली शीशी इत्तफ़ाक़से अभीतक मेरे पास सुरक्षित थी। मैंने जैसे तैसे एक गोली निगल ली। लेकिन उलटे लेनेके देने पड़ गये। मैं बहुत ज़्यादा बीमार हो गया।

रातको मेरा बुख़ार शायद बहुत तेज़ रहा। एक बार ५०० गज़के फ़ासलेपर सिंहकी गर्जना सुनाई पड़ी। हाथियोंकी चिंघाड़ तो कई बार सुनी। ख्याल आता है कि मैं शायद दो-तीन घण्टे तो ज़रूर ही बेहोश रहा होऊँगा। मैं अब अपनी ज़िन्दगीसे ऊब उठा था। उठकर बैठने और चलने-फिरने तककी हिम्मत न रह गई थी। हाँ, किसी हिंसक जन्तुके मुखका ग्रास बननेकी नौबत आनेपर शायद पेड़पर चढ़ जाता।

राम राम करके दूसरी रात कटी। सुबहके वक्त मुझे थोड़ी देरके लिए नींद आ गई। उठनेपर मैं अपनी कमीज़ और नेकरकी तलाशमें चला। उस दुष्ट हिप्पो (दरियाई घोड़े) के डरसे मैं दोनों कपड़ोंको मैदानहीमें छोड़ आया था। परन्तु निश्चयपूर्वक ठीक उसी जगह पहुँचनेपर भी मैं उन्हें वापस न पा सका। शायद बन्दर वगैरह उन्हें तिड़ी कर ले गये होंगे। अब मेरे पास नाम-मात्रके कपड़े बाकी रह गये थे। उन्हींमें गुजर करनी थी।

फिर वही गश्त। रास्तेका पता न लगता था। अन्दाज़से ही आगे बढ़ता था। दोपहरको मैं एक खुली जगहमें पहुँचा। वहाँ दो ज़बर-दस्त भैंसे मिले। मैं डरके मारे चुपचाप खड़ा हो गया। सौभाग्यसे वे दोनों अपने रास्ते चले गये।

तीसरे पहर मैं जबरदस्त घनी झाड़ियोंके जंगलमें पहुँच गया। वे बहुत दूर तक फैली हुई थीं। एक पेड़पर चढ़कर इधर उधर निगाह दौड़ाई। उन्हें पार करनेके अलावा और कोई उपाय न था। वह जंगल शायद आध मील चौड़ा होगा। उसके पार एक खुला हुआ मैदान था और उस मैदानसे कुछ मीलकी दूरीपर उद्गुरु पहाड़ देख

पड़ा। उस पहाड़ तक पहुँचनेके लालचमें मैं झाड़ियोंके जंगलमें घुस गया। सारा बदन काँटोंसे छिद गया। बीच बीचमें पतावरकी तरह एक घास भी मिलती थी जिसकी पत्तियाँ तलवारकी तरह पैनी थीं। उनसे मेरा शरीर कई जगह कट भी गया। आगे चलकर साफ मैदान मिलेगा इसी लालचमें बराबर बढ़ता चला गया। परन्तु भाग्यको तो कुछ और ही मंजूर था। वहाँ पहुँचकर देखा कि मैं एक दरियाके किनारेपर पहुँच गया हूँ। वह कमसे कम सत्तर गज़ चौड़ा तो ज़रूर ही होगा। उसे पार करना मेरे काबूके बाहर था। मैं निराश होकर गिर पड़ा।

खानेका प्रश्न बड़ा टेढ़ा था। दो दिनसे भोजनके दर्शन तक न हुए थे। घास चबाकर उदर-पूर्ति करनेकी चेष्टा की पर ओसके चाटनेसे कहीं प्यास बुझती है? मैं फिर लौटा। दरियाके किनारे किनारे उत्तर-पश्चिमकी तरफ बढ़ने लगा। फिर मुझे एक हवाई जहाजकी-सी आवाज़ मालूम हुई। वह चक्कर काटता हुआ दक्षिणकी ओर चला गया। चार बजेके लगभग मैं एक खुले हुए मैदानमें जा पहुँचा, वह शायद एक मील लम्बा होगा। उसके बीचोंबीच केवल एक पेड़ था। मैंने गोधूलिके समय तक पेड़के पास पहुँच जानेका निश्चय किया। पेड़ तक पहुँचनेमें मुझे कई बार छिछला पानी मँझाना पड़ा। परन्तु पेड़ खुश्क ज़मीनपर था। रात होते होते मैं उसके पास पहुँच गया।

पेड़के पास पहुँचनेपर मुझे बंदरोंकी किटकिटाहट सुनाई पड़ी। पूरे एक दर्जन थे पर सबके सब पेड़परसे उतरकर पासवाली घासकी तरफ जा रहे थे। उनके वहाँसे चले जानेपर मैंने एक संतोषकी

साँस ली और पिछली रातकी तरह पत्तियाँ वगैरह बिछाकर बिछौना बनाया।

रातके पहले दो घंटे बड़ी मुसीबतमें कटे। मानसिक वेदनाने परेशान कर दिया। रह-रहकर यही ख़्याल आता कि अगर मैं यहीं मर गया तो कभी कोई मेरी लाश भी पा सकेगा या नहीं। आज मैं कोशिश करके भी न गा सका। दो-तीन घंटेके बाद मुझे नींद आ गई। नींद थी या बेहोशी, यह नहीं बता सकता। लेकिन सुबह होते ही होश आया।

* * *

सोकर उठनेपर शरीर बहुत कुछ स्वस्थ मालूम हुआ, परन्तु उठकर खड़े होनेपर बहुत ज़्यादह कमज़ोरी मालूम हुई। आठ बजेके क़रीब मैं फिर पिछले दिनोंकी तरह आगे बढ़नेके लिए चल पड़ा। दो-पहरतक मैं फिर एक जंगलमें जा निकला। यहाँ मुझे अपने ऊपर पंखोंकी फड़फड़ाहट मालूम हुई। दो बड़े गिद्ध मेरा पीछा कर रहे थे। उन्हें देखकर मुझे बड़ा गुस्सा आया और पेड़की डालियाँ तोड़ तोड़ कर उनके ऊपर फेंकने लगा।

जंगल पार करनेपर फिर एक झील मिली। दो बज चुके थे। मैंने अन्दाज़ा लगाया कि एक घंटेमें उसे पार कर लूँगा। परन्तु थोड़ी दूर चलनेके बाद मुझे आराम करनेकी ज़रूरत महसूस होती थी। गिद्ध आज भी मेरा पीछा कर रहे थे। पानी कभी कभी मेरी कमर तक आ जाता था।

इस झीलको पार करते समय मैंने किनारेकी तरफ़ बाँसका बाड़ा-सा देखा। वैसा बाड़ा मनुष्योंके सिवा और कोई न बनायेगा, यह ख़्याल

आते ही मेरी जानेमें जान आई। शायद मैं किसी अफ्रीकन गाँवके निकट पहुँचनेवाला था। मैंने अपनी सारी ताकत बटोरकर 'हलो हलो' करके पुकारना शुरू किया। उस बाड़ेके पास एक बर्त्तनमें झींगा मछलियाँ रक्खी हुई थीं। बिना कुछ कहे-सुने मैंने एक निकाल ली और उसे चटपट मार डाला। बीचसे फाड़कर उसके दो टुकड़े कर डाले और कच्चा खानेकी कोशिश करने लगा, पर खा न सका और जी मिचलाने लगा।

तबियत ठीक होनेपर मैंने फिर ज़ोर ज़ोरसे आवाज़ें लगाईं। गिद्ध अब भी मेरे पीछे थे। मैंने मछलीके दोनों टुकड़े उन्हें दिखाकर बहुत दूरपर फेंक दिये। मैं अभी तक पानीहीमें था। अपनी आवाज़का कुछ नतीजा निकलता न देख बड़ी निराशा हो रही थी। आगे बढ़ना दुस्वार हो रहा था। इसी बीचमें मैंने किसीको पुकारते हुए सुना। आवाज़ सुनते ही शरीरमें फिर कुछ ताक़त लौट आई। परन्तु वह आवाज़ कई मीलकी दूरीसे आती हुई मालूम पड़ी। मैंने फिर अपनी तमाम ताक़त लगाकर चिल्लाना शुरू किया। परन्तु फिर भी कुछ विशेष नतीजा निकलता नज़र न आया। अब मैं झीलसे निकलकर ऊँची घासके मैदानमें आ गया था। उस घासमें आसपासकी कोई भी चीज़ दिखाई न देती थी।

× × ×

मैं बहुत ही निराश हो चला था। एकाएक मेरी दाहिनी ओरकी घासमें हरकत हुई। मैं घबड़ा गया। परन्तु मेरी खुशीका ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि दो हबशी अपने भाले लिये हुए मेरे सामने खड़े हैं और सलाम कर रहे हैं।

मेरी शक्ल-सूरत और कपड़े-लत्ते देखकर वे दोनों ठिठक गये। मैं एक बनियान और जाँघिया पहने हुए था। पैरोंमें जूते अभीतक बाकी थे। सारा शरीर कीचड़से लथपथ था। बीचबीचमें खूनके दाग़ लगे हुए थे। मेरे हाथमें हरी लकड़ीका डंडा था और गर्दनमें कुछ पत्तियाँ चिपटी हुई थीं।

मैंने टूटी फूटी स्वाहिली भाषामें उन्हें समझाया कि मैं 'एक बड़ी चिड़िया' का सरदार हूँ। मेरी 'बड़ी चिड़िया' रास्तेमें बीमार हो गई, और मैं तीन दिनसे बराबर पैदल चल रहा हूँ। खानेको कुछ भी नहीं मिला है। वे दोनों मुझे सहारा देकर चटपट अपने गाँवको ले गये। रास्तेमें एक घंटा लग गया। पाँच पाँच मिनटके बाद वे लोग मुझे आराम करने देनेके लिए ठहर जाते थे।

किसी तरहसे कराहता हुआ मैं उनके गाँवमें पहुँच गया। गाँवमें फूसकी एक बड़ी-सी और एक दर्जनके लगभग छोटी झोंपड़ियाँ थीं। मैं बड़ी झोंपड़ीमें पहुँचाया गया। वहाँ पहुँचते ही मैं धम्मसे ज़मीनपर बैठ गया। उन लोगोंने सहारा देकर मुझे चटाईके ऊपर बैठाया और चटपट गरम गरम भोजन लाकर मेरे सामने रख दिया। गरम गरम लपसी थी। मैं तीन प्याले खा गया। उसके बाद उन्होंने मुझे एक मछली पकाकर खिला दी। स्वादिष्ट न होनेपर भी मैं उस वक्त उसे बड़े स्वादसे खा गया।

उसके बाद मुखियाकी स्त्रीने पानी लाकर मेरे सारे शरीरको धोया। मुझे बड़ी तकलीफ़ हुई, लेकिन मजबूरी थी। शरीर धोनेके बाद मेरे ज़ख्मोंपर एक तरहका तेल चुपड़ दिया गया। इन सब कामोंमें रात हो गई।

मैं गहरी नींदमें बेहोश हो गया। आधी रातको कुत्तोंके भोंकनेके अलावा और किसी बातकी याद नहीं। बादमें मुझे मालूम हुआ कि मेरे वहाँ पहुँचते ही मुखियाने एक हरकारे द्वारा पासहीकी सहायक-सेनाके केम्पको मेरे पाये जानेकी इत्तिला करा दी थी। केम्प आठ मीलकी दूरीपर डिथूमी नामक स्थानपर था।

वे लोग मेरी ख़बर पाते ही फ़ौरन चल पड़े। आधी रातको जब मैं कुत्तोंके भोंकनेकी आवाज़से चौंक पड़ा, तब वे सब मुखियाके घर आ पहुँचे थे। उस पार्टीमें दो अँग्रेज़ और लगभग एक दर्जन हबशी कुली थे। मुझे फौरन ही थोड़ी बरांडी पिलाई गई और मैं फिर बेहोश होकर सो गया। अगले दिन मेरी नींद सुबह दस बजे खुली। मुझे १०२ डिगरी बुख़ार था और सारा बदन दर्द कर रहा था। मुझे थोड़ा-सा मुरग़ीका शोरबा दिया गया।

मुझे स्ट्रेचरपर लादकर वहाँसे ले जाया गया। रास्तेमें एक नदी पार करनी पड़ी। रस्सोंका पुल बनाया गया था। मुझे बड़ी सावधानीके साथ पुलद्वारा नदीके पार पहुँचाया गया और रात होते होते डिथूमीके अस्पतालमें भर्ती करा दिया गया।

८—ज्वालामुखीके गर्भमें

पाश्चात्य वैज्ञानिक मनुष्य-समाजकी ज्ञानवृद्धिके लिए स्वयं मौतके मुँहमें प्रवेश करनेसे भी नहीं चूकते। चार वर्ष पूर्व फ्रेंच वैज्ञानिक आर्पा किरनरने इस कथनको प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखाया। जिस समय ज्वालामुखी पर्वत अग्नि उगलना शुरू करते हैं उस समय क्या होता है, यह जाननेके लिए अनेक वैज्ञानिक प्रयत्न कर चुके थे। परन्तु, किसीने भी ज्वालामुखीके गर्भमें उतरकर इस बातको जाननेकी चेष्टा नहीं की, परन्तु आर्पा किरनर ज्वालामुखी पर्वतके रहस्यका उद्घाटन

ज्वालामुखीके गर्भमें

करनेके लिए यूरोपके एक अत्यंत भीषण और जलते हुए ज्वाला-मुखीके गर्भमें उतरे और उन्होंने उसके अन्दर ८०० फीटकी गहराई

तक जानेमें सफलता प्राप्त की। वहाँसे वे उसके अन्दरके चित्र, वहाँ पाई जानेवाली गैसोंके नमूने आदि भी लानेमें सफल हुए।

भूमध्य-सागरमें इटलीके समुद्र-तटके पास सिसलीद्वीपमें स्ट्राम्बोली नामक ज्वालामुखी है। इसे भूमध्य सागरका 'प्रकाश-स्तम्भ' भी कहा जा सकता है। मि० करनर इसी ज्वालामुखीके गर्भमें उतरे थे। विगत कई वर्षोंसे वे उसके अन्दर उतरनेकी चेष्टा कर रहे थे पर सम्पूर्ण आयोजनोंका ठीक ठीक प्रबंध न हो सकनेके कारण निराश होना पड़ता था, फिर भी वे चुपचाप बैठनेवाले आदमी न थे। निरन्तर प्रयत्न करते रहे, और अन्तमें उन्होंने इस महा भीषण कार्यमें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

जिस समय उन्होंने ज्वालामुखीमें प्रवेश किया था वह अपने पूरे वेगसे अग्नि और लावा उगल रहा था। हमारे और आप जैसे व्यक्तियोंकी तो उसके पास फटकने तककी हिम्मत नहीं हो सकती थी, उसके अन्दर जाना तो बहुत दूरकी बात है। परन्तु आधुनिक विज्ञानके चमत्कारसे यह सब सम्भव है। जिस बातके अनुमानमात्रसे हम और आप सिहर उठते हैं वह विज्ञानकी करामातसे सम्भव हो गई है। प्रज्वलित अग्नि और अग्निके भाण्डार ज्वालामुखीमें प्रवेश करना भी इसी विज्ञानकी करामातहीसे सम्भव हुआ।

वैज्ञानिकोंसे एसबेस्टस नामक एक पदार्थ ढूँढ़ निकाला है। यह बहुत ही मज़बूत और आगमें न जलनेवाला पदार्थ होता है। इसीकी सहायतासे आपो किरनर महोदयने ज्वालामुखीके अन्दर प्रवेश किया। एसबेस्टसका एक ८०० फीट लम्बा रस्सा तैयार किया गया था। इसी रस्सेकी सहायतासे वे ज्वालामुखीके गर्भमें उतारे गये थे।

ऊपरकी ओर उड़ते हुए पत्थर आदिके टुकड़ोंसे रक्षा पानेके लिए आपने 'ईस्पात' का शिरत्राण लगा लिया था। आपके कपड़े, जूते, दस्ताने और शरीरपरकी अन्य सभी चीजें भी एसबेस्टसकी बनी हुई थीं। आपकी पीठपर काफी मात्रामें आक्सीजन (Oxygen) गैस लाद दी गई थी। जिससे आप ज्वालामुखीकी विषैली और प्राणनाशक गैसोंमें भी सुगमतापूर्वक साँस ले सकते थे।

इसके लिए आप कई वर्षोंसे प्रबंध कर रहे थे। आपके मित्रोंने आपकी योजना सुनकर आपको 'पागल' कहा था; परन्तु आपने किसीकी आपत्ति अथवा विरोधकी तनिक भी परवाह नहीं की और अग्नि उगलते हुए ज्वालामुखीके अन्दर प्रवेश करना और वहाँपर प्रकृतिकी लीला तथा उसके चरित्र देखने तथा ज्वालामुखीके गर्भके चित्र आदि लेनेका दृढ़ निश्चय कर लिया। इससे पूर्व जिन लोगोंने ज्वालामुखी पहाड़ोंका अध्ययन और निरीक्षण किया था वे उसके अन्दर प्रवेश करनेका साहस नहीं कर सके थे। उन्होंने ज्वालामुखीके शान्त होनेके समय एटना और विस्यूवियस जैसे पर्वतोंके मुखतक यात्रा करके ही अपने आपको सन्तुष्ट कर लिया था। उसके अन्दर प्रवेश करना तो एक ओर रहा, वे उसके प्रज्वलित होनेके समय उसके पासतक जानेका साहस न कर सके थे। ज्वालामुखीमें प्रवेश करनेके पूर्व आर्पा किरनर महोदयने स्वयं कहा था—

"यदि मैं अपनी योजनामें सफल हो गया तो मैं प्रकृतिकी वे लीलाएँ देखूँगा जिन्हें देखनेका संसारमें किसीको भी सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ है। यदि मैं अग्नि उगलनेवाले पर्वत और उसके नीचेके पाताल-लोककी इस अभूतपूर्व यात्रासे सकुशल वापस आ गया तो मैं

अपने साथ पर्वतके गर्भसे अत्यन्त रोचक सामग्री,—ठोस पदार्थ और गैसोंके नमूने लाऊँगा। अतः मैंने प्रयत्न करनेका निश्चय कर लिया।

"मैंने भूमध्यसागरमें सिसलीके उत्तरमें स्थित स्ट्राम्बोलिको अपने प्रयोगके लिए चुना। यूरोप-भरमें केवल यही एक ऐसा ज्वालामुखी है जो सदैव बिना रुके हुए अग्नि वमन करता रहता है। मुझे विश्वास भी था कि इसके गर्भके अन्दर ही मैं मनचाही बातें पा सकूँगा।

"इसके अतिरिक्त यह ज्वालामुखी मेरा पूर्व-परिचित था। मैं कई बार इसका अध्ययन कर चुका था। मैं इसके ऊपर चढ़ चुका था, इसके मुख तक गया था और यह भली भाँति जानता था कि प्रतिवर्ष इसकी चोटीके आकार-प्रकारमें परिवर्त्तन होते रहते हैं। इसके गर्भमें उतरनेके लिए उपयुक्त स्थान ढूँढ़नेके विचारसे मैंने एक बार फिर इसकी यात्रा की और वहाँसे लौटकर मैंने अपनी यात्राका सारा सामान ठीक किया।

* * *

"आवश्यक सामग्रीको स्ट्राम्बोलीकी चोटी तक पहुँचानेमें बड़ी बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। स्ट्राम्बोली पहाड़ समुद्रमें जलके बीचोंबीच सिर उठाये खड़ा है। उसके आसपास ढाल या अच्छा किनारा भी नहीं है। फिर भी पहलेहीसे निश्चित स्थानपर समस्त सामग्री पहुँचाई गई। गिरीकी सहायतासे पर्वतके अन्दर उतरनेका प्रबंध किया गया। अन्दरसे बाहरकी ओर सन्देश भेजनेके लिए मैं अपने हाथमें बिजलीका एक लेम्प ले गया था, बिजलीके तार मुझ तक एसबेस्टसके रस्सेके सहारे पहुँचाये गये थे।

"ज्यों ज्यों मैं उस भीषण अग्नि उगलनेवाले पर्वतके भीतर उतारा जाने लगा त्यों त्यों अपने कार्यकी भीषणता और अपने जीवनके खतरेका अनुभव करने लगा। मैं यह भी अच्छी तरहसे जानता था कि मेरे ज़िन्दा वापस आनेमें भी सन्देह है। मेरी समस्त सामग्रियाँ अपर्याप्त सिद्ध हो सकती हैं। मेरा हृदय और फेफड़े गैसोंकी गर्मी और उसके प्रभावको शायद न सहन कर सकें।

"मैं ज्वालामुखीके गर्भमें लटका हुआ था, उस समय यह नहीं जानता था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैं यह भी नहीं जानता था कि मुझे कहाँपर अपना पैर रखनेको मिलेगा, ज्वालामुखीके नीचे पहुँच जानेपर मेरी क्या दशा होगी, मुझे वहाँ पर क्या मिलेगा? मैं यह सब कुछ भी नहीं जानता था। वहाँ मुझे ठोस चट्टान मिलेगी या उबलता हुआ लावा या चारों ओर प्रज्वलित अग्निकी लपटें, सो मैं कुछ भी नहीं कह सकता था।

"ज्यों ज्यों मैं नीचेकी ओर उतरता जाता था मुझे प्रतिक्षण यही मालूम होता था कि अब रस्सी टूटी और अब मैं सदाके लिए इस विकराल पर्वतके पेटमें अदृश्य हुआ। परन्तु मैं अपने चारों ओरकी चीज़ोंको अच्छी तरहसे देखता जाता था। कभी मेरे आसपासकी पहाड़ी दीवार बिलकुल काली दिखाई देती थी और कभी कभी लाल और पीली। कभी कभी इस दीवारमें सैकड़ों छोटे-बड़े छिद्र दिखाई देते थे जिनसे गंधककी लपटें निकल रही थीं। मुझे अपने नीचे कई स्थान फटे दिखाई दिये। ये सब धुएँसे आच्छादित थे। जब मैंने अपनी आखोंको ऊपरकी ओर किया तब मुझे गहराईका कुछ ख्याल आया। उस समय मैंने अपने आपसे प्रश्न किया

कि क्या यह रस्सा समस्त बोझ और दबाव सहन कर सकेगा? क्या वे लोग मुझे ऊपर खींच लेनेमें समर्थ होंगे?

"एकाएक मैंने अनुभव किया कि मैं बिलकुल नीचे आ गया हूँ। मैं पहाड़की चोटीसे ८०० फीट नीचे था। चट्टान बहुत ज़्यादा गर्म थी, पर काफ़ी सख्त भी थी। मैं खड़ा हो सकता था। मैंने चट्टानका तापक्रम नापा। मुझे मालूम हुआ कि कहीं कहीं उसकी गर्मी २१२ डिगरी फारेनहाइट*तक पहुँच जाती है। मेरे आसपासकी वायुकी हरारत भी १५० डिगरी थी। हवामें विषैला गंधकका धुआँ भरा हुआ था पर अपनी आक्सीजन गैसकी सहायतासे मैं भली भाँति साँस लेनेमें समर्थ था। आखिर मैंने अपने आसपासकी चट्टानों और अन्य चीजोंका निरीक्षण आरम्भ किया।

"मैंने अपने आपको रस्सेसे अलग कर लिया और चारों ओर घूम घूमकर निरीक्षण करने लगा। यहाँपर मुझे और भी गहरे गड्ढे दिखाई पड़े। गड्ढे क्या थे अच्छे खासे कुँए थे जिनके व्यास १० से ३० फीट तक थे। थोड़ी थोड़ी देर बाद इन गड्ढोंसे बड़े वेगके साथ लावा आदि निकलता था। इन गड्ढोंका ढाल ऐसा था जिससे लावा निकलकर सदैव एक ही ओर जमा होता जाता था। इनके अग्नि उगलनेके समयका ठीक ठीक हिसाब लगाकर मैंने क्रमसे इनके मुखोंका निरीक्षण किया और कुछके अन्दर तो इस तरह झाँककर भी देखा जैसे कुँएमें झाँककर देखा करते हैं!

"मैंने वहाँ क्या देखा? घना धुआँ और रंग-बिरंगी गैसें और इन सबके नीचे खौलते हुए लावाका समुद्र। ऐसा मालूम होता था

---

* पानीके खौलनेका ताप-क्रम।

मानो नीचे तरल अग्निका विक्षुब्ध सागर गर्जना कर रहा हो। जिस समय मैं एक कुँएका निरीक्षण कर रहा था, उसमें एक ज़बरदस्त तूफ़ान-सा आया और ऐसा मालूम हुआ कि कुछ ही क्षणोंमें वह स्थान मेरे सहित उड़कर न मालूम कहाँ जाकर गिरेगा। अब मुझे प्राण-रक्षाके लिए अपने स्थानसे भागना आवश्यक हो गया। मुझे वहाँसे हटे हुए मुश्किलसे एक सेकेंड ही बीता होगा कि बड़े ज़ोरका धड़ाका हुआ और उस विशालकाय गर्तसे उबलते हुए लावाका फव्वारा-सा निकलने लगा। उस फव्वारेने वायुमें लावाकी सेकड़ों फीट ऊँची धाराएँ उत्पन्न कर दीं। बहुत ऊँचे तक जाकर वह फिर उसी गड्ढेमें गिर पड़ता था। बहुत-सा हिस्सा ज्वालामुखीके अन्दर चारों ओर बिखर जाता था और कुछ भाग ८०० फीट ऊँचा उठकर पर्वतकी चोटीको छूता हुआ तीव्र गगनभेदी शब्द उत्पन्न करता हुआ समुद्रमें गिर पड़ता था।

"मुझे उन अग्नि-शाखाओंके बीचमें पूरे तीन घंटे लग गये। विशालकाय कूपोंसे लावा उगलनेके समयका हिसाब लगाकर मैं अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए इधर उधर घूमता फिरता था और बराबर गैसों, ठोस पदार्थों और वहाँपर पाये जानेवाले खनिज पदार्थोंके नमूने इकट्ठा करता जाता था। मैं अपने कैमरेका प्रयोग भी बराबर करता जाता था तथा कभी न भूलनेवाले दृश्योंका अध्ययन तथा उनके चित्र आदि लेता जाता था।

जब मुझे इस तरह कार्य करते हुए काफी देर हो गई और मैं बहुत थकावट अनुभव करने लगा तब मैंने ऊपर अपने सहायकोंको निश्चित संकेत किया। उन्होंने मुझे खींच लिया। ऊपर खींचे

जानेमें मुझे जो कष्ट और पीड़ा हुई उसका वर्णन करनेके लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द भी नहीं हैं। मेरी दृढ़ता काफूर हो चुकी थी। मजबूरन मुझे गंधकसे परिपूर्ण धुएँमें साँस लेना पड़ रहा था। जैसे जैसे मैं ताज़ी ताज़ी हवामें ऊपरकी ओर आता गया मेरे फेंफड़ोंने काम करना बंद कर दिया। ऊपर पहुँचनेसे पहले मैं बिलकुल बेहोश हो गया और बिलकुल निर्जीव-सा पड़ रहा। जब मैं अच्छा हुआ तब मुझे पूर्ण शान्ति अनुभव हुई। इतना अधिक परिश्रम करनेके बाद और साक्षात् मृत्युके मुखसे सही सलामत ज़िन्दा बच आने पर मेरे लिए खूब प्रसन्न होना बिलकुल स्वाभाविक था। मेरी प्रसन्नता इस बातसे और भी अधिक बढ़ गई थी कि मैंने एक ऐसे साहस और महत्त्वपूर्ण कार्यमें सफलता प्राप्त की थी जिसे उस समय तक सब लोग नितान्त असम्भव समझे हुए थे।

* * *

"कुछ समयके बाद मैंने अपने मित्र पाल मास्टरके साथ इसी पहाड़के ढालपर चढ़नेका प्रयत्न किया। इस ढालपर चढ़नेका कोई भी व्यक्ति साहस नहीं कर सकता था। इस ढालपर बराबर चट्टानें और ज्वालामुखीसे निकलनेवाले बड़े बड़े दहकते अंगारे समुद्रकी ओर गिरा करते हैं। मनुष्य तो कभी इस ओर आनेका साहस करते ही नहीं। जो जहाज़ आदि इस टापूकी ओर आते हैं वे भी इससे काफी दूरीपर रहते हैं। फिर भी मास्टर और मैंने इस भयंकर ढालपर चढ़ाई करनेका निश्चय किया। हम लोगोंने सिनेमाके लिए चित्र लेनेके कैमरे आदि भी ले लिये थे। चढ़ाईके दौरानमें अपने आपको नीचेकी ओर गिरनेवाली विशालकाय चट्टानोंसे बचानेके लिए

फौलादके शिरत्राणोंसे ढक लिया था। हमें वे लावाकी चट्टानोंसे तो न बचा सकते थे पर छोटे छोटे पत्थरोंकी बौछारसे अवश्य बचा सकते थे।

"हम लोगोंने चढ़ाई शुरू कर दी। कई घंटेके परिश्रमके बाद हम लोग एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहाँसे हम ज्वालामुखीके अग्नि उगलनेके समयके चित्र तथा लावा-पत्थरोंकी बौछारके दृश्योंके चित्र ले सकते थे। जब हमारी फ़िल्में समाप्त हो गईं तब हमने नीचे उतरनेकी तैयारी की। लावाकी बहुत बड़ी चट्टानके सहारे थोड़ी देरके लिए हम लोगोंने विश्राम किया। इस चट्टानका निचला भाग ज्वालामुखीकी राखमें दबा हुआ था। वहाँसे मास्टरने एक काली चट्टान देखी। यह चट्टान लगभग ५० फीटकी दूरीपर थी। हम लोगोंने उस चट्टान तक पहुँच कर उसका निरीक्षण करना तय किया, परन्तु वहाँ तक पहुँचना बहुत मुश्किल था। अपने ठहरनेके स्थानको छोड़कर वह अपने पेटके बल रेंगता हुआ उस ओर बढ़ा। मैं बराबर उसकी हरकतोंपर ध्यान लगाये हुए था। बड़े गौरसे उसकी धीमी गतिका निरीक्षण करता था और उसके साहसकी तारीफ़ करता जाता था। इतनेहीमें मैंने समुद्र-तटकी ओरसे ज़बरदस्त कोलाहलकी आवाज़ सुनी। मैंने आगे बढ़कर नीचेकी ओर झाँका। पहाड़के नीचे हमारे मित्र ज्वालामुखीके मुखकी ओर इशारा करके शोर मचाकर हमारा ध्यान भी उसकी ओर आकर्षित कर रहे थे। मैंने ठीक ही समय उसकी ओर देखा। देखनेपर पता लगा कि एक बहुत बड़ी चट्टान ज्वालामुखीके मुखके पाससे अलग होकर हवामें उड़ती है और कुछ क्षणके बाद फिर वहीं गिरकर राखके ढेरमें ज़बरदस्त भूचाल-सा

उत्पन्न करती हुई फिर हवामें उड़ जाती है। राख और लावाके ढेर बड़े वेगसे इधर उधर उड़ रहे हैं। मैं बहुत ही भयभीत हो गया और कुछ ही क्षणमें देखा कि वह विशालकाय चट्टान हमारी ही ओर आ रही है। वह बार बार गिरती थी और बार बार बड़े वेगसे नीचेकी ओर बढ़ती चली आ रही थी। कुछ ही क्षणोंमें देखा कि वह हमारे बिलकुल ही निकट आ गई और ४० फीटकी दूरीपर आकर उसने वज्रके समान घनघोर शब्द किया। उस शब्दके साथ हवाके एक ज़बरदस्त झोंकेने आकर हमें नीचेकी ओर ढकेल दिया।

"हम लोग अभी इस धक्केसे स्वस्थ भी नहीं होने पाये थे कि एक नई विपत्तिका सामना करना पड़ा। बिना एक दूसरेसे परामर्श किये हुए हम दोनों एक ही विचारपर पहुँच गये। एक क्षणमें हम लोगोंने अपने शिरस्त्राण उतार कर फेंक दिये और और भी द्रुत गतिसे ढालके नीचे लुढ़क गये।

"इस तरह हम लोग देर तक लुढ़कते पुढ़कते किसी तरह पर्वतके नीचे जा पहुँचे। यहाँ हमारे मित्रोंने हमारी मरहम-पट्टी की और हमें ज़िन्दा बच जानेपर बधाई दी।